हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

29 सितम्बर 1995

खण्ड 2, अंक 5

अधिकृत विवरण

विषय सूची

शुक्रवार, 29 सितम्बर, 1995

पृष्ठ संख्या

ताराकिंत प्रश्न एवं उत्तर	(5) 1
नियम 45 के अधीन सदन की मर्ज पर रखे गए	
तारांकित प्रश्न का लिखित उत्तर।	(5) 20

मन्त्री परिषद के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा	(5) 21
श्री धीर पाल सिंह, विधायक की भूख हड़ताल संबंधी मामला उठाना।	(5) 22
मन्त्री परिषद् के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर चची (पुनरारम्भ)	(5) 31
वैयक्तिक स्पष्टीकरण–	
(1) औद्योगिक प्रशिक्षण राज्य मन्त्री द्वारा	(5) 67
(2) प्रो० सम्पत सिंह द्वारा	(5) 69
बैठक का समय बढाना	(5) 70
वैयक्तिक स्पष्टीकरण (पुनरारम्भ)	
(3) आवकारी तथा कराधान राज्य मन्त्री द्वारा	5(71)
वाक आउट	(5) 75
नेमिंग आफ मैम्बर	(5)74
मन्त्री परिषद् के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा (पुनरारम्भ)	(5) 80
वैयक्तिक स्पष्टीकरण (पुनरारम्भ)	(5) 87

(4) पर्यटन राज्य मन्त्री द्वारा	(5) 88
मन्त्री परिषद् के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा (पुनरारम्भ)	
बैठक का समय बढ़ाना	(5) 104
मन्त्री परिषद के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा (पुनरारम्भ)	(5) 104
वाक आउट	(5) 107
मन्त्री परिषद् के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर मतदान	(5) 108
नियम 15 के अधीन प्रस्ताव	(5) 108
नियम 16 के अधीन प्रस्ताव	(5) 109
ध्यानाकर्षण प्रस्ताव–	
(1) जिला फरीदाबाद में बिजली के ट्रांसफार्मर्ज कलने संबधी	(5) 109
वक्तव्य–	
बिजली मंत्री द्वारा (सदन की मेज पर रखी गई प्रति)।	
उपरोक्त ध्यानाकर्षण प्रस्ताव संबंधी।	(5) 110
ध्यानाकर्षण प्रस्ताव–	

(2) नेपाल तथा उत्तर प्रदेश को जा रहे 55 यात्रियों की बस एक्सीडैटं में हुई मृत्यु सबंधी	(5) 111
वक्तव्य––	
उपरोक्त ध्यानाकर्षण प्रस्ताव संबधी	(5) 111
ध्यानाकर्षण सूचनाए	(5)114
बिल्ज	
(1) दि हरियाणा एप्रोप्रिएशन (न० 3) विल, 1995	(5) 117
(2) दि पंजाब कोर्टस (हरियाणा अमैंडमैट) बिल, 1995	(5) 120
(3) दि हरियाणा जनरल सेल्ज टैक्स (सैकिण्ड अमैंडमेट) बिल, 1995	(5) 122
(4) गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी हिसार, बिल, 1995	(5) 124
वाक आउट	(5) 143
गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी हिसार मिल, 1995 (पुनरारम्भ)	(5) 143

हरियाणा विधान सभा

शुक्रवार, 29 सितम्बर, 1995

विधान सभा की बैठक, हरियाण विधान सभा हाल, विधान भवन, सैक्टर– 1, चण्डीगढ़ में प्रातः 9.30 बजे हुई। अध्यक्ष (चौधरी ईश्वर सिंह) ने अध्यक्षता की।

तारांकित प्रश्न एवं उत्तर

MR. Speaker : Hon'ble Members, the question hour.

RESULTS OF GOVERNMENT SCHOOLS

***1204. Prof. Chhattar Singh Chauhan :** Will the Minister for Edueation be pleased to state—

(a) the pass percentage of result of Middle Standard, Matric and 10+2 system examination of Government Schools, Govt. aided Private Schools and unaided Private Schools during the year 1994-95 in the State;

(b) whether it is a fact that the result of the Govt. aided Private Schools and unaided Private Schools is higher than that of Govt. Schools in the State;

(c) if so, the reasons therefor and the steps taken or proposed

to be taken to streamline teaching system in order **to**
improve the results of the Govt. Schools in the State ?

Education Minister (Shri Phool Chand Mullana) :

(a), (b) and (c) The information is laid on the table of the House.

Information

(a) Percentage of the result is as follows.—

Examination Level	Result (1994-95)		
	Govt. Schools	Govt.aided Pvt. Schools	Unaided Private Schools
Middle	29.03%	61.55%	58.63%
Matric	23.88%	58.66%	50.09%
10 +2	14.54%	30.47%	26.83%

(b) Yes.

(c) Reasons for lower results in case of Government Schools are shortage of staff and curbing the menace of copying. The following steps have been taken to improve the results of Government Schools:—

(i) Inspection of schools have been made more intensive and extensive and a special campaign has been launched for inspection maximum number of schools, especially those which have shown less than 50% results.

(ii) System of monthly tests and quarterly examination has been introduced and progress of the students is communicated to the parents.

(iii) Extensive inservice training programmes are being organised for the professional growth of the teacher.

(iv) Class-wise syllabus has been distributed month-wise.

(v) The pattern of internal examination of schools has been made uniform in order to prepare the child for the Board Examination.

(vi) In order to introduce continuous and comprehensive evaluation, marks of quarterly and half yearly examination will be added in the annual examination results.

प्रो० छतर सिंह चौहानः अध्यक्ष महोदय, माननीय शिक्षा मन्त्री जी ने वर्ष 1994– 95 के मिडल, मैट्रिक तथा दस जमा दो के रिजल्ट्स का जो विवरण दिया है, वह बहुत ही हृदय विदारक है। अध्यक्ष महोदय, सरकारी मिडल स्कूलों का रिजल्ट इन्होंने बताया है 29.03 प्रतिशत, गवर्नमैंट ऐसिड प्राईवेट स्कूलों का 61.65 प्रतिशत और अन–ऐडिड प्राईवेट स्कूलों का 58.63 प्रतिशत। इस प्रकार से मैट्रिक का रिजल्ट गवर्नमैंट स्कूलों का 23.88 प्रतिशत, गवर्नमैंट ऐडिड प्राईवेट स्कूलों का 58.66 प्रतिशत तथा अन ऐडिड प्राईवेट स्कूलों का 50.09 प्रतिशत बताया है। अध्यक्ष महोदय, 10 जमा 2 के रिजल्टस मे तो और भी बेड़ा गर्क हो गया है। इसका रिजल्ट इन्होंने गवर्नमैंट स्कूलों का 14.54 प्रतिशत, गवर्नमैंट ऐडिड

प्राईवेट स्कूलों का 30.47 प्रतिशत तथा अन ऐडिड प्राईवेट स्कूलों का 26.83 प्रतिशत बताया है। अध्यक्ष महोदय, गवर्नमैंट स्कूलों का मिडल, मैट्रिक तथा 10 जमा 2 का रिजल्ट चिन्ता का विषय है। प्राईवेट स्कूलों के पास स्टाफ भी कम होता है, बिल्डिंग भी कम होती है और उनके पास लैबोरेटरीज की भी व्यवस्था नहीं होती लेकिन उनके रिजल्टस फिर भी अच्छे हैं। क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि गवर्नमैंट स्कूलों के रिजल्टस इतने पूअर क्यों आए हैं। रिजल्ट पूअर आने का एक रीजन तो यह है कि पोस्टें खाली पडी हैं। (विध्न) अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मन्त्री जी से यह जानना चाहूंगा कि स्कूलों/कालेजों में जो हैडमास्टरज की ओप्रेंसिपल्ज की और दूसरी पोस्टें खाली पड़ी हैं ये उनको कब तक भरवा देंगे। अध्यक्ष महोदय, मन्त्री महोदय ने दूसरी बात यह कही है कि गवर्नमैंट स्कूलों में अध्यापकों की कमी है। स्पीकर सर, आपको मालूम ही है क्योंकि आप शिक्षा क्षेत्र से जुड़े रहे है कि प्राईवेट स्कूलों और गवर्नमैंट स्कूलों में स्टूडैटस–टीचर्ज की रेशो में बड़ा अन्तर है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से मन्त्री जी से यह जानना चाहूंगा कि जिन स्कूलों में अध्यापकों ने पूअर रिजल्टस दिखाए हैं, क्या उनके खिलाफ पैनेल्टी मैयजं एडौप्ट करेगे और जिन अध्यपाकों ने अच्छे रिजल्टस दिखाए हैं, उनको कोई अवार्ड देने का प्रावधान करेगे? अध्यक्ष महोदय, इनके इंस्पैक्टिग स्टाफ के बारे में मैंने पिछले सव में भी क्वैश्चन किया था। इनका इस्पैक्टिंग स्टाफ बिल्कृउल आईडल और इनइफैक्टिव है। क्या मंत्री जी फील्ड और डायरैक्टोरेट के स्टाफ को इफैक्टिव

बनाने के लिए कोई पग उठाएंगे? अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी ने यह भी बताया है किं मम्थली और क्वार्टरली टैस्ट की भी व्यवस्था है, यह बिल्कुल निरर्थक बात है। क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि क्या कभी इन्होने किसी प्राईमरी, मिडल, हाई स्कूल या किसी कालेज में जाने का कष्ट किया है। अध्यक्ष महोदय, मैंने मन्त्री महोदय को बार–बार दावत दी है कि वे गवर्नमैंट स्कूलों का निरीक्षण करे। अध्यक्ष महोदय, इनके स्टाफ में 3 डी ० पी ० आई० और फील्ड में अनेकों डी ० ई० ओज० वगैरह हैं। क्या मती जी आईडल स्टाफ को चुस्त बनाएगे और मै ली जी ने और डी ० पी ० आईज० ने कितने कालेजों, कितने हाई स्कूलों तथा कितने प्राईमरी स्कूलों का निरक्षण किया है?

श्री फूल चन्द मुलानाः अध्यक्ष महोदय, मैंने जो लिखित उत्तर मे इन्फर्मेशन दी है इन्होने उन सबकी सप्लीमैंटरी पूछ ली है। जहां तक इन्होने रिजल्ट की बात की है तो उसका मुख्य कारण यह है कि हमने नक्ल पर रोक लगाई है। दूसरा सवाल जो इन्होंने पूछा है कि प्राईवेट और सरकारी स्कूलों में जो रिजल्ट में अन्तर है, वह क्यों है। तो मैं इनको यह बताना चाहूंगा कि हम सभी बच्चों को एडमिशन दे देते हैं चाहे वह अमीर का बेटा हो या गरीब का हो। हमारे? स्कूल्ज ऐसे एरियाज में भी हैं जहां लोग पहुंच ही नहीं पाते हैं। लेकिन प्राईवेट स्कूलों वाले बच्चों को छांट–छांट कर लेते हैं और उनको ही दाखिला देते हैं जो एन्ट्रैस टैस्ट पास करता है। वहां पर अमीरों के बच्चे जाते हैं जो घरों

पर भी टयूशज पडते हैं लोकिन हमारे जो बच्चे होते है वह गरीब घर के होते हैं। न तो वे टयूशन पढ़ सकते हैं और न ही उनके मां बाप उनको पढ़ा सकते हैं क्योंकि वे अनपढ़ होते है। इसके बाद इन्होंने कहा कि हम क्या कदम उठाने जा रहे हैं। इनको भी पता है कि रिजल्टस को इम्प्रूव करने के लिए हमने इन्सपैक्शन शुरू किया है और हमने हैड आफिस में कहा है कि महीने में कम से कम 100 स्कूलों की इन्सपैक्शन होनी चाहिए। आज फल्ड की वजह से हम वहां पर नहीं जा पा रहे हैं लेकिन जैसे ही हालात सुधरेंगे, हम इसको दोबारा से शुरू कर देंगे। दूसरे अध्यक्ष महोदय, जो अध्यापक अच्छे रिजल्टस देते हैं हम उनको स्टेट अवार्ड देते हैं। इसमें कैश भी होता है और शौले भी होती है। जिसका रिजल्ट गलत होता है उसको सजा भी दी जाती है। फिर हम में से ही सिफारिशें आती हैं कि इसको दोबारा से लगा लो, बहाल कर दो। अध्यक्ष महोदय, आज बच्चों और अध्यापकों में चेतना जगाने की जरूरत है, तभी हम लोग तरक्की कर सकते हैं।

प्रो० राम बिलास शर्माः अध्यक्ष महोदय, मती जी ने लिखित उत्तर में बताया है कि दस जमा दो का रिजल्ट 14 प्रतिशत, दसवी का 2 प्रतिशत और आठवीं का 29 प्रतिशत है। यानि सौ में से 14 विद्यार्थी पास हुए हैं। यह बहुत ही चिन्ता–जनक फिगर है। तो मैं मती जी से जानना चाहूंगा कि इन्होने रिजल्ट इम्प्रूव करने के लिए जो कदम उठाने को कहा है कि हम इन्सपैक्शन करेंगे, सलेबस को क्लास वाईज प्रैसक्राईब करगे और

मन्थली टैस्ट लेंगे। क्या इन तीन बातों से मंदी जी सन्तुष्ट हैं कि इतना करने से ही रिजल्ट सुधर जाएगा?

श्री फूल चन्द मुलानाः स्पीकर साहब, माननीय सदस्य, शर्मा जी ने पूछा कि हमने क्या क्या कदम उठाए है। यह बात सही है कि रिजल्ट कम रहा है, एलार्म– कुल का है, इसमें कोई दो राय नहीं है। लेकिन मैंने रिजल्ट में कमी का कारण स्टाफ की कमी को माना है। स्टाफ पूरा करने के लिए सरकार हर कदम उठा रही है। पब्लिक सर्विस कमीशन से भी रिक्रूटमैंट हुई है, एस० एस० एस० बोर्ड से भी रिक्टूमैंट हुई है और बी ० डी ० ई० ओज० को भी यह अधिकार दिए गए हैं कि वह ऐडहाक पर भी टीचर्ज रख लें। इसके अलावा, जे ० बी ० टी ० की भी रिक्रूमैंट हुई है। इसी तरह से प्राईमरी साईड में, मिडिल साईड में, हाई स्कूलो में और दस जमा दो में भी सभी स्टाफ को पूरा कर दिया जाएगा। स्कूलों का इंस्पैक्शन कराना एक कारगर कदम हैं। इस्पैक्शन अधिकारी जब इन्स्पैक्शन करने जाएगा तो अध्यापक को भी पता रहेगा कि इस्पैक्शन होना है। इसलिए वह पढाएगा। और इन्सपैक्टर को भी यह पता चलेगा कि स्कूल में पढ़ाई होती है या नही। सर, हमने जो इंस्पैक्शन का तरीका बनाया है वह बहुत ही कारगर है। इसी तरह से हमने इंटरनल टैस्ट लेने का भी प्रावधान किया है इसका भी इंस्पैक्शन से पता लगाया जाएगा कि ये टैस्ट होते हैं या नहीं। जैसा कि कल भी। मैंने बताया था कि हमने पांचवी कक्षा के स्तर पर भी पहली बार स्टेट लेवल पर इस्तहान

लिया है ताकि पांचवी कक्षा के स्तर के बच्चों में भी चेतना आए। पांचवी कक्षा में हमने एक ही पेपर का टैस्ट रखा है। सर, ऐसा करने से भी शिक्षा में सुधार होगा। इस अलावा मंथली टैस्ट भी होते हैं तथा और भी जो कदम उठाए जा सकते हैं यह हम अवश्य उठाएंगे। यदि माननीय सदस्य अपने कुछ सुझाव इस बारे में देना पा हें तो उनको भी अवश्य ध्यान में रखा जाएगा।

प्रो० छत्तर सिंह चौहानः स्पीकर साहब, मती महोदय ने बताया है कि नकल रोकने के कारण भी रिजल्ट कम आया है। क्या मती जी यह मानते हैं कि सरकारी स्कूलों में नक्ल इन्होंने रोक दी है और प्राईवेट स्कूलों में इन्होंने नकल करने की छूट दे दी है? कृपया यह देंखें और बताएं कि प्राईवेट स्कूलों मे क्या नक्ल खुलकर हो रही है और सरकारी स्कूलों मे नही हो रही. है? इसके अलावा दूसरी बात यह है कि इन्होंने जो नकल रोकने का मानसिक प्रयास किया है उसमें इनको सफलता नहीं मिली है। मैं इनका ध्यान दिलाना चाहता हूं कि परीक्षा के दौरान स्वयं ही शिक्षा विभाग ने यह मान लिया था कि हम नकल रोकने में असफल रहे हैं। इसलिए ही शिक्षा विभाग ने बी ० डी ० ई० ओज० से लेकर डी ० सी ० तक और एस० पी ० से लेकर सिपाही तक सबको परीक्षा केन्द्रों पर बुलाया था और उनका सहयोग लिया था। शिक्षा विभाग ने पाया था कि हम नक्ल रोकने में असफल रहे हैं इसलिए परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण डी ० सी ० और एस० डी ० एम० को दे दिया ताकि वह नकल रोकने में

सहयोग कर सके। इस अलावा तीसरी बात यह है कि शिक्षा मंत्री जी बार बार यह कह रहे हैं कि हम स्कूलों का इंस्पैक्शन करा रहे हैं। मैं आपके माध्यम से इनसे कहना चाहता हूं कि शिक्षा के क्षेत्र में जो इस्पैक्शन है वह बहुत ही जरूरी है लेकिन स्वयं शिक्षा मंत्री जी और इनका अपना इंस्पैक्शन स्टाफ सिवाए ऑफिस में बैठने के और कुछ नही करता। ये कही पर भी स्कूल या कालेज में इंस्पैक्शन करने के लिए नही गए है। अगर कही पर इन्होने इस्पैक्शन किया है तो ये हमें बता दें कि इन्होंने कितने स्कूली और कालेजो को देखा है?

श्री फूल चन्द मुलानाः स्पीकर सर, माननीय सदस्य ने चार सम्लीमैंट्ररी पूछ ली हैं। इनकी पहली सप्लीमैंटरी का उत्तर यह है कि हमने नकल सरकारी और प्राईवेट दोनों अदायरों मैं रोकी है। हमारा. सरकार सरकारी और प्राईवेट स्कूलों स्कूलों में कोई अन्तर नही समझती है। इसी तरह से इनकी दूसरी सप्लीमैंट्री यह है कि नकल रोकने का केवल मानसिक प्रयास किया गया है और वास्तविक प्रयास नहीं किया गया है। मैं इनको बताना चाहूंगा कि जिस नकल की चर्चा आप पहले सदन में किया करते थे अब वह चर्चा आप नही कर सकते है। इसका श्रेय माननीय मुख्यमन्त्री जी को और हरियाणा सरकार को जाता है कि जो परीक्षा केन्द्र हैं अब उनमें चिड़िया भी पर नही मार सकती। अगर आप नकल करवा कर दिखा दोगे तो हम आपको ईनाम देंगे।

प्रो० छतर सिंह चौहानः आपने तो नकल करवाने वाले अध्यापको को ईनाम दिया है। जो नकल करवाते हुए पकड़े गए थे, उनको प्राईज दिया है।

श्री फूल चन्द मुलानाः अध्यक्ष महोदय, इन्होंने पत्रिकाएं पढ़ी हैं, उनमें हमारी सरकार और मुख्यमन्त्री जी की सराहना की गई है। उनमें लिखा है, कि हरियाणा ऐसा प्रान्त है जिसने कानून बनाए बिना नकल पर काबू पाया है, और प्रान्तों में कानून बनाने गए लेकिन फिर भी नकल नहीं रुक पाई। हमने सोचा कि अगर हम कानून बनाते हैं तो बच्चों पर क्रिमिनल केस बनेगा, कौग्नीजेबल औफैस बनेगा और अभी से यह होगा तो आगे जीवन में जाकर वे क्या करेंगे? बिना कानून बनाए हमने नकल को रोका है, इसके लिए मुख्य मन्त्री जी और सरकार सराहना की पाल है। तीसरी सप्लीमैंट्री में इन्होने कहा कि हम निरीक्षण में असफल रहे हैं। वैसे मैं खुद स्कूलो में गया हूं। हमारे अधिकारी हैं वे निरीक्षण करने के लिए जाते है। वे लिखकर भेजते हैं, उस पर कार्यवाही होती है। एस०डी ० एम० और डी ० सी० को भी अधिकार हैं। उनको इन राइटिंग भेजा है कि वे कभी भी किसी भी स्कूल का निरीक्षण कर सकते है।

प्रो० छत्तर सिंह चौहानः जब वे परीक्षा की ड्यूटी में निरीक्षण कर हैं तो आम निरीक्षण क्यों नहीं कर सकते?

श्री फूल चन्द मुलाना: अध्यक्ष महोदय, केवल परीक्षा के समय ही नहीं बल्कि इन रिटन यह बाकायदा सर्कुलर है कि एस० डी ० एम० और डी छ सी ० कभी भी निरीक्षण कर सकते हैं।

आबकारी तथा कराधान मन्त्री (श्री लछमन दास अरोड़ा): अध्यक्ष महोदय, क्वैश्चन का आश्वासन देने का क्या फायदा है, जब इनको सरकार पर ऐतबार ही नहीं है। (शोर एवं व्यवधान)

डा० राम प्रकाश: अध्यक्ष महोदय, मंत्री महोदय ने यह कहा है कि लोअर स्टैडर्ड का एक कारण स्टाफ का अभाव है। अध्यक्ष महोदय, दस जमा दो के स्कूलों में प्रिंसीपल्ज की पोस्टें खाली पड़ी. हैं इस बारे में यह इस सदन में पहले भी बता चुके हैं। मैं यह जानना चाहता हूं कि प्रमोशन के माध्यम से पोस्टें भरने में इनको अब तक क्या दिक्कत रही है? अगर दिक्कत नहीं है तो क्या ये आश्वासन देगे कि बाई प्रमोशन यह पद कब तक भर दिए जाएंगे? दूसरे इन्होने जो कारण बताएं हैं, उनमें जो एक मुख्य कारण है, वह है इन्फ्रास्ट्रक्चर का अभाव। जो सरकारी स्कूल के अध्यापक हैं, ऐसी मान्यता है कि वे किसी से कम क्वालीफाईड नहीं हैं। वे बैटर क्वालिफाईड हैं लेकिन अगर स्कूल में लाइब्रेरी नही है, लेबोरेटरी नहीं हैय ब्लैकबोर्ड नही है तो वे क्या करेगे।

श्री अध्यक्ष: आप लैक्चर दे रहे हैं। आप क्वैशचन के फार्म में पूछिए।

डा० राम प्रकाशः ऑडियो, वीडियो का अभाव है स्कूलों में चार दीवारी नही है, यदि नहीं है तो क्या मंत्री महोदय, आश्वासन देंगे कि यह जो इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमी है, इसको पूरी करने की कोशिश की जाएगी? चाहे आप यह पैसा किसी फंड से लेंय मार्किट कमेटी से लें या कही से भी लें। तीसरी बात अध्यक्ष महोदय, मैं इनको यह कहना चाहता हूं कि केवल अच्छा रिजल्ट दिखाने वाले अध्यापको को ईनाम देने से हो प्रोत्साहन नही मिलता, इसके लिये सब से बड़ा काम उनको प्रोत्साहन देने का यह होना चाहिये कि उनकी ईच्छानुसार उनकी पोसटिंग होनी चाहिये ताकि वे और अच्छा रिजल्ट दिखा सकें। क्या सरकार इस बारे में आश्वासन देगी कि केवल जो अध्यापक अपना रिजल्ट अच्छा दिखाते हैं, उनकी पोसटिंग उनकी अपनी मर्जी के अनुसार ही की जाएगी? इससे बच्चों का भी हित होगा तथा अध्यापक और मेहनत से बच्चों को शिक्षा दे सकेंगे?

श्री फूल चन्द मुलानाः डाक्टर साहब ने सब से पहले प्रिंसिपल्ज की परमोशन की बात कह दी। शिक्षा विभाग में परमोशन कोटा है, दूसरा डायरैक्ट कोटा भी अलग है। महिलाओं के लिए अलग से कोटा फिक्सड है और एस० सी० बी ० सी ० के लिये भी अलग से कोटा है। जहां तक परमोशन केसिज का ताल्लुक है, वह हमने ज्यादा से ज्यादा परमोट करके लगा दिये है और कुछ केसिज की स्क्रूटनी हो रही है। जहां तक डायरैक्ट कोटे से रिक्रूटमैंट का सवाल है, उस बारे में मैं यह बताना चाहता हूं

कि पब्लिक सर्विस कमिशन ने इंटरव्यूज ले ली है, लिस्ट भी फाईनल हो चुकी है लेकिन लोग इसके विरुद्ध कोर्ट से स्टे ले आये है। जब तक कोर्ट से स्टे वैकेट नही होती तब तक इस बारे में कुछ नहीं कर सकते। स्टे वैकेट होते ही सभी रिक्त पदों पर आदमी भेज दिये जाएंगे। इसके साथ साथ डाक्टर साहब ने यह भी कहा कि आडियो, वीडियो और स्कूलो की चारदीवारियों का अभाव है। स्कूलों की बहुत बुरी हालत है। जहां इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी का सवाल है, मैं इनक ओं बताना चाहता हूं कि पहले एक जमाना था कि पब्लिक एट लार्ज स्कूलों की बिल्डिगें बनाकर के देती थीं, स्कूलों के लिये मैटिरियल देती थीं ताकि हमारे बच्चे पढ़ें और उनको किसी प्रकार की कोई दिक्कत न हो लेकिन आज तो माहौल ही बदल गया पै क्योंकि सरकार के पास बड़े ही सीमित साधन उपलब्ध हैं। आज अगर स्कूल मे ब्लैक बोर्ड टेबल वगैरह का अभाव होता है या कोई चीज टूट जाती है तो लोग यह कहते हैं कि यह तो सरकार का कर्तव्य है, वही प्रोवाइड करेगी। इस कारण से बच्चों की पढ़ाई का हर्जा होता है। फिर भी सरकार हर सम्भव कोशिश करती है कि हर स्कूल में किसी भी चीज की कमी न हो, समय पर हर चीज उपलब्ध हो और बच्चों की पढ़ाई नियमित रूप से चलती रहे। यह हमारी भी इच्छा है कि हमारे हरियाणा प्रदेश के स्कूल भी विदेशी स्कूलों की तरह स्टैण्डर्ड के हों। फिर भी इन सभी बातों के अभाव के कारण हम किसी भी स्कूल में किसी चीज का, टीचर्ज का प्रिंसीपल्ज का अभाव नही आने देंगे। समय पर सभी जरुरत की वस्तुएं उनको उपलब्ध

करवाई जाएंगी। जिन स्कूल, कालेजों में अध्यापकों, हैडमास्टर्ज व प्रिसिपल्ज की जगहें खाली होंगी, उनको जल्द ही भरने का सरकार प्रयास कर रही है, और करेगी भी। आखिर में – डाक्टर साहब ने यह कह दिया कि आध्यापकों की जो पोसटिग है, वह उनकी इच्छानुसार ही की जाए। अध्यक्ष महोदय, आप व यह सारा हाउस ही जानता है कि हमारे पोलिटीकल लीडर्ज, वर्कज और दूसरे जो लोग इस काम के लिये आते हैं उस कारण से हमारा बहुत सारा टाईम इन्हीं कामों में वेस्ट हो जाता है कि इसको इधर करो उसको उधर कर दो। अध्यक्ष महोदय, हमारी तो सदा यह चेष्टा रहती है, इच्छा होती है कि अध्यापक की पोसटिग उसी की इच्छानुसार उसी जगह पर हो, जहां वह चाहता है ताकि बच्चों की पढ़ाई का कोई नुक्सान न हो। हमने एक नीति बनाई है, एक प्रोफार्मा तैयार किया है और उसी प्रोफार्मा के अनुसार हम सभी से ओपशन लेंगे और उसी के अनुसार ही अध्यापकों की ट्रांसफर करेंगे ताकि वह बच्चों को अच्छी पढ़ाई दे सकें।

श्री अजमत खांः अध्यक्ष महोदय, जैसा कि सब को विदित है कि स्कूलों के रिजल्ट बहुत कम आये हैं और इस बारे में सरकार की ओर से जो कोशिश की जा रही है, उससे मैं पूरी. तरह से सहमत हूं। कोशिशें तो ठीक है लेकिन स्टाफ की जो कमी है, उसको भी जल्दी पूरा क्र दिया जाए। इस बारे में, मैं यह कहना चाहता हूं कि मेरे हल्के के लखना गांव में एक मिडिल स्कूल है, जिसमें एक अध्यापक है और रनिया खुर्द में तीन

अध्यापक हैं। व्या इन हालात में बच्चे पढ़ सकते हैं जबकि अकेले लखना के स्कूल में 350 बच्चे है। एक अध्यापक केवल डतने बच्चों को भेड बकरियों की तरह घेर कर ही रख सकता है न कि पढ़ा सकता है। इसकी वजह से बच्चो की नस्ल पूरी बरबाद हो रही है। इसलिये मैं सरकार से यह कहूंगा कि सरकार इस ओर ध्यान दे। जो सरकार की ट्रांसफर पालिसी. है, वह डिस्ट्रिक्ट लैवल के अध्यापकों की जिला के डी ० ई० ओज० और डी ० पी ० ई० ओज ० के द्वारा की जाए क्योंकि उन्ही को ही असलियत का पता होता है कि टीचर्ज की कमी कहां कहां है। डी ० पी ० ई० ओज० जे ० बी ० टी० के जिला कैडर के अध्यापक और डी ० ई० ओज० विदइन डिस्ट्रिक्ट मास्टर्ज का तबादला करें और इंटर डिस्ट्रिक्ट ट्रांसफर्ज के लिये केसिज डायरक्टोरेट लैवल पर ही किये जाएं।

श्री फूल चन्द मुलानाः स्पीकर साहब, वैसे भी जो ट्रांसफर्ज की जाती है उसके लिए हमारे कई तरह के टीचर्ज हैं। इनको डी ० पी ० ई० ओ०, डी ० ई० ओ० और डायरैक्टर अलग अलग डील करते है। जैसे प्रिंसिपल हैं इनको सीधे सरकार डील करती है। तो सारी ट्रांसफर्ज डी ० पी ० ह० ० ओ० लैवल पर नहीं हो सकतीं। जिस लैवल की ट्रांसफर होती है वह उसी लैवल पर की जाती है। अब हमने एक नीति बना दी है और प्रोफार्मा बना दिया है उसके मुताबिक बदलिया होंगी और इस समस्या का समाधान हो जाएगा।

श्री अजमत खांः स्पीकर साहब, जब एक डी ० ई० ओ० को सारा पता है कि टीचर्ज की स्कूलों में कमी है और उसको यह भी पता है कि उनको कहां से उठाना है और कहां भेजना है तो वह काम तो कम से कम वहां पर होना चाहिए ताकि स्कूलों में टीचर्ज उपलब्ध हो सकें। कहीं ऐसा न हो कि एक स्कूल में एक टीचर हो और साड़े तीन सौ बच्चे हों। इस तरीके से टी चर्ज से अच्छे रिजल्ट की उम्मीद नही की जा सकती है। ऐसा होने से बच्चों की नसल खराब हो जाती है। मैं चाहता हूं कि आप कोई मुकम्मल पालिसी बनाएं कि विद टन डिस्ट्रिक्ट ट्रांसफर वहीं से हो जाए।

श्री फूल चन्द मुलानाः स्पीकर साहब, माननीय सदस्य की चिन्ता सही है लेकिन इसके दोनों पहलू हैं। अगर पूरा अधिकार नीचे के लैवल पर ही हो जाएगा तो उसका दुरुपयोग भी होगा। फिर सदस्य आ कर शिकायत करते हैं इसलिए चौक्स एण्ड बैलेसिज की आवश्यकता है। एक समय ऐसा भी आता है जब ट्रांसफर्ज पर रोक लग जाती है तो उस दौरान यहां से की जाती हैं। अब हमने एक नीति बना दी है, जो भी अपनी बदली का इच्छुक होगा उससे प्रोफाम भरवाया जाएगा और उसके अनुसार बदली होगी।

श्री पीर चन्दः स्पीकर साहब, मैं मन्त्री जी से जानना चाहता हूं कि सारी स्टेट में और खास तौर पर रतिया हल्के में स्कूलों में मास्टरों की कमी है। हमारी प्राईमरी शिक्षा का लैवल

बहुत गिर गया है। मेरे ख्याल में 80 परसैन्ट बच्चे फेल होते हैं। मास्टर न होने की वजह से बच्चे अपने घरों को चले जाते हैं। मैं जानना चाहता हूं कि तमाम मास्टरों की पोस्टें कब तक भर दी जाएगी?

श्री फूल चन्द मुलानाः स्पीकर साहब, इन्होंने कहा कि काफी सारे बच्चे मास्टर न होने की वजह से घरों को चले जाते हैं। इसके कई कारण और भी हैं। मास्टरों की तो कमी है लेकिन उस कमी को हम पूरा करने जा रहे हैं। जैसे जैसे एस० एस० एस० बोर्ड और पब्लिक सर्विस कमिशन से नाम भेजे जाएंगे हम पोस्टें भर देंगे। इसी तरह से हमने डी ० ई० ओज० को भी इम्पालयमैंट एक्सचेंज से भरने का अधिकार दिया है, वे वहां से नाम मांग रहे है। सरकार की इच्छा है कि यी काम जल्दी पूरा किया जाए। जहां तक बच्चों का स्कूल छोड़ कर चले जाने का सवाल है, आपको पता है कि बहुत से गरीब बच्चे होते हैं। लेकिन ड्रौप आउट रेट कम करने के लिए प्रधान मन्ये। जी ने मिड डे मील की योजना शुरू की। उसके लागू होने के बाद हरियाणा के मुख्य मन्द्री जी ने भी उसको सब जगह लागू किया है। इससे बच्चों द्वारा स्कूल छोड़ने पर रोक लगेगी।

श्री कृष्ण लालः स्पीकर साहब, मैं मन्त्री जी से जानना चाहता हूं कि मिडिल, मैट्रिक और दस जमा दो के स्कूलों में कितने बच्चों की स्ट्रैथ पर अध्यापक को नियुक्त किया जाता है। मेरे हल्के में बाढ़ा में 650 बच्चों की स्ट्रैंथ है लेकिन वहां

अध्यापकों की संख्या कम है। मन्त्री जी ने भी इस बात को माना है कि रिजल्ट कम आने का कारण अध्यापकों की कमी है। दूसरी बात मैं यह जानना चाहता हूं कि हैड मास्टजं की खाली पोस्टें कब तक भर दी जाएंगी?

10.00 बजे

श्री अध्यक्षः यह सूचना इनके पास रैडीमेड नहीं है। अगर मिनिस्टर साहब इसका पार्टली जवाब देना चाहें तो दे दे कि टीचर्ज कब तक पूरे लगा दिए जाएंगे?

श्री फूल चन्द मुलानाः स्पीकर साहब, सारी स्टेट में 8000 प्राइमरी स्कूल हैं, कई सौ मिडल स्कूल हैं और कई सौ हाई स्कूल हैं। टीचर्ज की परमोशन होती रहती है और जगह खाली होती रहती है आगे रिक्रूटमैंट होती रहती है। हैड मास्टर्ज की और हैड टीचर्ज की काफी पोस्टें खाली है। उन सभी पोस्टों को भरने के लिए डिपार्टमैंटल केसिज बनवा रहे हैं और मुझे उम्मीद है कि यह काम हम जल्दी ही कर देंगे। कमिशन से या बोर्ड से जो डायरैक्ट आते हैं उनको वहां से लिस्ट आने के बाद ही लगा पाएंगे। हमारी चेष्टा यह है कि स्टाफ जल्दी से जल्दी पूरा हो ताकि बच्चो को शिक्षा अच्छी मिले।

श्री सतबीर सिंह कादयानः स्पीकर साहब, मिड डे मील की योजना सरकार ने लागू की है। मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि भेजन रसोइया बनाएगा या टीचर्ज बनाएगे क्योंकि जिस स्कूल में

एक ही टीचर है वह कैसे इस कम के।. कर पाएगा? हमारे यहां पाडा गांव के स्कूल में एक ही टीचर है क्या वह टीचर बच्चों को पढ़ाने के साथ साथ उनको भोजन भी खिलाएगा?

Mr. Speaker : There is no need to answer this supplementary.

Setting up of 66 K.V. Sub-Station at Hathin and 33 K.V. at Uttawar

***1215. Shri Azmat Khan :** Will the Minister for Power be pleased to state—

(a) whether there is any proposal under consideration of the Government to set up 66 K V. Sub-station at Hathin and 33 K.V. Sub-station at Uttawar in district Faridabad; and

(b) if so, the time by which the afore-said Sub-stations are likely to be set up ?

बिजली मंत्री (श्री वीरेन्द्र सिंह):

(क) जबकि फरीदाबाद जला में हथीन में एक 66 के ० वी ० उपकेंद्र वर्तमान समय में निर्माणाधीन है, उटावड में 33 के ० बी ० उपकेन्द्र का निर्माण करने का कोई प्रस्ताव नहीं है।

(ख) 66 के ० वी ० हथीन उपकेन्द्र वर्तमान वर्ष के दौरान चालू होने की अनुसूची में है।

श्री अजमत खांः स्पीकर साहब, मैं आपके माध्यम से मन्त्री जी को सच्चाई बताना चाहता हूं कि न तो वहां पर कोई 66 के० वी ० सब स्टेशन निर्माणाधीन है और न ही वह इस साल में पूरा हो पाएगा। वहां पर 1994 में वह सब स्टेशन बनाने के लिये माल जरूर गया था लेकिन मार्च, 1995 में वह माल वहां से उठा लिया गया और वहां से दूसरी जगह ले गए। दूसरी बात यह है कि यदि सरकार हथीन में 66 के० वी ० सब– स्टेशन बना देगी तो वह सारी बिजली इंडस्ट्रीज को सप्लाई होगी, किसान फिर भी बिजली से महरूम रह जाएंगे। मैं चाहता हूं कि वहां पर 66 के०वी ० सब स्टशेन के बदले 132 के ०वी ० का सब स्टेशन बनाएं ताकि 1इ कसानों को भी बजली मिल सके। इसके अलावा मैं चाहता हूं कि उटावड में भी 33 के ०वी ० का सब स्टेशन बनाया जाए।

श्री वीरेन्द्र सिंहः स्पीकर साहब, हथीन में बहुत पहले का 33 के०वी ० सब स्टेशन मौजूद है। अब उसको आगमैट करके 66 के ०वी० का बना रहे है। पलवल से हथीन तक ट्रांसमीशन लाईन कम्पली ट हो चुकी है और मुझे उम्मीद है कि उस सब स्टेशन का काम दो महीने के भीतर–भीतर पूरा हो जाएगा। वहां पर जो पावर ट्रांसफार्मर लगना है वह भेजा जा रहा है, वह बहुत जल्दी ही पहुंचने वाला है। वह सब स्टेशन दो कढ़ाई महीने में चालू हो जाएगा। जहां तक उटावड का सवाल है, वहां से इतनी डिमांड नही आई कि उटावड में सब स्टेशन बनाया जाए। वैमें भी उटावड हथीन से डेड किलोमीटर दूर है इसलिये वहां पर सब

स्टेशन नहीं बनाया जा सक्ता। उटावड में सब स्टेशन बनाना फिलहाल जस्टिफाईड नही है।

श्री अजमत खांः अध्यक्ष महोदय, जैसा कि मंत्री जी ने कहा कि हथीन से उटावड डेढ़–दों किलोमीटर है। यह गलत बात है। हथीन से उटावड 8 किलोमीटर पड़ता है। हथीन में जे 66 के०वी ० का सब स्टेशन बनाया जा रहा है, उससे वहां के रूरल एरिया की कमी पूरी नही हो सकेगी क्योंकि वह तो इण्डस्ट्री यल एरिया में है। इसलिये मैं चाहता हूं कि उटावड में रूरल एरिया को कवर करने के लिये एक 33 के ०वी ० का सब स्टेशन बनाया जाये। अब रूरल एरिया में बिजली देने के लिये हसनपुर से जो बिजली अति। है, वह 24–25 किलोमीटर पड़ती है। इसलिये मेरी सरकर से मांग है कि हमारे वहां के रूरल एरिया को कवर करने के लिये उटावड में एक सब स्टेशन अवश्य बनाया जाये।

श्री वीरेन्द्र सिंहः स्पीकर साहब, मैं इनको बताना चाहूंगा कि हथीन में 2 ट्रांस– फार्मर 4– 4 एम ०वी ०ए ० के लगे हुए हैं। अब उनकी क्षमता को अल करके 16 एम०वी०ए ० की करने जा रहे हैं। इसके अलावा 66 के०वी ० का एक सब स्टेशन भी होया जिससे वहां पर बिजली की कमी नही रहेगी।

श्री राजेन्द्र सिंह बिसलाः अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मती जी से अपने फरीदाबाद जिले में बिजली की कमी के बारे में 3– 4 बार मिला हूं। सारे फरीदाबाद जिले में सिंचाई के लिये

नहर की व्यवस्था नहीं है इसलिये 99 परसैटं लोगों को अपनी फसल की सिंचाई ट्यूबवैल्ज से ही करनी पड़ती है। मैं चाहता हूं कि फरीदाबाद जिले में एक मास्टर प्लान तैयार करके बिजली की सप्लाई मुहैया करवाई जाये। छांयसा सब–स्टेशन को अपग्रेड करने का आश्वासन मुख्य मंत्री जी ने दिया था लेकिन वह अभी तक अपग्रेड नहीं हुआ है। बदरोदा में जो सब स्टेशन रूरल एरिया में है वहां पर 40 किलोमीटर से बिजली की सप्लाई की जाती है। जब लोगों को कोई दिक्कत होती है तो उनको 40 कि०मी ० दूर जाना पड़ता है और फिर भी उनकी समस्या का समाधान नही हो पाता। फिर वे शाम को एम० एल० ए० की गर्दन पकड़ते हैं किं हमारा यह काम करवाओ। इसलिये मेरी मांग है कि फतेहपुर ब्लीच में एक एस० डी ० ओ० बैठा दिया जाये ताकि लोगों की समस्याओं का वहीं पर निपटारा हो सके। यह मैं मानता हूं कि बोर्ड की वित्तीय स्थिति ठीक नहीं है लेकिन यदि थोड़ा खर्च करके लोगों को अधिक सुविधा मिल सकती है तो मंत्री महोदय को यह काम कर देना चाहिये। इसलिये मेरा आपसे निवेदन है कि जो छांयसा का सब स्टेशन है उसको अपग्रेड किया जाये और फतेहपुर ब्लीच में एक एस० डी ० ओ० बैठा दिया जाये।

श्री वीरेन्द्र सिंहः अध्यक्ष महोदय, राजेन्द्र सिंह बिसला जी ने जो सवाल उठाये हैं उस बारे मैं कहना चाहूंगा कि फरीदाबाद जिले में बिजली बोर्ड की बहुत सारी स्कीम शुरू की हुई हैं। हसनपुर में 66 के०वी ० का सब स्टेशन बना रहे हैं और

पल्ला पल्ला में 220 के०वी ० का सब स्टेशन बना रहे हैं। मैं इनको बताना चाहता हूं कि फरीदाबाद जिले में बिजली की कमी को दूर करने के लिये क्या क्या कदम उठाये गए है। हथीन में 66 के०वी ० का सब स्टेशन बनाया जा रहा है। इसी प्रकार से हसनपुर मे 66 के०वी ० का सब स्टेशन और पल्ला पल्ली में 220 के०वी ० का सब, स्टेशन बना रहे हैं। इनको समयपुर से जो कि 400 के०वी ० का स्टेशन है, वहां से बिजली देंगे। इसके अलावा इन्होंने छांयसा और फतेहपुर ब्लोच के बारे कहा। मैं इनको बताना चाहता हूं कि प्रतापस्टील इंडस्ट्री के पास पहले ही एक सब स्टेशन बनाने जा रहे है जिससे झाडसेतली के रूरल एरिया में रिजली की सप्लाई की जा सकेगी।

श्री राजेन्द्र सिंह बिसलाः अध्यक्ष महोदय, माननीय मन्त्री जी जो फर्मा रहे हैं, यह सारा इण्डस्ट्रियल एरिया है लेकिन मैंने जो कहा है वह सारी देहात की प्रोब्लम है, जहां पर किसानों के ट्यूबवैल्ज लगे हुए हैं। क्या मन्त्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि ये फतेहपुर ब्लोच में एक एस०डी० ओ० को लगाने की कृपा करेगे क्योंकि एक एस०डी० ओ० वहां बिठाने से बहुत रिलीफ मिल जाएगा।

श्री वीरेन्द्र सिंहः अध्यक्ष महोदय, मैं इनको बताना चाहूंगा कि एस०डी ०ओ०की जस्टिफिकेशन के लिये मैंने लिख कर भेजा हुआ है। वह एग्जामिन हो रहा है। और अगर जस्टिफिकेशन होगी तो एक एस०डी ओ० को वहां पर बिठाएंगे।

प्रो० राम बिलास शर्मा: अध्यक्ष महोदय, अभी माननीय ऊर्जा मंत्री जी ने राजेके सिंह बिसला जी के सवाल के जवाब में बताया है कि हथीन में 66 के०वी ० का उप केन्द्र विचाराधीन है। इसी तरह से मैं आपके माध्यम से माननीय ऊर्जा मन्त्री जी से यह जानना चाहता हूं कि महेन्द्रगढ़ में भी 220 के०वी ० का सब स्टेशन लगाने के लिये ऐडमिनिस्ट्रेटिव मंजूरी दी गई थी क्या इसको इस वित्त वर्ष में वे पूरा करवायेगे?

श्री वीरेन्द्र सिंह: अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय साथी को बताना चाहूंगा कि ऐसी कोई योजना नही है।

Reclamation of Land

***1233. Chaudhri Zile Singh Jakhar :** Will the Minister for Irrigation be pleased to state the total acres of land lying uncultivable due to the seepage in **JLN and JSB** Canals in district Rohtak togetherwith the steps taken or proposed to be taken to reclaim the said land ?

Irrigation Minister (Shri. Jagdish **Nehra) :** The total cultivable land rendered unclutivable due to the seepage in JLN Feeder and Jhajjar Sub Branch in district Rohtak from village Rithal to Achhej, Paharipur was assessed as 5461 acres.

In order to tackle this problem, the running schedule of JLN Feeder has been revised w.e.f. April, 1995 to have two weeks' running with double discharge and two week's closure. The waterlogged area has now been reduced only to about 200 acres. Also ditch drain has been constructed.

चौधरी जिले सिंह जाखड़: अध्यक्ष महोदय, जो समस्या पचासों साल तक सुलझ नही पाई है, माननीय नेहरा साहब ने कागजों मे उसको कम्पलीट करके सुलझा दिया है। अध्यक्ष महोदय, जो जवाब इन्होंने दिया है, वह सही नही है। ये हाउस को गुमराह कर रहे हैं। In the reply, it is stated-

"In order to tackle this problem, the running schedule of JLN Feeder has been revised w.e.f. April, 199

यानि 1945 से चली आ रही समस्या को इन्होंने टैकल किया है। 6461 एकड़ जमीन में जो इन्होंने कहा है कि सीपेज रिडयूस की है और 200 एकड़ जमीन में अब यह समस्या रह गई है, यह इनफर्मेशन ठीक नहीं है। अध्यक्ष महोदय, इससे कहीं अधिक जमीन इससे खराब पड़ी हुई है। जो 200 एकड़ की बात ये कह रहे हैं यह ठीक नही है। इससे आगे और भी जमीन खराब पड़ा है और वहां पर पानी खड़ा है। पम्प हा उस नं० 1 के पास 2200–2300 एकड़ जमी न और ऐसी है जो नीचे से खराब पड़ी हुई है। अध्यक्ष महोदय, इसके साथ ही मैं तीसरी बात मन्त्री महोदय से यह जानना चाहूंगा कि जो डिच ड्रेन बना रहे हैं वह कहां से कहां तक बनेगी?

श्री जगदीश नेहरा: अध्यक्ष महोदय, जो जमीन रिड्यूस हुई है वह जे०एल०एन० के पानी से हुई है। इसकी कैपेसिटी पहले 600–700 क्यूसिक थी. और यह हर समय चलती रहती थी जिसके कारण हर रोज सीपेज होती रही। हमने इसकी कैपेसिटी

को बढ़ा कर 1200 क्यूसिक किया और 16 दिन इसको बन्द रखा तथा बाकी दिन इसमें पानी चलाया। जो पम्प हाउसिज है उनको चलाया गया। अध्यक्ष महोदय, अप्रैल, मई, जून और जुलाई गर्मिया के महीने थे इसलिये जो पानी था वह काफी उतर गया और वह एरिया रिडयूस हो गया। हो सकता है कि दो सौ एकड़ न हो, उससे कम ज्यादा हो सकती है लेकिन सब ने कहा है कि इससे फर्क पड़ा है। अध्यक्ष महोदय, वहां पर 16 दिन तक पम्प चला, उसे जमीदार भी. प्रयोग करते हैं इसलिये रोटेशन के हिसाब से फर्क पड़ा है। इसी तरह से आगे भी प्राब्लम है और मैं मानता हूं यह जो काफी लो एरिया है और जहां तक डिच ड्रेन है यह 22. 86 किलोमीटर तक बनी है और इसकी लम्बाई 63. 40 किलोमीटर होगी। जिससे पम्प के द्वारा पानी ड्रेन में डालकर यह प्रोब्लम सोलव करने की कोशिश की जाएगी।

चौधरी ओम प्रकाश बेरी: अध्यक्ष महोदय, मन्त्री जी. ने बताया कि जे०एल०एन० सीपेज की वजह से 5461 एकड़ एरिया प्रभावित हुआ है। इनको महकमे ने गलत सूचना दी है। अध्यक्ष महोदय, 20 हजार एकड़ एरिया सीपेज की वजह से अकेले रोहतक जिले में प्रभावित हुआ है। हमने इस बारे में निरीक्षण किया है तभी यहां पर बता रहा हू। जहां तक केवल दौ सौ एकड़ का इस समय प्रभावित होने का ताल्लुक है तो मैं इस बात को चौलेज करता हूं। बेरी में कम से कम दस हजार एकड़ का एरिया प्रभावित हुआ है। यह जो बेरी में डिच ड्रेन बनाने की योजना थी तो मैं

इनको यह बताना चाहता हूं कि वह नही बनी है। आप चाहें तो इस बारे में कमेटी बनाकर जांच कर लें। मंत्री जी आपके हल्के में ड्रेन की सीपेज के लिये काम हो रहा है लेकिन हमारे हल्के में ड्रेन की सीपेज के लिये कोई कार्यवाही नही हुई है। अध्यक्ष महोदय, अच्छेज और पहाड़ी पुर गांव से बरसाते शुरू होने से पहले ही महकमें की तरफ से मोटरें उठा ली गई थीं ताकि वहां पर लोग बाढ़ आने से मारे जाएं। अध्यक्ष महोदय, आप चाहें तो इस बारे में जांच करने के लिये हाउस की एक कमेटी बना लें। इसके साथ ही मेरा एक सवाल और है कि डिच ड्रेनों पर पम्प हाउस को कितने–कितने फासले पर बनाने का विचार है। जे०एल०एन० और जे ०एस०बी ० दोनों समानान्तर चलती हैं इनमें कितना फासला है और क्या वहां पर डिच–ड्रेन दोनों तरफ बनाने का कोई विचार है या नहीं है। इस बारे में भी मंत्री जी बताएं?

श्री जगदीश नेहराः अध्यक्ष महोदय, पिछले से पिछले जुलाई या जून के महीने में मैं ओम प्रकाश जी के साथ डिच–ड्रेन देखकर आया था। यह बात ठीक है कि वहां पर प्रोब्लम है लेकिन इन्होंने जो 20 हजार एकड़ वाली बात कही है वह ठीक नही है। जब मैं इनके साथ वहां पर गया था तो कुछ पम्प हाउस खराब थे और उनको ठीक करने की बात कही थी। हमने उनको ठीक किया था लेकिन फिर खराब हो सकते हैं। हम इनको ठीक करवा देंगे और इस बारे में सरकार भी चिन्तित है कि यह प्रोब्लम न आए। हम झज्जर सब ब्रांच के साथ डिच–ड्रेन बनाने की सोच रहे हैं

और यह 62 बुर्जी तक बनाने का विचार है। वहां पर मोघे देने हैं और बांध देने हैं। उसको आगे जे ०एल०एन ० के साथ जोड़ने का विचार है। ऐग्रीकल्चर डिपार्टमैंट ने भी एक प्रोपोजल बनायी है। 68 पम्प हाउसिज बनाकर इसका पानी उसमें डाला जाएगा। इसके अलावा जो झज्जर सब ब्रांच है, उसको भी पक्का करने का हमारा प्रावधान है ताकि सीपेज कम हो सके। अगर उसमें पानी कम जाता है या उसकी कैपेसिटी इतनी नही है कि वह पूरा पानी ने सके तो इसको भी 62 बुर्जी तक पक्का करने का प्रावधान है और जल्दी ही सरकार इसको पूरा करने वाली है।

चौधरी बलवन्त सिंहः मायना स्पीकर साहब, जें ०एल०एन० और झज्जर सब ब्रांच जहां तक सीपेज की बात है, पिछले बजट सैशन में भी यह बात आयी थी तो उस समय मंत्री जी ने आश्वासन दिया था। हम तब यह मानकर चले थे कि मंत्री जी ने जो आश्वासन दिया है, उसको देखते हुए यह काम शायद अगले सैशन तक पूरा करवा दिया जाएगा लेकिन जैसा जिले सिंह जी ने और ओम प्रकाश बेरी जी ने कहा है कि यह जो आकड़े दर्शाए हैं कि 5461 एकड़ भूमि के बजाए अब केवल दो सौ एकड़ भूमि में ही सेम रह गया है, यह ठीक नही है। मैं दावे के साथ यह बात कह सकता हूं कि मेरे हल्के हसनगढ में कनैली, सौनारिया, बालन्द, रटौली ओर मायना एवं साल्हावास ऐसे गांव है जहां पर आज भी कम से कम चार हजार एकड़ भूमि बर्बाद हो गयी है। जैसा इन्होंने कहा कि झज्जर सब ब्रांच से रिठाल से

अछेज पहाड़ीपुर तक रिसाव हुई भूमि का अनुमान लगाया था। मैं जानना चाहूंगा कि आपने जो प्रोपोजल बनाया है क्या वह अछेज पहाड़ीपुर तक का बनाया है। मैं जानना चाहता हूं कि कहां तक डिच नहर बनाने का प्रोपोजल है? मैं चाहूंगा कि सरकार जे० एस० बी ० के दोनों तरफ डिच ड्रेन बनाने का हाउस मे आश्वासन दें कि कब तक इसको बनावा दिया जाएगा। हमने पिछले बजट सैशन मे भी मांग की थी कि जन लोगों का पहले नुक्सान हो गया है या जिनका आज भी नुक्सान हो रहा है, क्या सरकार उनको कोई मुआवजा देने का विचार करेगी?

श्री जगदीश नेहराः अध्यक्ष महोदय, इस डिच ड्रेन पर एक करोड़ 80 लाख रुपये के करीब खर्च होगा और जैसा मैंने अर्ज किया कि 22.86 किलोमीटर यह बन चुकी है और अभी 64 किलोमीटर तक लम्बी बननी है। हमें ज्यों ज्यों फंडज अवेलेबल होंगे, वैसे वैसे हम इसको बनाने की कोशिश करेगे। सर, जैसा मैंने कख कि ऐग्रीकल्चर और इरीगेशन डिपार्टमैंटस दोनों बड़े बड़े पम्म लगाकर वहां पानी निकालने की कोशिश कर रहे है। इन्होंने जो यह कहा कि पिछली बार से यह काम नहीं हुआ है तो यह बात इनकी ठीक नही है। हमने वहां पर पोकलीन वगैरह लगायी है, उससे भी कुछ काम हुआ है। लेकिन मैं उस काम को ज्यादा संतोषजनक नहीं मान रहा हूं। सर, मैं इनके गांव में भी गया हूं और मैं मानता हूं कि वहां दिक्कत है लेकिन हमने जो वहां पर पोकलीन लगायी थी वह इतना काम नहीं कर सकी जितना हम

उम्मीद कर रहे थे, परन्तु हम कोशिश करेंगे। वहां पर ड्रैड लाइन डाल सकते हैं क्योंकि वहां की जमीन दलदल है। अब तो वहां वैसे ही चारों तरफ पानी ही पानी है। अब तो यह समस्या और भी गंभीर हो गयी है यह मैं मानता हूं लेकिन हम कोशिश करेंगे कि ऐग्रीकल्चर और इरीगेशन डिपार्टमैंट मिलकर वहां पोकलीन वगैरह लगाएं ताकि वहां जो पानी है उसको कम किया जा सके। इस समय मुझे पता नही कि वहां कौन से गांव में पानी है। यह बात तो ये स्वयं ही बता सकते हैं कि वहां गावों में किन किन साइडों में पानी है। जिस गांव में भी पानी है वहां हम पम्प हाउसिज बना कर और डिच ड्रेन खोदकर पानी को ड्रेन नं० आठ में डालकर इस समस्या को हल करने की कोशिश करेंगे। इसके लिये हम पूरी तरह चिन्तित हैं।

श्री अध्यक्ष: जिले सिंह जी, आप मन्त्री जी से पर्सनली मिल लें और अपनी प्रोब्लम दूर कर लें।

Defective Transformers

***1236. Shri Daryao Singh :** Will the Minister for Power be pleased to state the name of the villages of Jhajjar Division where damaged/burnt transformers are lying at present togetherwith the time by which these transformers are likely to be replaced/ repaired ?

बिजली मन्त्री (श्री वीरेन्द्र सिंह): एक विवरण सदन के पटल पर प्रस्तुत है।

विवरण

21 सितम्बर, 1995 तक परिचालन मंडल, झज्जर में निम्नलिखित गांवो/स्थूलों के 74 क्षतिग्रस्त ट्रांसफार्मर बदले जाने शेष थे:—,

1. खेड़ा ठरु

2. मातावाली कोसली

3. कोसली

4. चन्दोल

5. चांद की ढानी

6. करौली

7. कोन्दरोली

8. डडम्पुर

9 खुडां

10. शादीपुर

11 जद्दी

12 भाखली

13. गुडयानी

14 हसनपुर

15 सुख्सपुर

16 सादन नगर

17 बेरी

18 झज्जर

19 ओखल चना

20 चनस्वान

21. राईया

22 कुहार

23 खेडी सुलतान

24 कासनी

25. छुछकवास

26 पटौदा

27. विरोहर

28 नयागाव

29. दबलधन

30. माजरा

31. सलौदा

32. पटसनी

33. धनिया

34. नौगामा

35. सादतनगर

36. घमिड़ी

37. ससरौली

38. झाड़ौदा

39. वह

40. रानिया

41. सेलगा

42 छावा

43. टुमना हेडी

44. मलियायास

45. भिन्डाबास.

46. टुमना

47. भाटेड़ा

48. झाल

49. डाकड़ा

50. लिला हेड़ी

51. डल्लनवास

रोहतक परिमंडल में भीषण बाढ आने के कारण क्षतिग्रस्त ट्रांसफामरों का बदलना बुरी तरह प्रभावित हुआ है क्योंकि बाढ़ के कारण विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचना बहुत कठिन था। अब प्रयास इस तरह किए जा रहे हैंकि जितना जल्दी सम्भव हो उतना ही शीघ्र इन ट्रांसफार्मरों को बदल दिया जाए।

श्री दरियाओ सिंहः स्पीकर सर, मंत्री जी ने 51 गांवो के नाम बताये है कि इनमें जाने का रास्ता नही है। ऐसा कोई गांव नही है जिसमें जाने का रास्ता न हो। मैं मती जी से जानना चाहता हूं कि कब तक ट्रांसफार्मर लगा देंगे और कब तक खंभे तार लगा देंगे ?

श्री वीरेन्द्र सिंहः स्पीकर सर, मैंने यह तो नही कहा कि रास्ता नहीं है। 74 ट्रांसफार्मर इन गांवों में डैमेज हैं, इनको बहुत जल्द हम पूरा करेंगे।

सरदार जसविंद्र सिंहः स्पीकर सर, मैं मंवी महोदय से जानना चाहता हूं कि हमारे पेहवा में जो पैडी एरिया है वहां ट्रांसफार्मर की कमी है। एक महीने से ज्यादा समय हो गया है, ट्रांसफार्मर जल गए हैं। मैं चाहूंगा कि पैडी एरिया में प्रायोरिटी के आधार पर ट्रांसफार्मर भेजने की कृपा करें 1

श्री वीरेन्द्र सिंहः स्पीकर सर, इस बार जो भयंकर बाढ़ आई है उस बाटु के. आने से एक दो रास्ते रुक गए है। जिन ट्रासफार्मर्ज के आर्डर प्लेस कर दिए गए थे वे भी रास्ते बंद होने की वजह से बहुत डिले हो गए। इसलिये काफी जगह ट्रांसफार्मर रिप्लेस नही हो सके और कुछ अधिक टाइम लग गया है। दो तीन दिन तक 880 ट्रांसफार्मर पहुंचने वाले हैं हरियाणा प्रान्त में। मैं यकीन दिलाना चाहता हूं कि जो बैकलोग है उसे 15 अक्तूबर तक पूरा करने को कोशिश करेंगे और सभी को रिप्लेस करने की कोशिश करेगे।

Milk Plants

***1205. Prof. Chhattar Singh Chauhan :** Will the Minister for Dairy Development be pleased to state whether it is a fact that all the Milk Plants in the State are running in losses at present; if so, the reasons thereof ?

सहकारिता मन्त्री (श्रीमती शकुन्तला भगवाड़िया): जी नही। हरियाणा डेरी बिकास सहकारी प्रसंध के चार दुग्ध संयतों में से तीन संयत्र लाभ में चल रहे हैं जबकि जीन्द दुग्ध संयत घाटे

में चल रहा है। इस घाटे का मुख्य कारण विस्तृत अक्षमता के उपयोग के अधीन दुग्ध की कमी के परिणाम स्वरूप है।

प्रो० छतर सिंह चौहानः स्पीकर सर, मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि वे कौन से 3 मिल्क प्लांट हैं जो मुनाफे में चल रहे हैं। 1991 से 1995 तक का ईयरवाइज ब्यौरा देने की कृपा करें कि किस साल में कितना मुनाफा कमाया? दूसरे मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। इन्होंने जुलाई, 1991 में आते ही भिवानी के साथ सौतेला व्यवहार करते हुए जहां इनके दूसरे मिल्क प्लांट पाटे में चल रहे हैं, उनको छोड़ कर केवल भिवानी प्लांट को बंद कर दिया। मुख्य मंत्री जी ने 1991 में आश्वासन दिया था कि भिवानी के मिल्क प्लांट को बंद नही करेगे और अगर बंद हो गया तो चालू करेगे लेकिन आज चार साल बीत जाने के बाद भी यह प्लांट चालु नहीं हुआ है। वहां के किसानों का पैसा आज भी बकाया पड़ा है। मैं पूछना चाहता हूं कि उसको बंद करने का कारण राजनीतिक था या कोई और कारण था। बल्लभगढ़ के मिल्क प्लांट में कोई उत्पादन नहीं किया जाता। केबल दूध मंगाकर पैकिंग की जाती है। अगर इसके उत्पादन मानते हैं तो यह उत्पादन तो किसी भी जगह किया जा सकता है। मैं मती महोदया से जानना चाहता हूं कि कौन कौन से मिल्क प्लांट कितने घाटे में हैं। 1991 से लेकर आज तक का मुनाफा बताएं और यह भीं बताएं कि भिवानी का,

मिलक प्लांट इन्होंने किस वजह से बंद किया जबकि दूसरे प्लांट भी घाटे में चल रहे हैं।

श्रीमती शकुन्तला भगवाड़िया: अध्यक्ष महोदय, भिवानी का मिल्क प्लाट अप्रैल, 1986 में बन्द कर दिया गया था। इक्का कारण यह था कि इस प्लांट की कैपेसिटी 10 हजार लीटर दूध की प्रतिदिन थी परन्तु इसके मुकाबले दूध केवल 900 लीटर प्रतिदिन आता था। कर्मचारी यूनियनें 30 थी जिनका खर्चा 10 लाख रुपये प्रतिबर्ष था। दूसरे यह प्लांट कंडैसड दूध बनाता था जिसकी बिक्री मार्किट में न के बराबर थी। मुख्य खरीददार सेना थी परन्तु सेना को दी गई सप्लाई पर कभी लाभ नही रहा। सारे सम्मानित सदस्यों को पता था कि यह कंडैसड दूध हरियाणा के लोग इस्तेमाल नही करते। केवल मिलिट्री में ही इस को इस्तेमाल किया जाता है। वर्ष 1972 से जब से यह प्लांट बना, उपरोक्त दो कारणों के कारण लगातार घाटे में चलता रहा जिस कारण बन्द करना पड़ा। इसी कारण से 1–8– 1991 को यूनियन भी बन्द करनी पडी।

Mr. Speaker : Questions hour is over.

नियम 45 के अधीन सदन की मेज पर रखे गए तारांकित प्रश्न का लिखित उतर

Opening of Ayurvedic/Unani Dispensary

***1216. Shri Azmat Khan :** Will the Minister for Health be pleased to state—

(a) whether there is any proposal under consideration of the Government to open Ayurvedic/Unani Dispensary in Village Guraksar, Tehsil Hathin district Faridabad; and

(b) if so, the time by which the aforesaid dispensary is likely to be opened ?

स्वास्थ्य मन्त्री (बहिन करतार देवी):

(क) जी, नहीं।

(ख) प्रश्न ही नही उठता।

मन्त्री परिषद् के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा

Mr. Speaker : Hon'ble Members, I have received a notice of motion of No-Confidence against the Ministry in the following terms .-

"We move a motion expressing want of confidence in the Haryana Ministry headed by Shri Bhajan Lal, Chief Minister."

In view of the discussion which took place on the floor of the House concerning the No-Confidence Motion of which notice was given of by Sarvshri Om Parkash, Sampat Singh, Dhirpal Singh, Satbir Singh Kadian, Bharath Singh, Krishan Lal, Mani Ram Rupawas, Amar Singh Dhanday, Zile Singh, Daryao Singh, Jaswinder Singh, Balwant Singh, Ramesh Kumar, Suraj Bhan, Jai Pal Singh, Ram Kumar Katwal, Chhattar Pal Singh, Ram Bilas Sharma, Mohan Lal Pippal, Birender Singh and Ram Parkash, M. L. As. I have

given the ruling that the No-Confidence Motion is in order and it will be taken up today. Now, I would request those Members in favour of leave being granted to the Motion of No-Confidence to rise in their seats.

(At this stage, Members who were in favour of leave being granted to the Motion of No Confidence rose in their seats)

Mr. Speaker : As more than 18 Members have risen, the leave is granted. The business on the order paper shall be taken after discussion on the No Confidence Motion is disposed of by the House. Keeping in view the business on the Order Paper, I fix two hours for discussion. Now Shri Om Parkash Chautala, M. L.A. will move the motion of No-Confidence.

प्रो० सम्पत सिंहः सर, दो घन्टे का समय तो इसके लिये बहुत थोडा है। उसके लिये टाइम ज्यादा फिक्स किया जाना चाहिये क्योंकि हरेक विभाग के ऊपर डिस्कशन होनी है।

Mr. Speaker : Please take your seat. Let Shri Om Parkash Chautala move the motion.

चौधरी बंसी लालः हमने इं टर स्टेट टैरीटोरियल और वाटर डिसप्यूट से सम्बन्धित एक काल अटैन्शन मोशन आपको दिया था, उसक क्या बना?

श्री अध्यक्षः बंसी लाल जी, आप इसके बाद पूछना। पहले यह मसला हल हो लेने दे।

चौधरी बंसी लालः ठीक, है जी।

श्री धीर पाल सिंह विधायक की भूख हड़ताल संबंधी मामला उठाना

चौधरी ओम प्रकाश चौटाला (नरवाना): स्पीकर साहब, मैं यह नो कांफिडैसं मोशन मूव करने से पहले आपका ध्यान एक दो विषयों की ओर दिलाना चाहता हूं। कल भी मैंने अनुरोध किया था कि इसी हाउस के माननीय सदस्य नौ दिन से भूख हड़ताल पर बैठे हुए हैं। यह एक बहुत चिन्ताजनक विषय की बात है कि कल रात को भारी संख्या में पुलिस फोर्स ने वहां पर बैठे पार्टी वर्कर्ज पर लाठी चार्ज किया। जबरदस्ती इस हाउस के सदस्य को पुलिस उठा कर ले गई। वे बेहोश हो गए और अभी तक पता नही चल पाया कि उन्हें कहां ले कर गए है। एक हाउस के सम्मानित सदस्य के प्राणों का सवाल है। आप पता करें कि उस मैम्बर को कहां ले कर गए हैं। हम उसके प्राण बचाने में आपसे आग्रह करते है। आपको इस मामले मे अपनी भूमिका निभानी चाहिये। न उनके बारे में उनके परिवार के लोगों को पता है और न पार्टी के लोगों को पता है। वे भूख हड़ताल पर एक अच्छे काज के लिये बैठे हुए थे। किस प्रकार से उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया है, लाठियां बरसाई गई हैं। वे 9 दिन से भूखे हैं। उनको लाठियां बरसा कर पुलिस ले गई। (शोर) अध्यक्ष महोदय, इसमें इसे हाउस के सदस्य के प्राणों का सवाल है।

श्री अध्यक्षः पहले आप मोशन मूव करें। उसके बाद ये बातें कह सकते हैं।

चौधरी ओम प्रकाश चौटालाः अध्यक्ष महोदय, इस हाउस के सदस्य के प्राणों का सवाल है। यह इससे कहीं ज्यादा इम्पौर्टट है। हाउस सैशन में है और पुलिस एक सदस्य को उठा कर ले जाए। उनको बेहोश करके लाठियों से पीट कर ले गए। उनके परिवार को इस बारे में सूचित न किया जाए और पार्टी को सूचित न किया जाए ओर जहां तक कि आपको भी सूचित न किया जाए, इससे बुरी बात गौर क्या हो सकती है?

श्री अध्यक्षः पहले आप अपना मोशन मूव करें, उसके बाद ये सारी बातें आ आएगी।

मुख्य मन्त्री (चौधरी भजन लाल): अध्यक्ष महोदय, मेरा प्यायंट आफ आर्डर है। इन्होंने कल भी इस बात की चर्चा की और आज फिर शुरू कर दी। आज सरकार के खिलाफ अविश्वास का प्रस्ताव आया हुआ है, उसमें ये सारी बात कहेगे। उसके बाद हम पूरी तफसील से जवाब देंगे। चौधरी धीर पाल सिंह कहां है, पुलिस उन्हें कहां ने कर गई है, ये सारी बातें आएंगी। आप कहें तो मैं पहले बता देता हूं। लेकिन हम ऐसा नहीं चाहते, पहले हाउस की कार्यवाही सुचारु रूप से चले। जब ये अपनी बात कह देंगे तो उसका जवाब तफसील में दिया जाएगा।

श्री अध्यक्षः चौटाला साहब, आप कृपया पहले अपना मोशन मूव करे। (शोर)

प्रो० राम बिलास शर्माः .....

श्री अध्यक्षः यह कुछ भी रिकार्ड न किया जाए।

प्रो० छतरपाल सिंहः स्पीकर साहब, आपका एक सदस्य मिसिंग है। यह बहुत महत्वपूर्ण मामला है और आप हम सब के कस्टोडियन हैं। (शोर)

श्री अध्यक्षः आप कृपया बैठे। पहले मोशन मूव किया जाए, उसके बाद सारी बातें कही जा सकती हैं।

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर साहब, हम बार बार आपसे कह रहे हैं कि एक मैम्बर मिसिंग है। हम नो काफिडैसं मोशन क्या मूव करें? पहले गवर्नमैंट उसके बारे में बता दे कि वह कहां है। स्पीकर साहब, उनको बेहोशी की हालत में उठा कर ले गए हैं। पुलिस ने उनको पीटा है, इन हालात में हमें आपकी प्रोटैवशन चाहिये।, (शोर)

Mr. Speaker : You should not make repetitions. Let the motion be moved first, then you can speak. (Noise & interruptions)

चौधरी ओम प्रकाश चौटालाः अध्यक्ष महोदय, जो मोशन औफ नो–काफिडैस एडमिट हुई है, उसमें सारी बातो कई चर्चा हो जाएगी लेकिन यह उससे अहम विषय है। जिस माननीय सदस्य

को पुलिस मारपीट करके उठा कर ले गई है, उनके इस अविश्वास प्रस्ताव पर दस्तखत हैं। उनका कोई अता पता नही है कि वे कहां पर है किस हालत में हैं। उनको पुलिस बेहोशी की हालत में उठा कर ले गई है। आप हाउस कस्टोडियन हैं, आपको उनके बारे में पता होना चाहिये कि वह माननीय सदस्य कहां पर हैं? आपको यह भी पता होना चाहिये कि उनको कौन उठा कर ले गया है और उनको किस जगह पर रखा है? उनकी उनके परिवार वालों को बहुत चिन्ता है।

चौधरी भजन लालः आपको इसके बारे में दो घंटे के बाद बताएंगे। (शोर)

चौधरी ओम प्रकाश चौटालाः अध्यक्ष महोदय, यह बहुत ही अहम मसला है, इससे ज्यादा जरुरी मसला अविश्वास प्रस्ताव का नहीं है। अध्यक्ष महोदय, आप इस हाउस के कस्टोडियन हैं। आपको उनका पता होना चाहिये कि वह सदस्य कहां पर हैं और किस हालत मे हे। (शोर)

Mr. Speaker : You first move the motion please. आपने इस बारे में जो कुछ कहना है वह आप अपनी स्पीच में यह बात बोल दें। (शोर)

चौधरी ओम प्रकाश चौटालाः अध्यक्ष महोदय, यह मोशन भी मय होगी और इस पर चर्चा भी जरुरी होगी, लेकिन इससे अहम विषय उस माननीय सदस्य का है जिसको पुलिस पीट कर

बेहोशी की हालत में उठा कर ले गई है। यदि मोशन मूव हो जाएगी तो यह विषय अलग थलग हो जाएगा। वह इस हाउस का एक सम्मानित सदस्य है। उनके इस प्रस्ताव पर दस्तखत हैं उनको पुलिस पीट कर उठा ले जाए और उरका कोई अता पता न हो यह कोई अच्छी बात नहीं है। इस डैमोक्रेटिक सैटअप में पुलिस एक सदस्य को इस प्रकार से पीट कर ले जाए और उसका कोई अता पता न हो, यह बात कहां तक ठीक है? (शोर)

साथी लहरी सिंहः स्पीकर साहब, मेरा प्यायंट आफ आर्डर है (शोर)

श्री अध्यक्षः लहरी सिंह जी, आप बैठ जायें।

श्री सतबीर सिंह कदयान (नौल्था): स्पीकर साहब, उस माननीय सदस्य को रुलिस मरण अनशन से उठा कर ले गई पै। इन्होने उसकी तब पिटाई करवाई है, तब उठवाया है जब इनके खिलाफ यह अविश्वास का प्रस्ताव आया। उनका यह पता नही है कि वे कहां पर है और किस हालत में हैं। हाउस के लिये इससे ज्यादा चिन्ता का विषय और क्या हो सकता है? सारी स्टेट के लिये भी इससे ज्यादा चिन्ता का विषय कोई और नहीं हो सकता है? इस अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा होने से पहले चीफ मिनिस्टर इस बात का जवाब दें कि उनको पुलिस कहां पर ले गई है।

सिचाई मन्त्री (श्री जगदीश नेहरा): स्पीकर साहब, मेरा प्वायंट औफ आर्डर है जो नो काफीडैसं मोशन है, वह सरकार पर

पूरा अविश्वास है। जो माननीय सदस्य श्री धीर पाल जी, वह एक पार्टी से संबंधित है। नो काफीडैसं मोशन में बी०जे०पी०, कांग्रेस (तिवाड़ी) हरियाणा विकास पार्टी और दूसरे सदस्य शामिल है। यह बहुत अहम मुद्दा है। अगर विपक्ष के साथी इस बारे में सीरियस हैं तो उस पर चर्चा शुरु कर सकते हैं और सरकार इनकी कही हुई सारी बातों का जवाब देने के लिये तैयार है। स्पीकर साहब, आपने इस बहस के लिये दो घंटे का टाईम फिक्स किया है। यदि ये दस प्रस्ताव के बारे में सीरियस नहीं हैं तो आप बिजनैस की अगली आईटम लें लें। यदि ये इस प्रस्ताव पर बोलना चाहते हैं तो इसको मूव करें।

प्रो० सम्पत सिंह (भट्टू कलां): स्पीकर साहब, इसमें किसी पार्टी का कोई सवाल नहीं है। माननीय सदस्य श्री धीर पाल जी इस हाउस के सम्मानित सदस्य हैं। स्पीकर साहब, आप हमारे राइटस के कस्टोडियन हैं। उनको पुलिस ने पीटा है और पुलिस उनको उठा कर ले गई है, उनका यह भी पता नहीं है कि कहां पर ले गई है। उन पर पुलिस ने लाठी बरसाई और वह बेहोश हो गए। उनका ब्लड प्रैशर कम हो चुका था, उनका पलस रेट भी कम हो चुका था। वे बहुत ही बुरी हालत में थे, क्या ऐसे हालत में यह प्रस्ताव जरुरी है? इस प्रस्ताव पर चर्चा शुरू करने से पहले सरकार हमें यह बताए कि पुलिस उनको कहां पर उठा कर ले गई है? अध्यक्ष महोदय, सारे हरियाणा के लोग चिन्तित हैं। जब उसको उठा कर ले गए तो वह बेहोश हो चुके थे। सारे हरियाणा प्रदेश

के लोग, उनके परिवार के सदस्य और हमारी पार्टी के कर्यकर्त्ता इस बात को लेकर चिन्तित हैं कि वे कहां पर हैं, उनका स्वास्पय कैसा है, कुछ तो ये बताएं? (शोर) हम पूरी डिस्कशन करेगे और आपकी पूरी पोल खोलेगे। (शोर)

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, ये इस सरकार के खिलाफ 4 साल में चौथी बार अविश्वास का प्रस्ताव लाये हैं। यदि एक पहलवान एक बार दूसरे पहलवान से कुश्ती में हार जाये तो वह चुप बैठ जा ता है लेकिन कोई बेशर्म पहलवान ही कहेगा कि दुबारा लडूंगा। फिर भी गिर जाये तो कहेगा कि तीसरी बार लडूगा। लेकिन तीसरे बार गिरने पर वह चुप बैठ जाता है। ये बार बार पराजित होने पर भी चुपचाप नही बैठ सकते। इनके पास सरकार के खिलाफ बोलने के लिये कोई मुद्दा नही है। (शोर) अध्यक्ष महोदय, जहां तक धीरपाल जी का सवाल है, उनके प्रति हमारी पूरी हमदर्दी है। हम उनकी दिल से इज्जत करते हैं। वे इनकी पार्टी के अध्यक्ष हैं और हाउस के सम्मानित सदस्य है। मै सदन को बतलाना चाहता हूं कि जब चौटाला साहब लगातार एक घंटा बाढ़ पर बोले तो एक बार भी धीरपाल जी का नाम नहीं लिया। रामबिलास जी ने जरूर उनके प्रति हमदर्दी जाहिर की थी और उसके बाद चौटाला साहब को धीरपाल जी की याद आई। ये कह रहे हैं कि उसको उठा लिया गया। द्वे कुछ फ्ता नहीं। आप अविश्वास प्रस्ताव पर बहस करे, तब तक दो घटे में पता करवा कर कि वे कहां पर हैं, किस हालत में है, आपको बता देंगे। इसी

लये मेरा निवेदन है कि ये इस अविश्वास प्रस्ताव पर सीरियस नही हैं। इसलिए इस मैटर को गैप करके आप दूसरा मैटर टेकअप कर लें।

चौधरी ओम प्रकाश चौटालाः अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारे एक माननीय सदस्य को पुलिस वहां से उठा कर ले गई और अब तक उसका हमें कुछ अता पता नहीं है। इस बारे में मैं आपसे जानना चाहता हूं कि क्या आपके नोटिस में यह बात लायी गई है कि वे कहां पर हैं? पुरानी परम्परा के मुताबिक यदि किसी मैम्बर को पुलिस उठा कर ले जाती है तो सर्वप्रथम उसकी सूचना स्पीकर को दी जाती है। यदि उसकी सूचना आपके पास नहीं आयी और आपको नहीं दी तो जिन अधिकारियों की तरफ से कोताही हुई है, उनके खिलाफ एक्शन होना चाहिए। सरकार नो–कंफाडेंश मोशन पर बहस के लिए डटी हुई है। हम तो यही जानना चाहते हैं कि हमारे एक सम्मानित सदस्य कहां पर हैं, वे किस हालत मे हैं? हम सब लोगों के आप कस्टोडियन हैं। उनको भूख हड़ताल के स्थान से उठाये हुए 14 घंटे हो चुके हैं, क्या उनका कोई अता पता आपके नोटिस मे लाया गया हुँ या नहीं? यह एक अहम विषय है। इससे हरियाणा के लोग, उनके परिवार के सदस्य और हमारे कार्यकर्ता चिंतित हैं। मैं यह जानना चाहता हूं कि यदि उनकी सूचना आपके नोटिस में नहीं लायी गई तो क्या यह हाउस का अपमान और चेयर का अपमान नहीं है?

श्री जगदीश नेहराः अध्यक्ष महोदय, मेरा प्यायंट ऑफ आर्डर है। आपने इनको बार–बार नो–कफिडैस मोशन मूव करने के लिए कहा। सरकार ने कल भी कहा था कि हम नो–कंफिडैन्स मोशन के लिए तैयार हैं। हम लगातार कोशिश कर रहे हैं कि ये इस मोशन को मूव करें लेकिन ये ऐसा नही कर रहे हैं और हमारे खिलाफ मोशन मूव करने से भाग रहे हैं। अगर ये नो–कफिडैन्स मोशन नही लाना चाहते तो मेरी सबमिशन है कि अण्डर रूल 15 अगली आईटम ले ली' जाए। (विघ्न) अध्यक्ष महोदय, एक दो घण्टे में कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है। (विघ्न एवं शोर) दो घण्टे की बहस इस पर हो जाएगी, उससे कोई फर्क नही पड़ेगा। (विघ्न) अध्यक्ष महोदय, ये लोग इस मामले पर सीरियस नहीं हैं। जो बहस होगी सरकार उसका जवाब दे देगी। अगर ये सीरियस हैं तो अपना मोशन मूव करें, अन्यथा अगली आईटम ले लें। मैं रूल 15 पढ़ देता हूं। (विघ्न एवं शोर)

उद्योग मन्त्री (श्री ए ० सी ० चौधरी): स्पीकर सर, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। मेरा प्यायंट ऑफ आर्डर यह है कि हमारे अपोजीशन के भडि जो मोशन ऑफ नो– कफिडैसं ले कर आए हैं, इसको मूव करें ताकि सरकार अपने अस्तित्व को साबित करे। कल भी इस पर काफी. टाईम जाया हुआ। अध्यक्ष महोदय, सरकार ने इनके डैमोक्रेटिक राईट को स्वीकार करते हुए, अपने सरकारी नोटिफाईड बिजनैस को रोक कर, क्वैश्चन आवर के फौरन बाद नो–कफिडैसं मोशन पर डिस्कशन करने के लिए माना ताकि

सरकार सदन के अन्दर अपना अस्तित्व साबित करे। अध्यक्ष महोदय, आपने इनको तीन बार कहा, आपने इनको 3 बार कॉल किया कि ये अपना मोशन मूव करे लेकिन ये उस बात पर आ ही नही रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, हाउस का टाईम बहुत प्रैशियस है और ये इस मामले में सीरियस नहीं हैं। सरकार ने पहले ही कहा है कि हम हाउस में पहले अपना अस्तित्व साबित करेगे, उसके बाद कोई सरकारी बिजनैस करेंगे। आपके बार–बार कॉल किए जाने पर भी असली बात पर नहीं आ रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, जब आपने इनको 3 बार कॉल किया है, क्या इनकी रिसपौसिब्लिटी नहीं थी कि ये अपना मोशन मूव करते? (विघ्न) अध्यक्ष महोदय, इसका मतलब यही निकलता है कि ये हाउस का वक्त बर्बाद कर रहे हैं। हाउस की कार्यवाही पर बहुत अधिक खर्च आता है और इस प्रकार क्या हरियाणा की जनता के पैसे को बर्बाद नहीं कर रहे हैं? अध्यक्ष महोदय, मेरी आपसे सब– मिशन है कि आप इनसे कहें कि ये अपना मोशन मूव करें, नहीं तो आप अपना मत दें ताकि अगला बिजनैस शुरु किया जा सके (विघ्न)

(इस समय कई माननीय सदस्य बोलने के लिए खड़े हो गए)

श्री अध्यक्षः आप सभी लोग इस प्रकार से खड़े न हो। (विध्न एव शोर) सम्पत सिंह जी, आप क्या कहना चाहते है? (विघ्न) सम्पत. सिंह जी, आप अपनी बात दो मिनट में खत्म करें।

प्रो० सम्पत सिंहः अध्यक्ष महोदय, ये लोग बार–बार कह रहे है कि हम बहस नही करवाना चाहते, यह बिल्कुल मिथ्या बात है। हम बहस शुरू करना चाहते हैं। इस बारे में हमने कल इतनी मेहनत की ताकि यह एडमिट हो सके। इससे जाहिर होता है कि हम इस बारे में कितने सीरियस हैं। अध्यक्ष महोदय, जैसे कि चौटाला साहब ने कहा है, मैं उसको दोबारा से रिपीट नही करना चाहता। सर, मैं आपसे अपील करना चाहूंगा कि आप अपनी रूलिंग दें कि क्या किसी. मैम्बर को गिरफ्तार करने के बाद स्पीकर को इत्लाह नही देनी चाहिए? अगर देनी चाहिए तो कितनी देर में दी जानी चाहिए। अगर इन्होंने आपको इत्लाह नही दी तो क्यो नही दी।

Mr. Speaker : In rule 280 of the Rules of. Procedure and Conduct of Business in the Haryana Legislative Assembly, it is mentioned—

"When a member is arrested on a criminal charge or for a criminal offence or is sentenced to Imprisonment by a court or is detained under an executive order, the the committing judge, magistrate executive authority, as the case may be, immediately intimate such fact to the Speaker indicating the reasons for the arrest, determination or conviction, as the case may be, as also the place of detention or imprisonment of the member in the appropriate form set out Schedule III."

प्रो० सम्पत सिंहः अध्यक्ष महोदय, आप हमें यह बताएं कि आपने जो इमिजियेटली शब्द पढ़ा है, इसका क्या मतलब होता है?

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वायंट आफ आर्डर है। मैं इनको यह बताना चाहता हूं कि किसी मैम्बर को अरैस्ट करने के बाद 24 घंटे या 48 घंटे में स्पीकर को इत्तलाह देनी चाहिए। लेकिन कहीं पर भी ऐसा रूल नही है कि अरैस्ट करते ही' एक घंटे में स्पीकर साहब, के पास इत्तलाह पहुंच जाए कि हमने अरैस्ट कर लिया है। (विघ्न)

डा० राम प्रकाशः .....।

श्री अध्यक्षः यह जो डा ० राम प्रकाश जी कह रहे है, इसको रिकार्ड न किया जाए। डा० राम प्रकाश जी आप बैठ जाएं। (शोर एवं व्यवधान)

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, जब लीडर आफ दि हाउस बोल रहा है तो इनको बीच में नहीं बोलना चाहिए। (शोर एवं व्यवधान)

डा० राम प्रकाशः .....। (शोर एवं व्यवधान)

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, मैं प्यायंट आफ आर्डर पर खड़ा हुआ था क्या बीच में दूसरा मैम्बर प्वायंट आर्डर पर खड़ा हो सकता है? जब लीडर आफ 'दि हाउस बोल रहा हो

तो दूसरे मैम्बर को समझ होनी चाहिए कि वह बीच में खड़ा न हो। (शोर एवं व्यवधान)

चाधरी ओम प्रकाश चौटालाः अध्यक्ष महोदय, यहां पर सभी मैम्बर्ज का स्टेट्स एक–सा है और सभी को यहां पर बोलने का अधिकार है।

डा० राम प्रकाशः .....।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, इस विषय में मैं आपको दो घंटे के अन्दर ही पता करके बता देता हूं। (विघ्न) अध्यक्ष महोदय, यह जो नो कन्फीडैस मोशन 21 मैम्बर्ज –ने साईन करके दिया है, उनमें से एक से यह मोशन मूव करवा लें। अगर फिर भी ये नहीं पढ़ते हैं तो आप इसको सस्पैड कर दें। (शोर एवं व्यवधान)

11.00 बजे

चौधरी ओम प्रकाश चौटालाः अध्यक्ष महोदय, अभी आपने रूलिंग पढ़ी है और उसमें आपने यह कहा है कि इस मामले में इमीजिएटल सूचना दी जानी चाहिए। मैं सर्वप्रथम इस मामले में आपसे रूलिंग चाहूंगा कि अगर किसी मैम्बर को पुलिस उठाकर ले गयी है तो क्या उसकी सूचना आपको नही दी जानी चाहिए? आप इस हाउस के कस्टोडियन हैं, इसलिए मैं आपसे जानना चाहूंगा कि क्या इस बात की सूचना आपको दी गयी है या नही? यह जानना तो आपका अधिकार है। ये कभी तो 48 घण्टे कह देते हैं,

कभी दो घण्टे कह देते हैं। कभी कुछ कह देते हैं, ये आपको गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं और हाउस को अपमानित करने की चेष्टा करते हैं। इस हाउस के एक सम्मानित सदस्य की सुरक्षा का सवाल है, इसलिए आपको तो यह पता होना ही चाहिए कि वह मैम्बर कहां है? मैं इस बारे में आपकी रूलिंग चाहूंगा कि क्या आपको इस मात की सूचना दी गयी हैं कि उस मैम्बर को पुलिस अरैस्ट करके ले गयी है या नहीं? अगर यह सूचना आपको नही दी गयी है तो जिन लोगों ने यह कोताही की है, क्या उनके खिलाफ कोई ऐक्शन लिया जाएगा?

श्री जगदीश नेहराः स्पीकर सर, मेरा प्यायंट आफ आर्डर है। सर, जब आपने इनको काल अपोन कर दिया कि नो–क फिडैस मोशन मूव हो तो ये उस मोशन को मूव न करते हुए मैदान से भागने की कोशिश कर रहे हैं और आपसे पूछ रहे हैं कि आप हमे जबाव दो। सर, इतका यह क्या तरीका है? यदि ये कोई जवाब मांगना चाहते हैं तो वह जवाब दे दिया जाएगा लेकिन इनका यह कोई तरीका नही है कि इसी वक्त इनका जवाब दे दो। ये तो भा गना चाहते हैं इसलिए मैं कहता हूं कि आप अगला बिजनैस शुरू कीजिए। इनका यह कोई तरीका नही है। जब आपने काल अपौन कर दिया और फैसला कर दिया कि नो कंफीडैस मोशन पर डिस्कशन शुरु हो तो ये उस मोशन पर सारे प्रान्त की बात या सरकर के खिलाफ जो बातें हैं, कह सकते हैं। ये क्यों नही उस समय अपनी सारी बातें कहते? ये क्यों भाग रहे हें?

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, मुझे अभी–अभी इतलाह मिली है कि धीरपाल सिंह जी को अरैस्ट नही किया गया है बल्कि वे मैडीकल कालेज में दाखिल है और वहां आराम कर रहे हैं। उनको कोई तकलीफ नही है, वे सेफ हैं।

प्रो० सम्पत सिंहः वहां उनको कौन लेकर गया है?

चौधरी भजन लालः यह भी तफतीश करके बता देंगे। लेकिन वे सेफ हैं और उनको गिरफ्तार नहीं किया गया है। वे मैडीकल कालेज में दाखिल है।

चौधरी ओम प्रकाश चौटालाः अध्यक्ष महोदय, क्या आपके पास इसकी कोई सूचना नही है कि हाउस के एक सम्मानित सदस्य को पुलिस जबरदस्ती उठाकर ले गयी है। उनके वेयर अबाउट्स के बारे मे आपके पास सूचना तो आनी चाहिए?

श्री अध्यक्षः ऐसा है कि मेरे पास इस बात की कोई ओफिशिएली इस्तलाह नहीं है कि वे कहां पर हैं। अगर वे डिटेशन या अरैस्ट होते तो मेरे पास इत्तलाह होती। लेकिन जैसा चीफ मिनिस्टर साहब ने कहा है कि वे मैडीकल. कालेज में दाखिल हैं और उनको पुलिस ने अरैस्ट नहीं किया है, it should be taken as correct.इसलिए आप अपना मोशन मूव करें या फिर और जो–जो भी सिगनेटराज हैं, उनमें से कोई भी इस मोशन को मूव कर दे otherwise I will proceed further. (Interruptions). The version of the Chief Minister/Government is taken as correct

according to the rules. You please move your motion otherwise, I will proceed further.

चौधरी ओम प्रकाश चौटालाः अध्यक्ष महोदय, मोशन तो मूव होगी क्योंकि यह आपने ऐडमिट की है लेकिन अध्यक्ष महोदय, आपको गुमराह किया गया। अखबारों में भी यह खबरें छपी हैं कि वहां पुलिस आयी थी, उस मैम्बर को पीटा है तथा उनको पुलिस जबरदस्ती उठाकर ले गयी है। सर, यह हाउस के प्रिवलेज का सवाल है, मैम्बर के प्रिवलेज का सवाल है। आप इस हाउस के कस्टोडियन हैं इसलिए आपके पास तो यह सूचना होनी ही चाहिए। लेकिन आपके पास यह सूचना ही नही है कि वे कहां पर है। अगर आप इनकी बताई गई सूचना को ही सही मानते हैं तो फिर ये आपको भी गुमराह कर रहे हैं। यह एक अहम विषय है इसलिए आपको इस बात का गहराई से पता करना चाहिए। मैं औन–ओथ कह रहा हूं कि पुलिस वहां आयी थी और हमारे उस विधायक को वहां से उठाकर ले गयी। साथ ही जो वहां पर दूसरे कार्यकर्ता थे उनको भी पुलिस के लाठी चार्ज में चोटें लगी हैं।

चौधरी भजन लालः अगर ऐसा है तो आप उनके खिलाफ इस्तगासा कराएं। कानून के मुताबिक कार्यवाही करेगे।

प्रो० छत्तर पाल सिंहः सर, इसके लिए हाउस की एक कमेटी बना दें।

बिजली मन्त्री (श्री वीरेन्द्र सिंह): स्पीकर सर, बिल्कुल बात समझ में नही आ रही कि क्यों 35 मिनट तक ऐसी चर्चा होती

रही। फर्ज करो धीरपाल सिंह जी को अरैस्ट कर लिया गया। क्या यही औब्जैक्शन था कि क्या आपको इत्तलाह आई है? वर्ड इमीजिएटली की क्या इन्टरप्रिटेशन है? एक घंटे, 44 घंटे या 48 घंटे इसका फैसला करना अध्यक्ष महोदय आपका काम है। आप इन्टरप्रैट करें। गुस्ताखी किसी ने कर दी तो आप उसे सजा दे सकते हैं। 35 मिनट तक हाउस की प्रौसाडिंगज में बाधा पड़ी है। दूसरे, मुख्यमंत्री जी ने अब स्पष्ट कर दिया है कि उनको कौन ले गया और कहा कि अगर पुलिस ले गई तो आप इस्तगासा कर दें। पुलिस नही ले गई तो वे आराम से खुद जा सकते हैं, उनके रिश्तेदार भी ले जा सकते हैं या उनके वैलविशर ले जा सकते हैं। वे बेचारे भले आदमी हैं, हर कोई उसको भला कहता है। वह बेचारा इनके बहकवे में आ गया। मैं तो इसलिए गुजारिश करूगा कि अब ओम प्रकाश जी को मोशन मूव कर लेना चाहिए ताकि हाउस का टाइम खराब न हो।

चौधरी ओम प्रकाश चौटालाः अध्यक्ष महोदय, इसमें अजीब किस्म की बातें आई हैं। अगर किसी सम्मानित सदस्य को पुलिस उठा ले जाए और यह कह कर तसल्ली दी जाए कि उसके खिलाफ इस्तगासा कीजिए, क्या यह ठीक है? क्या यह सरकार की जिम्मेदारी नहीं है? जो लोग हाउस के सम्मानित सदस्य को उठा कर ले जाए क्या उनके खिलाफ एक्शन नहीं लिया जाएगा? (विध्न)

मंत्री–परिषद के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर चर्च (पुनरारम्भ)

Mr. Speaker : Now I give you the last chance to

move this motion. Any of the members, who have signed this motion, can move the motion. Either you move the motion or it will be considered as dropped. (Noise & Interruptions).

चौधरी ओम प्रकाश चौटालाः अध्यक्ष महोदय, हम इसके लिए आपका धन्यवाद करते हैं कि आपने इस नो–कंफीडैस मोशन को ऐडमिर किया। मेरी तरफ से और 20 दूसरे सदस्यों की तरफ से लीडर ऑफ दि अपोजीशन इसको मूव दरके इस पर चर्चा करेगे।

श्री जगदीश नेहराः ऑन ए प्यायंट ऑफ ऑर्डर स्पीकर सर। आपने स्पेसिफिकली कहा है कि श्री ओम प्रकाश चौटाला यह मूव करें। आपने यह नही कहा कि ओम प्रकाश या जो 20 आदमी है उनमे से करे। (शोर एवं व्यवधान) यह नो–कंफीडैस मोशन श्री ओम प्रकाश चौटाला क्यों नही मूव करना चाहते? उसका कारण यह है कि ये अनपढ़ हैं, पढ़ नहीं सकते औंर इसलिए सम्पत सिंह को कह रहे हैं।

श्री अध्यक्षः नेहरा साहब, आप बैठ जाइए। जो 21 मैंबर हैं, जिन्होंने दस्तखत किए हैं, उनमें से कोई भी मूव कर सकता है।

Prof. Sampat Singh : Sir, you can see the plight of the Parliamentary Affairs Minister . (Noise & Interruptions). Speaker, Sir, I beg to move—

That this house expresses its want of confidence in the Haryana Ministry headed by Shri Bhajan Lal, Chief

Minister.

Mr. Speaker : Motion moved—

That this house expresses its want of confidence in the Haryana Ministry headed by Shri Bhajan Lal, Chief Minister."

सिचाई मन्त्री (श्री जगदीश नेहरा): अध्यक्ष महोदय, मेरा आपसे अनुरोध है कि आपने इस मोशन पर डिस्कशन के लिये दो घण्टे फिक्स किये थे ताकि हा उस का समय यूंही. इधर उधर की बातों में बर्बाद न हो। यह जो पिछले 40 मिनटों से ये लोग इधर–उधर की बातें मार रहे हैं, ये 40 मिनट इनके खाते में से काटे जाएं, क्योंकि ये इस पर बोलने के लिये सीरियस नही थे क्योंकि इन्होंने हा उस का 40 मिनट का समय यूंही बर्बाद किया है। अब बाकी समय बचा है एक घण्टा, 20 मिनट। एक घण्टा तो इन्होंने बोलना है, इसलिये बाकी जो सदस्य बोलेगे, उनको केवल 20 मिनट का समय ही मिलेगा। उसके बाद मुख्यमन्त्री महोदय जवाब देंगे। तो अब जब प्रो० सम्पत सिंह जी बोलें तो समय को स्ट्रिक्टली ऐडहीयर टू किया जाये। यदि ऐसा न किया गया तो यह अच्छी प्रथा नहीं होगी, मेरी आपसे यही रिक्वैस्ट है। (शोर)

प्रो० सम्पत सिंह: स्पीकर सर, पार्लियामैन्ट्री मिनिस्टर आपको यह कह रहे हैं कि यह ठीक नही होगा। (शोर) This is a direct threat to the Chair. This is very unfortunate. They have crossed all the limits.

श्री अध्यक्षः अब 11 बजकर 10 मिनट पर डिस्कशन शुरू हुई है। तो इसके लिये दो घण्टे का समय दिया जाता है। एक घण्टा तो सम्पत सिंह जी आपको बोलने के लिये चाहिये और एक घण्टा दूसरे मैम्बर साहेबान बोलेगे। (शोर)

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर सर, एक घण्टे में कितने मैम्बर्ज बोल सकेंगे?

डा० राम प्रकाशः अध्यक्ष महोदय, सभी मैम्बर्ज ने बोलना है और यह एक बड़ा ही महत्वपूर्ण मुद्दा है। (खोर)

श्री अध्यक्षः आप जितने पढ़े लिखे हैं उतने इंटरनली डिस्पिलिन्ड नही हैं। (शोर)

डा० राम प्रकाशः स्पीकर सर, मेरी रिक्वैस्ट है कि यह दो घण्टे का समय इसके लिये बहुत थोड़ा है। आप ही बताएं कि सभी मैम्बर्ज कैसे इतने थोड़े समय में बोल पाएंगे। (शोर)

श्री अध्यक्षः मुझे आपको किसी. तरह का जवाब देने की जरुरत नही है। I am not going to oblige you. (शोर) आप बैठिये।

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर सर, डेमोक्रेसी में वोटर्ज को यह अधिकार होता है कि वे अपनीं मन चाही सरकार बनाएं और अगर उस सरकार को न चाहें तो हटा भी सकते हैं। यह पब्लिक का काम है लेकिन सरकार' बनने के बाद सरकार का यह फर्ज बनता है' कि ऐसी व्यवस्था कायम करें जिससे लोगों की भलाई के

काम हो सकें। सरकार लोगों के विकास के काम करे, कानून की इज्जत करे और लोगो की जरूरत के लिये बिजली पानी का प्रबन्ध करे मंहगाई दूर करे, आदि आदि। लेकिन बड़े अफसोस के साथ यह कहना पड़ता है कि यह काग्रेस सरकार हर लिहाज से हरियाणा में बुरी तरह से फेल हो चुकी है। लोग इस से दुखी और परेशान हैं। जो इसकी डांस्टीच्यूशनल मशीनरी थी, उसका ब्रेक डाउन हो चुका है। ऐसे जबरदस्त क्राइसिज आये हुए हैं कि कानून को कोई पूछ नहीं रहा है। बड़े–बडे पुलिस अधिकारी जिन्होंने कानून की रक्षा करनी है, कानून को लागू करना है, वे–ही कानून को अपने हाथों में लिये फिरते हैं और लोगों के साथ हर लिहाज से खिलवाड़ कर रहे हैं। इस तरह से स्टेट के अन्दर मिलीटैन्सी सी आई हुई है। हर तरफ स्टेट के अन्दर अत्याचार बढ़ते ही जा रहे हैं। न्यायालयों के फैसलों की अवमानना हो रही है। सुप्रीम कोर्ट की अवमानना हो रही है। विधानमण्डल का व्यवसाईकरण करके रख दिया है और कार्यपालिका पंगु होकर रह गयी है। इसका नजारा आप तीन दिनों से देख भी रहे हैं। आज के दिन तानाशाही प्रवृत्ति जोरों पर है। हत्याएं, चोरियां, डकैतियां, बलात्कार व अपहरण के केसिज की मिकदार रोज बढ़ती जा रही है, सर। राजनीतिक संरक्षण प्राप्त जो लोग हैं, वे अपराधों में सम्मिलित हैं और उन लोगों के घर अपराधियों के लिये संरक्षण बन गये हैं। स्पीकर साहब, सस्तासीन राजनैतिक लोगों के घर अपराधियों के संरक्षण बन गए। कोई आदमी अपराध करता है तो वह पुलिस की पहुंच से बाहर हो जाता है। यहां तक कि लोगों

को पुलिस कस्टडी में मारा जाता है। इस तरह से आज सारी पब्लिक का विश्वास इनसे उठ चुका है। यही कारण है कि आज सरकार के मुख्य मन्त्री और मन्त्री जब पब्लिक में जाते हैं तो वहां जबरदस्त आक्रोश होता है। लोग इनसे नाराजगी करते हैं और प्रदर्शन करते हैं। जब लोग अपनी मांग ले कर प्रदर्शन करते हैं तो उन पर लाठियां और गोलियां बरसाई जाती हैं। मुख्य मन्त्री की हाजिरी के अन्दर किस तरह से निसिंग के अन्दर किसानों पर गोलियां चलाई गई थीं। तो मन्त्रिमंडल की जब इस तरह से पोजीशन हो जाती है तो वह कैसा राज रह गया। इनकी ब्रूट मैंजोरिटीं हैं। इनकी मंडी में शायद ज्यादा माल होगा लेकिन पब्लिकली ये विश्वास खो चुके हैं। आप इनके मन्त्रिमंडल के विश्वास का हाल देखें। दो दिन से बाढ़ पर बहस हो रही थी। ये मन्त्री बेचारे लौबी में बैठे रो रहे थे और हमें कह रहे थे कि हमारी बातें भी उठाओ। असैबली में आ कर कुछ लोगों ने आसू बहाए जो उनके गोडों तक गए। उन्होंने 6–6 रूमालें आसुओ से भिगो दी। तो जब इस तरह की हालत हो जाए तो उससे क्या अन्दाजा लगाया जा सकता है। हरपाल सिंह जी सीनियर मिनिस्टर हैं। ये कांग्रेस के प्रधान थे। बदकिस्मती से आज ये उधर बैठे हैं (मुख्य मंत्री की कुर्सी के पास) जबकि उनको इधर बैठना चाहिए था। इसी तरह से पीर चन्द जी सीनियर लीडर हैं। ये पहले हरियाणा विकास पार्टी में थे। ये कांग्रेस में इस उम्मीद से गए थे कि इनके हल्के का कुछ सुधार होगा, कुछ तरक्की होगी लेकिन जो हालत इन दो एम० एल०एज० की हुई है उसका अन्दाजा नही

लगाया जा सकता। आज कानून व्यवस्था धरी की धरी रह गई है। मैं मुख्य मन्त्री जी के नोटिस में लाना चाहता हूं कि पीड़ित तो लीला कृष्ण जी भी बहुत हैं। मुख्य मन्त्री जी आप खुद बता दे कि रंगोई नाले के साथ कैसा खिलवाड़ किया गया था। यह घग्गर से निकलता है और इसकी कैपेसिटी चार हजार क्यूसिक है। रंगोई लिंक से पानी वापिस घग्गर में चला जाता है। रंगोंई और घग्गर के बीच 20 गांव पडतें हैं। श्री पीर चन्द द्वारा (विघ्न) स्पीकर साहब, बड़े अफसोस की बात है। आप पीर चन्द जी से औन ओथ पूछ लें। इन्होंने मुझे कहा था कि आपने बोलते समय रतिया का जिक्र नहीं किया।

श्री अध्यक्षः वह तो उन्होंने खुद कर लिया था।

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर साहब, अफसोस यह है कि बेचारे वहां बैठे हैं। ये बहुत सीनियर लीडर हैं। तो मैं कह रहा था कि घग्गर और रंगोई के बीच 20 गांव पड़ते हैं। उसका एक लैफट बैक है और एक राइट बैक है जो गांवों की तरफ है। जब बाढ़ आई तो राइट बैक के किनारे घग्गर के बीस गांव घिर गए। उन लोगों को घेर कर मारा। बन्दूक के साए मे गोलियां चलाई गई ताकि वे दूसरे बैक की तरफ न जाएं और वह पानी ओवर फलों हो कर आगे चला जाए। ताकि उस पानी की गहराई कम हो जाए। उन पर गोलियां चलवा कर 9 औरतो और दो आदमियों को घायल कर दिया। यह बात मुख्य मंत्री जी के नोटिस में है या नहीं यह मुझे पता नहीं है। ये इस बात को वैरीफाई करवा लें। आपका

अपना भतीजा नहर के लैफट किनारे पर मौके पर मौजूद था इसलिए इन एम० एल० एज० की क्या पोजिशन रह गई। उनमें चौधरी पीर चन्द जी के हल्के के गांव भी आते हैं और हरपाल जी के हल्के के गांव भी आते है। स्पीकर साहब आज उन गांवो की दुर्दशा देखी नहीं जाती। वह किसने की सत्तासीन लोगों ने की। यूं गोलियां चलवाई और लोगों को पानी में डुबोया, जैसे किसी आदमी को भींच कर मारना हो, उसी तरह से 20–25 गांवों के लोगो को कानून अपने हाथ में ले कर मारा गया। स्पीकर साहब, ऐसे अनेकों उदाहरण मिल सकते है। आज इस मंत्रिमंडल के बेचारे सदस्यो की बहुत बुरी हालत है। कल आप क्लास वन इंजीनियर्ज के सर्विस रूल्ज के संशोधन बिल के बारे मे इनकी हालत देख रहे थे। उस बारें मे सदन में जो बिल आया था उसके लिए मंत्री. भीं जार जार रो रहे थे। हाउस से बाहर हमसे कह रहे थे कि आप बहुत बढ़िया कर रहे हो। यदि हमें भी ऐसा मौका मिलता तो हम भी ऐसा ही करते। स्पीकर साहब, इन लोगों की इस तरह की पोजिशन हो रही है। इन लोगों की आज जुबान बंद है। इन लोगों ने हमें कहा कि आप हिम्मत करो और इस सरकार के खिलाफ नो–कंफीडैसं मोशन ले कर आओ और अगर सरकार सीक्रेट बैलट करवा लेगी तो हम भी आपका साथ देंगे। इन्होंने हमारे साथ यह कमिटमैट की थी कि हम भी इस सरकार से दुखी हैं, हम भी इस सरकार से परेशान हैं, अगर सीक्रेट बैलट होगा तो हम भी आपका साथ देंगे। इसमें कोई दो राय नहीं, हमें इन लोगों से हमदर्दी है। इसलिए स्पीकर साहब, सब लोगों की

भावनाओं को देख कर, पब्लिक की भावनाओं को देख कर और मत्रिंयों और एम ० एल० एज० की भावनाओं को देख कर हम यह अविश्वास प्रस्ताव, ले कर आपके सामने आए। इसी तरह सै अगर इनके एक–एक महकमे का जिक्र किया जाए तो सभी महकमों मैं दुर्दशा है। सबसे पहले मैं सिंचाई का जिक्र करना चाहूंगा। हरियाणा प्रदेश के पास सिंचाई के तीन साधन हैं। भाखड़ा, यमुना और एस० वाई० एल०। सबसे पहले यमुना का है। हमारे पास एस० वाई० एल० का पानी तो है नही। जहां तक यमुना नदी का सवाल है इसके बारे में बहुत लम्बी चौड़ी बहस हो चुकी है और बहुत वादविवाद चले हैं। यमुना के पानी की आज तो हमे इसलिए जरूरत नहीं है क्योंकि आज उसमें बाढ़ है। आज लोग उसके पानी से डूबे हुए है लेकिन आज से दो महीने पहले पीने के पानी का एक घड़ा पास के गाव से मोल लेकर आना पड़ता था तो यमुना के पानी की यह पोजिशन थी। हमें यमुना का 77 परसैट पानी मिलता था और उसमें यू० पी० और हरियाणा दो स्टेट्स का हिस्सा था लेकिन इस सरकार ने तीन स्टेट्स या हिस्सा और मान लिया। केवल मात्र इन लोगों ने अपनी कुर्सी बचाने के लिए हरियाणा प्रदेश के लोगों के हितों को न्यौछावर कर दिया। इन्होंने केवल 45 परसैटं पानी लेने के लिए अपने दस्तखत कर दिए और आज तक उस एग्रीमैंट की कापी हाउस में नहीं ले कर आ रहे हैं। बड़े–बड़े बुलंद दावे पेश किए थे कि हम हथनी कुण्ड बैराज बनाने जा रहे हैं, उससे पानी बढ़ेगा। आप इस तरह की बात करके क्यों लोगो को गुमराह करते हैं। उसमें किस बात की

स्टोरेज कैपेसिटी है। वह कोई डैम नही है, वह बांध है। जैसे इस बार दिल्ली के लोगों ने प्रचार किया कि हरियाणा प्रदेश के लोगों ने दिल्ली की तरफ हजारो क्यूसिक्स पानी छोड़ दिया था। पानी कैसे छोड़ेंगे वह डैम थोड़े ही है। वह पानी तो अपने आप फलों से गया है, उसको हम रोक नही सकते। हथनी कुण्ड बैराज तो उसकी रिप्लेसमैंट है। पहले जो बैराज था वह कोई डैम नहीं है। आप लोग इस तरह की बातें करके लोगों को गुमराह करने की कोशिश करते हैं कि उससे पानी बढ़ेगा। उसका नींव पत्थर रख दिया था लेकिन आज तक उस पर काम शुरु नही हुआ है। केवल मात्र ये लोग प्रचार पर जिंदा हैं। इन लोगों ने यमुना के पानी का नाश कर दिया। कहां उस पर कंट्रोल हमारा होता था। हम एक तरफ तो रो रहे हैं कि आगरा कैनाल पर हमारा कंट्रोल होना चाहिए लेकिन उस पर यू० पी ० सरकार का कंट्रोल है और दूसरी तरफ हम अपनी दाड़ी दूसरे के हाथों में दे रहे हैं। जान बूझ कर सैट्रल वाटर कमिशन को उसका कंट्रोल दे दिया वरना उस पर हमारा अपना कंट्रोल हुआ करता था।

श्री अध्यक्षः हथनी कुण्ड बैराज तो आप भी शुरू करने जा रहे थे।

प्रो० सम्पत सिंहः लेकिन सर उसका कंट्रोल सैट्रल वाटर कमिशन को नही दे रहे थे। इस एकोर्ड को जो लास्ट क्लाज है यदि मुख्य मली जी ने उसको नही पड़ा है तो विभाग से मंगवा कर अब पढ़ में। स्पीकर साहब, क्योकि 3–3 महीने का

सीजनल बंटवारा है और साफ लिखा हुआ है कि जब यमुना नदी में पानी कम होगा। तो पहले दिल्ली की पेयजल की आवश्यकता को पूरा करेंगे और उसके बाद जो पानी बचेगा उसका चार स्टेट्स के अन्दर बंटवारा करेंगे। दिल्ली की ड्रिकिंग वाटर की नीड बहुत हो चुकी है। दिल्ली के लोगों को पेयजल की आवश्यकता 270 या 275 लीटर पर कैपिटा है। दिल्ली के एक आदमी का पानी वा इतना खर्चा है। तो उन लोगों की जरूरत पहले पूरी करेंगे तो उससे हमारी हालत खस्ता हो जाएगी क्योंकि पानी नहीं बचेगा। यह। कारण है कि उस क्लाज का सहारा ले कर दिल्ली की सरकार कोर्ट में गई थी और कोर्ट ने आर्डर कर दिया कि इनको पानी देना पड़ेगा। स्पीकर साहब, इस समझौते से पहले दिल्ली की सरकार को न्यायालय में जाने का कोई अधिकार नहीं था। इस एग्रीमैंट से दिल्ली की सरकार को न्यायालय में जाने का अधिकार मिल गया और अधिकार मिलने के बाद वह सरकार न्यायालय में चली गई। इसलिए हमें मजबूर हो कर पानी छोड़ना पड़ा। अध्यक्ष महोदय, ये रिवाड़ी की एक पब्लिक मीटिंग में कह कर आये थे कि इससे फालतू एक बुद भी पानी हम दिल्ली को नहीं देंगे। पहले दिन तो यह ब्यान करते हैं लेकिन जब दिल्ली जाते हैं तो इनको कहा जाता है कि पानी नही दोगे तो आपकी कुर्सी भी नही रहेगी। फिर ये कहते हैं कि साहब 100 क्यूसिक्स पानी दे देंगे। रिवाड़ी में जो घोषणा की थी उसके उल्ट दिल्ली में फैसला कर आये। स्पीकर साहब, जहां तक भाखड़ा नहर की बात है उस बारे में भी मैं सदन को बतलाना चाहता हूं 'कि उस

नहर की भी हालत बहुत खराब है। नरवाना साच और बी ० एम० एल० की सफाई भी इस सरकार ने नहीं करवाई है। मैं इनको बताना चाहता हूं 'कि जब हमारी सरकार थी तो उस वक्त इस भाखड़ा नहर की सफाई के लिए 1 करोड़ 90 लाख रुपये हमारी सरकार ने पंजाब सरकार को दिए थे ओर उस वक्त चौधरी वीरेन्द्र सिंह जी भी हमारे साथ थे। उन्होंने 1 करोड़ 70 लाख रुपये का तो 'मुरम्मत पर खर्च का हिसाब बता दिया था लेकिन जो 20 लाख रुपया बचता था, उसका कोई हिसाब–किताब नही है। इस पर टोटल खर्चा 8–10 करोड़ आना था। यदि इसकी रिपेयर समय–समय पर नही की गई तो इसकी कैपेसिटी दिन प्रति दिन घटती चली जायेगी और अब भी घट रही है। यही कारण है 'कि पूरा पानी न मिलने के कारण कभी पूर्व –हरियाणा, पश्चिम हरियाणा, उत्तर हरियाणा या दक्षिण हरियाणा के लोग शोर मचाते हैं। नहरों की सफाई आदि न करसे इन्होंने एक तरह से नहरों का सिस्टम ही खत्म कर दिया है। यही कारण है कि आज नहरों की सफाई न होने के कारण बाढ़ की मार हरियाणा के लोगों पर पडी।

अध्यक्ष महोदय, एस० वाई० एल० का मामला भी बीच में रुका पड़ा है। एस० वाई० एल० के बारे में तो अब अखबार वालों ने भी लिखना शुरु कर दिया है कि एस० वाई० एल० नहर तो एक अवडंड चाइल्ड जैसी है। इस नहर का पंजाब में पोर्शन अभी बनना है। इस नहर के बनने का सारा खर्च सैन्ट्रल सरकार ने देना हैं।

हरियाणा बना नहीं सकता और पंजाब सरकार ने इस नहर को बनाना नहीं। पंजाब सरकार ने तो इसे एक अबन्डंड चाइल्ड की तरह से छोड़ रखा है। इस बारे में मैं यह भी. कहना चाहूंगा कि पंजाब में चाहे कोई भी सरकार आ जाये, चाहे हमारी पार्टी की सरकार आये, बी० जे० पी ० की आये, अकाली सरकार आये या कांग्रेस की आये कोई भी इस नहर को बनाने वाली नही और न ही कोई पार्टी इस नहर के बनाने में इन्ट्रैस्ट ले रही है। इस संबंध में मैं यह क्हना चाहता हूं कि जो फैसला चन्द्रशेखर जी ने 21 फरवरी, 1991 को करवाया था कि इस नहर को बोर्डर रोड आर्गेनाइजेशन बनायेगी, उसे लागू करवाया जाये। इस संबंध में मेरा कहना है कि जब तक किसी सैन्ट्रल एजेंसी से यह काम नही करवायेगे, यह नहर नहीं बनेगी। मैं तो यह भी कहता हूं कि जब तक यह नहर पूरी नहीं हो पाती तब तक नेशनल लौस होता रहेगा। 1000 करोड़ रुपये का हर साल का लौस हरियाणा सरकार को हो रहा है। लाखों एकड़ भूमि इस पानी से वंचित हो रही है इसलिए मैं चाहता हूं कि इसको नेशनल लौस माना जाये। जब तक इस नहर को एक नेशनल प्रोजैक्ट नही माना जायेगा तब तक काम चलने वाला नही है। इस चार साल की अवधि में तो यह सरकार इस नहर को बना नहीं पायी। इन्होने सोनीपत गन्नौर में कहा कि हम इस नहर को बनाने में नाकामयाब रहे। अच्छा बात है कि इन्होंने अपनी नाकामयाबी मानी। हम पूछना चाहते हैं कि इन पिछले साढ़े चार सालों में इन्होने सेन्ट्रल सरकार से यह काम क्यों नही करवाया। इसी प्रकार से मसानी बैराज बनाया था जो

दोहान, साहबी और कृष्णावती रिवर्ज के पानी को रोकने का काम करता है। मैं बताना चाहता हूं कि राजस्थान सरकार ने तो अपने वहां पर कच्चे बांध बना दिये ताकि उनके एरिया मे बाढ़ न आये और पानी का सिचाई के लिए इस्तेमाल किया जा सके। लेकिन हरियाणा सरकार ने कुछ नहीं किया। पिछले सैशन में यह मामला आया था। उन बातों को आज छरू महीने हो गए। उस समय सी ० एम० साहब ने कहा था कि मैं राम बिलास जी को भी साथ लेकर वहां के मुख्यमंत्री से बात करूंगा। मैं जानना चाहता हूं कि इन छरू महीनों में सरकार ने क्या किया। क्या मुख्य मन्त्री जी राम बिलास जी को साथ ले गये थे। क्या उनके गुड आफिस का भी इस्तेमाल किया है। उन कच्चे बांधों की वजह से हमे भारी नुकसान हुआ। अगर ये बांध न होते तो बाढ़ नहीं आती और पानी का लैवल भी नीचे न जाता। बान्ध होने के कारण अगर पानी कम हो तो राजस्थान को फायदा और हमें नुकसान होता है क्योकि हमारा वाटर लैवल और नीचे चला जाएगा। अगर बांध मजबूत न हों तो जब पानी ज्यादा आता है तो वे बांध टूट जाते हैं और हमें नुकसान होता है, जैसा कि इस बारे हुआ इसलिए राजस्थान में लगे बांधों को हटाना चाहिए। स्पीकर सर, उन्होने गेट्स खोल दिए, 11 फुट पानी को दीवार चल कर रिवाड़ी की तरफ आई थी लेकिन सरकार की तरफ से कोई भी ध्यान नही दिया जा रहा है। इसी तरीके से स्पीकर सर, जहां तक पावर का सवाल है वही पोजीशन पावर के मामले में भी है। बार–बार सरकार कहती है कि हम नई जनरेशन करने जा रहे हैं। साढ़े चार साल हो गए हैं,

मुख्य मन्त्री जी का यही. व्यान हाउस में सुनते हुए कि यमुना नगर में नया थर्मल प्लांट लगा रहे हैं, पानीपत में नई छठी यूनिट लगा रहे हैं, हिसार और फरीदाबाद में थर्मल प्लांट लगा रहे हैं लेकिन साढे चार साल में कही पर भी कोई काम नही हुआ है। स्पीकर सर, यमुना नगर मे प्रधान मन्त्री जी से पत्थर भी रखवा लिया। पता नहीं इन्हें इस बात की कोई समझ है या नही लेकिन हमें तो इस बात की शर्म आती है कि देश के प्रधान मन्त्री पत्थर रख कर जाते हैं और फिर भी कोई काम न हो। हिम्मत करके प्रधान मन्त्री जी ने फरीदाबाद से रिमोट कण्ट्रोल सै पत्थर रखा, यमुना नगर तक आने में उनको तकलीफ थी क्योंकि वे बुजुर्ग है। डस बात से हमें कोई ऐतराज नही है लेकिन स्पीकर सर, दो साल से ऊपर हो गए है पत्थर रखे हुए और उस पर कोई काम नहीं हुआ। यह नावाजिब बात है। स्पीकर सर, इसी प्रकार से कप्स और परसो ये जिक्र कर रहे थे कि ये प्रोजैक्ट्स हम किसी प्राइवेट कम्पनी को दे रहे हैं। इस बारे में मैं यमुना नगर थर्मल प्लांट का जिक्र करना चाहता हूं। 700 मैगावाट बिजली जनरेट करने की परपोजल इजराईल की आईजनबर्ग कम्पनी को देने का जिक्र किया। मुख्य मन्त्री जी खुद अप्रैल, 1994 में इजरायल गए थे और वहां इनकी प्रैजैस के अन्दर एक एम० ओ० यू० साईन हुआ था। उस एम ० ओ० यू० के बारे में कहते हुए हमारा गला सूख गया, कहते–कहते हम थक गए कि हाउस में इस बात की रिपोर्ट दें कि वह एम० ओ० यू० क्या है? अध्यक्ष महोदय, यह इनके घर की बात नहीं है, इन्होने अपनी जायदाद का कोई सौदा नहीं किया है, इन्हें बताना

चाहिए कि क्या समझौता हुआ है। क्या ये उस थर्मल का सौदा कर चुके हैं। स्पीकर सर, इसका मतलब यह है कि इनका मोटिव अल्टीरियर है वरना ये उसको हाउस में बताते। स्पीकर सर, यह बेसिकली रौग है कि चीफ मिनिस्टर की प्रैजैस में ऐसा एम ० ओ० यू० साइन हो। स्पीकर सर, ठेके छूटते हैं चाहे वह ठेका किसी पुल, सड़क या वाटर वर्क्स का हो, उसके लिए बाकायदा टैण्डर किये जाते हैं। निर्धारित औफिसर्ज उन टैण्डर्ज को खोलते है। कंसंर्ड पार्टीज ऑफिस में आती हैं। इस मामले में स्पीकर सर, सवाल भजन लाल का नही है सवाल हरियाणा प्रदेश के मुख्य मन्त्री का है। सवाल मुख्य मन्त्री के पद की गरिमा और स्टेट्स का है। मुख्य मन्त्री की एक गरिमा है लेकिन ये किसी प्राईवेट कम्पनी के दफ्तर में जाएं और उनके घर इजराईल में जा कर यह एग्रीमैंट साईन करें तो स्पीकर सर, यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। स्पीकर सर, 6 महीने तक तो ये कुछ कर नहीं पाए फिर उसकी म्याद बढ़ा दी। जनवरी, 1995 में म्याद खत्म होने के बाद प्रोमिजरी एग्रीमैंट भी साईन किया है। दो बार ये म्याद भी बढ़ा चुके हैं। स्पीकर सर, इसका मतलब यह है कि सरकार की क्रैडिब्लिटी गिरती जा रही है। साढ़े चार करोड़ पर मैगावाट के हिसाब से खर्चा आने का इन्होने अनुमान बताया है। हम लोग तो इधर–उधर से पता कर लेते हैं लेकिन हाउस में इन लोगों ने कोई रिपोर्ट रखी नहीं। इसके मुकाबले एन० टी ० पी ० सी ० साढ़े तीन करोड़ रुपए में इसको कर रही है। मैसर्ज नाम्बियार ऐसोशियेट्स ने केरल के अन्दर 3 करोड़ रुपये पर मेगावाट के

हिसाब से 500 मैगावाट बिजली बनाने का कान्ट्रैक्ट किया है। जब इससे सस्ते दाम पर दूसरी कम्पनियां बिजली तैयार कर रही हैं तो फिर उस कम्पनी से करवाने का क्या जस्टिफिकेशन है। स्पीकर सर, कोई बिड नही की, कोई टैण्डर इन्वाईट नहीं किए। स्पीकर सर, इसमें कम्पीटीशन होना चाहिए। एक तरफ तो कह रहे हैं कि हम इण्टरनैशनल लैवल पर गलोबल टैंडर करेंगे, दुनियां में जा कर लोगों को इन्वाईट करेंगे। क्या कम्पीटीशन में और कोई कम्पनी इनको नही मिलीं। फिर स्पीकर सर, हाउस में 2.50 रुपये पर यूनिट के हिसाब से खर्च बताया। 2.50 रुपये प्रति यूनिट का रिकार्ड कहां है, कल को वे कहेंगे कि यह खर्चा 3.50 रुपये प्रति यूनिट आएगा और कहेंगे कि खर्चा बढ़ गया। स्पीकर सर, कम्पनी की जो कण्डीशन इन्होंने मानी है वह भी हमारे लिए सरैन्डर करने वाली बात है। कण्डीशन यह है कि अगर उस ऐरिया में कोई एडीशनल यूनिट लगती है तो वह युनिट भी उसी कम्पनी को दी जाएगी। स्पीकर सर, यह भी हो सकता है कि उस कम्पनी की टर्मज एण्ड कण्डीशन्ज आपको पसन्द हों लेकिन अगर ऐसी कण्डीशन रखेगे तो फिर वह वाइंडिंग हो जाएगी। इसमे अगर देरी हुई तो उसके दोष की जिम्मेदारी हमारी होमी, उस कम्पनी की जिम्मेदारी नहीं होगी। परके भुगतभोगी हम लोग होंगे। स्पीकर साहब, अगर प्लांट लोड फैक्टर 68.5 परसैंट होगा जैसा कि चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी बता रहे थे तो उसके और बढ़ने के बाद हरेक परसैंट पर .7 इन्सैंटिव कमीशन कम्पनी को जायेगा। स्पीकर साहब, प्लांट लोड फैक्टर बढ़ता है तो कम्पनी को चाहिए कि वह

इन्हें रिबेट दे क्योंकि कम्पनी का खर्चा कम आता है। लेकिन यह सरकार एक नई रिवायत डाल रही है हलांकि यह इनके बस की बात नही है। यह गवर्नमैंट आफ इण्डिया की तरफ से बात आई कि यी कोई जरूरी नहीं है। स्पीकर साहब, बद–इन्तजामी की वजह से, करप्शन की वजह से, मिस– मैनेजमैंट की वजह से आज बिजली बोर्ड में घाटा बढ़ता जा रहा है। आज अढ़ाई हजार करोड़ रूपए का घाटा होगा जो हमारे वक्त मे केवल अढ़ाई सौ करोड़ रुपए का था। यह सब इस सरकार की वजह से है। इन्होंने हर क्षेत्र की बिजली के रेट सादे तीन गुणा बढ़ा दिए है। ऐसे तो इनके हालात रहे हैं। हिसार और फरीदाबाद थर्मल प्रोजैक्ट का तो पता ही नही कि उसका क्या होने जा रहा है।

स्पीकर साहब, अब मैं एक्साईज एंड टैक्सेशन के बारे में कहना चाहता हू। आज यह विभाग लछमन दास अरोड़ा जी के पास है। इस विभाग में भी एक्स– पैरिमैंट चल रहा है। यह विभाग कभी करतार देवी जी और कभी ए० सी ० चौधरी जी के पास दे दिया जाता है। इस महकमें की बहुत बुरी हालत हो चुकी है। लछमन दास अरोड़ा जी ने इसमें जैसी मेहनत की है, इस बारे में दो राय नहीं है। यह डिपार्टमैंट इतना बिगड़ा हुआ था कि इसमें ये बेचारे कुछ भी नहीं कर सकते हैं। दूसरा इनको इसका कोई ज्ञान भी नहीं है। इन्होंने पुलिस सुधार का काम तो किया हुआ था लेकिन एक्साईज एंड टैक्सेशन का इन्हें कोई ज्ञान नहीं है। इन्हे इन्डस्टरी डिपार्टमैंट की पूरी नौलेज थी उसमे इन्होंने सुधार

किया, बहुत ही बढ़िया फैक्टरी इन्होने सिरसा के अन्दर लगाई है। लेकिन ये एक्साईज एंड टैक्सेशन के अन्दर क्ले हो रहे हैं। (विघन) अध्यक्ष महोदय, सीरा एक्साईज डिपार्टमैंट के अन्डर आता है। सीरे के बारे में एक नैशनल पालिसी है कि यह टोटली डी–कट्रोल होना चाहिए। हम बार–बार यह मांग करते हैं कि गवर्नमैंट ने इसको आधा–आधा क्यों किया हुआ है। इनका मोटिव क्या है? अध्यक्ष महोदय, व्यार ज्यादा से ज्यादा ये कुछ करना चाहते हैं तो जो दवाईयां बनाने वाली फैक्ट्रियां हैं, उनको आप सीरा कंट्रोल रेट पर दे दें, लेकिन इन्होंने दारू वाली फैक्ट्रियो को कंट्रोल रेट पर क्यों रखा हुआ है? मैं यह नहीं कहता कि वह हिसार की फैक्टरी है या कोई और फैक्टरी है। (घंटी)

श्री अध्यक्षः आपका टाईम खत्म हो गया है। आप बैठ जाएं। दूसरी पार्टी के भी मैम्बर्ज हैं उनको भी बोलने का टाईम देना है।

प्रो० सम्पत सिंहः सर, अभी 3– 4 महकमों का ही जिक्र आया है। मुझे अभी और बोलना है। अध्यक्ष महोदय, सीरे के ऊपर कंट्रोल हटना चाहिए और इसको डाइ–कन्ट्रोल करना चाहिए। इसी तरह से सोशल वैल्फेयर का महकमा है। इसमें ओल्ड एज पेंशन का इन्होने बुरा हाल कर दिया है। इसके साथ ही मधुबन में एक अनाथ आश्रम बना हुआ है और यह छोटे–छोटे असहाय बच्चों के लिये है। इन्हेंने वहां पर उनकी इतनी दुर्गति की है कि बच्चों को पीट–पीट कर वहां से भगा रहे हैं। किसी को जेल में डाला है

और किसी को कुछ कर रहे हैं ताकि वहां पर जमीन खाली हो जाए। अर्पणा आश्रम किसी प्राईवेट आदमी का है और ये चाहते हैं कि यह जमीन उसके हाथों से चली जाए। फिर ये कह देंगे कि हमसे यह आश्रम चल नहीं पाया है। इसी तरह से कोर्ट ने फैसला दिया हुआ है कि जो मकान ओर दुकानें सड़क के साथ हैं, उनको वहां से हटा दिया जाए। आज ये उसी का सहारा लेकर मकान और दुकानें तुड़वा रहे हैं। लेकिन मैं समझता हूं कि जिन लोगों के नक्शे टाऊन एंड कंट्री प्लानिंग डिपार्टमैंट ने पास कर दिए थे, म्यूनिसिपल कमेटी ने जिनको अलाऊ कर दिया था, उनके मकान और दुकानें नहीं तोड़ी जानी चाहिए। अध्यक्ष महोदय, नक्शा पास करवाने से पहले ही बता दिया जाता है कि यह हाउस बिल्डिग सोसाइटी है। इस बारे में मैं मुख्यमन्त्री की को बताना चाहूंगा कि आपके परिवार में से किसी की जमीन अग्रवाल मोड पर थी, मुझे यह पता नहीं कि वह किस के नाम पर थी। उसको कुछ लोगों ने खरीदा था। स्पीकर साहब बेचना और खरीदना कोई बुरी बात नहीं है। उन लोगों ने वहां पर हाउस बिल्डिंग सोसाइटी बना ली और इसी तरह से और भी लोगों ने अपनी–अपनी सोसाइटीज बना ली। वहां पर जो दुकानें बनी हुई हैं, आज उनको नोटिस आ रहे हैं। तो मुख्यमन्त्री जी कम से कम आपकी जमीन पर जो दुकानें बनी हैं उनको तो आप गिराने की कोशिश न करें। (विघ्न)

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, मैं इनको बताना चाहूंगा कि वे दुकानें सड्कों के किनारों पर बनी हुई होंगी।

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर साहब, इसी तरह से मैं एम्पलाएमैंट का जिक्र करना चाहता हूं। वैसे तो एम्पलाएमैंट के लिये बोर्ड बने हुए हैं और बोर्डच में निश्चित दाम हैं। वहां पर लोगों दारा दाम दिया जाता है और वे दाम के हिसाब से नौकरी पर लग जाते हैं। लेकिन कई नौकरियों में तो बहुत ही बुरी हालत है। (विघ्न) खुद मुख्यमन्त्री जी ने बिश्नोई मंदिर में भाषण देते हुए कहा था। जब पब्लिक सर्विस कमीशन के मैम्बर नरसिंह बिश्नोई इनके पास आए थे और उन्होंने इनसे कहा कि मनीराम गोदारा के कोई नाती हैं उनको डाक्टर या किसी और पोस्ट पर लगाना है। चूकि वह बिश्नोई जाति के हें इसलिये अगर आप कहें तो मैं उनको लगा दूं। चूकि वहां पर बिश्नोई जाति की मीटिंग थी इसलिये इन्होंने कहा कि उसको लगा दो। स्पीकर सर, मन्दिर में खुद मुख्यमन्त्री जी ने माना कि मैंने सिफारिश की है। ये अपना जवाब देते समय बता दें कि इन्होंने ऐसा कहा था या नही कहा था। स्पीकर सर, इस तरह से अब नौकरियों की क्या हालत रह जाएगी? आज एम्पलायमैन्ट में एक्सप्लायटेशन हो रहा है। लोगों को घरों से काम करने के लिये बुला लिया जाता है लेकिन उनको काम नहीं दिया जाता। यहां पर हरको बैक के चेयरमैन साहब बैठे हैं, वे एक आदमी को अपने गांव से काम दिलवाने के लिये बुला लाए लेकिन बाद में उस आदमी की इन्होंने क्या हालत बनायी वह तो वही आदमी जाने। स्पीकर सर, इसके अलावा जहां क्य कानून और व्यवस्था का सवाल है, वह सारी चरमरा गयी है। इनके अपने कांग्रेस पार्टी के बहुत बड़े सीनियर लीडर जो कि सैन्टर में होम

मिनिस्टर भी हैं, ने सूरजकुंड में पंचायत में हरियाणा की कानून व्यवस्था के बारे में असंतोष जताया था और कहा था कि मैं अब खुद इसकी तरफ ध्यान दूंगा। स्पीकर सर, इसका मतलब तो यह है कि हरियाणा में होम मिनिस्टर का इंटरवीन करने का समय आ चुका है। आज इस तरह की पोजीशन हरियाणा में हो चुकी है। इसी तरह से वोहरा कमेटी की रिपोर्ट लोकसभा में रखी गयी है। उस रिपोर्ट में हरियाणा के संदर्भ में कहा गया है कि हरियाणा में पुलिस अपराधियों और राजनीतिज्ञों की मिली भगत हो गयी है। स्पीकर सर, इसी तरह से कादमा में इन्होंने जो किया वह सब जानते हैं। कादमा में जो पोजीशन हुई वह क्या सही थी? कादमा में किसान क्या मांग रहे थे? वे वहां बिजली के कनैक्शन्ज मांग रहे थे तथा जो इन्होंने बिजली के रेट्स बढ़ाए हैं उससे उनके बिजली के दो या अढ़ाई करोड़ रुपये के 'बिल्ज बकाया थें। सरकार ने उनके बिजली के कनैक्शन काट दिए थे। उनको पीने का पानी भी नही मिल रहा था। वे अन्धेरे में मर रहे थे ऊपर से सरकार ने उनके ऊपर गोलियां चलवा दी। एक तरफ तो साढ़े चार सौ करोड़ रुपये गवर्नमैंट डिपार्टमैंट की तरफ पब्लिक अंडर टैक्रिज की तरफ बकाया पड़े हैं तथा डेढ़ सौ करोड़ रुपये बड़े बड़े इंडस्ट्रियलिस्टस की तरफ बकाया पड़े हैं और दूसरी तरफ दो या अढाई करोड़ रुपये वाले छोटे छोटे लोग गांव के अन्दर थे उनको सरकार ने गोलियों से भूना। इन किसानो पर किसी के पास तो दो हजार रुपए के और किसी के पास अढ़ाई हजार रुपये के बिल्ज बकाया थे। वहां पर सरकार ने पांच लोगों के खून से

होली खेली और सारी भिवानी की जमीन इन्होंने लाल कर दी। वहां पर जो सूबेदार मरा था उसके बारे में मैं वहां पर गया था। तो गांव के लोगों ने कहा था कि यह आदमी 1966 और 1971 की दोनों लड़ाईयों मे देश के लिये, लड़ा वहां पर तो यह आदमी मरा नहीं लेकिन इसकी हरियाणा की पुलिस की गोली से मौत लिखी थी। सर, इस तरह की पोजीशन आज इन्होंने कर रखी है। ईवन फल्ड से प्रभावित लोगों पर भी इन्होंने लाठी चार्ज और गोलियां चलवायी है। स्पीकर सर, करनाल और यमुनानगर में तो लोग आज के दिन भी जितने पीड़ित हैं शायद ही कोई उतना पीड़ित हो।

श्री अध्यक्षः आपका टाईम हो गया है इसलिये आप सिर्फ पांच मिनट और बोल लें।

श्री जगदीश नेहराः स्पीकर सर, मेरा प्वायंट आफ आर्डर है। मैं आपसे अनुरोध करुंगा कि आपने इस मोशन पर बोलने के लिये दो घंटे अलाट किए हैं। अगर इतने समय में से चालीस या पचास मिन्ट ये ही ले लेंगे तो अभी तो 6 पार्टीज और हैं, इसलिये फिर उनके बोलने के लिये टाईम नही मिलेगा। अतरू आप समय का ध्यान रखें।

श्री अध्यक्षः सम्पत सिंह जी, आपको बोलने के लिये केवल पांच मिनट और दिए जाते है।

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर सर, मैं कह रहा हूं कि करनाल और यमुनानगर में आज के दिन भी किसी भी शहरी के आसू नहीं सूख रहे हैं। द्रोपती काण्ड और रेणुका काण्ड इतने जबरदस्त काण्ड हैं कि इन काण्डों को देखकर तो पिछले काण्डों को भी लोग भूल गए हैं। सर, इसमें कोई दो राय नहीं है कि पुलिस ऐडमिनिस्ट्रेशन फेल हो गया है और इसलिये आज बार–बार यह मांग उठ रही है कि सारे केसिज इंक्वायरी के लिये सी ० बी ० आई० को जाने चाहिए कई बार तो सरकार को लोगों के दबाव में आकर केस सी ० बी ० आई० को देने पड़े और कई बार सुप्रीम कोर्ट के आर्डर होने के बाद कुछ केसिज को सी ० बी ० आई० को देना पड़ा। सर, 12–12 केसिज सी ० बी ० आई० को जा चुके है। आज करनाल और यमुनानगर में भी यह मांग उठ रही है कि ये दोनों केसिज सी ० बी ०आई० को दिए जाएं। द्रोपदी केस के बारे में मैं कहना चाहूंगा कि आजकल जो हमारे माननीय मन्त्री गुप्ता जी हैं, जो पहले चेयरमैन हुआ करते थे, यहां पर बैठे हैं। इनके अपने घर की दुकानों में कांग्रेस आई का दफतर था। वहां पर वह द्रोपदी नाम की लड़की मुलाजिम थी। उस लड़की का चार जुलाई से अब तक पता नही है। सर, ये उसको तनख्वाह कहां से दे रहे थे यह मैं बताना चाहूंगा। वह लड़की काम तों कांग्रेस दफ्तर में करती थी लेकिन उसको तनख्वाह आनन्द सिंह डांगी के पी ० डब्ल्यू० डी ० महकमे से मिल रही थी। (विध्न) वहां पर बाकायदा इल्जाम लगाया जा रहा है कि किसने उसको गायब किया है। स्पीकर सर, उस लड़की की मां ने

बड़े दुखी होकर कहा है कि लडकी जय प्रकाश के पेट में है। जय प्रकाश जब चाहे उसे पेश कर सकता है। इससे फालतू डायरैक्ट लांछन उसकी मां और क्या लगाएगी? उसकी मां ने– यह भी माना है कि जय प्रकाश गुप्ता ने स्वयं मुझे कहा था कि नौकरी पक्की कराने के लिये इसे 3–4 बार चण्डीगढ आना पड़ेगा, आखिर किस लिये स्पीकर सर? इसी तरह से और भी उंगलियां उठती है। पी ० डब्ल्यू ० डी ० महकमा तनख्वाह देता रहा। सूरजमल नाम का एक लड़का पुलिस में है, वह उस लड़की के यहां किराए पर रहता था। जिस दिन लड़की गायब होती है उसी दिन वह लड़का भी गायब हो जाता है। 15 दिन लड़का गायब रहता है उसको भी एक मन्द्री ने जांच मे शामिल होने से बचा लिया। अब आप बताइए कि इन्टैरोगेट नहीं करेंगे तो कैसे आउट कम होगा। इस तरह के काम मन्त्रियों के संरक्षण में होने लग जाएंगे तो बताइए कि किस बात का कानून रह जाएगा। इसलिये आज आप हाउस मे आर्डर करें कि इस मामले की जांच सी ० बी ० आई० से कराई जाए। इसी तरह से रेणुका का जिक्र आया। 26 अगस्त की बात है वह 10 जमा 1 की एक छात्रा थी। अपने घर दो लड़कियों के साथ आटो में जा रही थी। दोनों लड़कियां रास्ते में उतर गई। उनके उतरने के बाद उस लड़की को उठा लिया गया और उसके बाद शाम को उसकी लाश रेलवे स्टेशन केपास मिलती है। एक बोरी के अन्दर बन्द लाश मिली। इतनी छोटी उम्र की लड़की थी, कालेज मैं पढ़ती थी। जब मैडीकल रिपोर्ट आई तो सर शर्म से झुक गया। पहले उस लड़की के साथ बलात्कार किया, फिर मर्डर

किया और लाश को बोरी में बन्द करके डाल दिया। वहां के लोग बार–बार नाम लेकर कह रहे हैं कि फलाने को पकड़ो। कोई सुनील नाम आता है, उसके लिए कहते हैं कि उसको पकड़ो लेकिन कहते हैं कि उसको पकड़ा नहीं जाएगा। स्पीकर सर, अपराधी संरक्षण लिए हुए हैं। एक सीनियर एम० एल० ए ०, है, उसको आज कल अच्छे पद दे रखे हैं, वे दोपहर को उसके साथ खाना खाते हैं इस तरह की जो उंगलियां उठती हैं, they should come out with facts, Sir. उसे आज तक गिरफ्तार नही किया गया। इस तरह से सरकार माल लूटती रहे, लड़कियों की इज्जत लूटती रहे लोग यह बर्दाश्त नहीं करेगे। आज लौंग पुलिस की कस्टडी में मारे जा रहे हैं। एच० एस० ई० बी ० का एक कर्मचारी अम्बाला में मारा गया लेकिन कोई कार्यवाही. नहीं हुई। पटाखा फैक्ट्री में 30 लोग मार गए। डी ० सी ० लाईसैन्स इशू नहीं कर सकता लेकिन उसने लाईसैन्स इशू कर दिया। उसे केवल नोटिस दिया गया है जुलाई– 95 का यह वाक्या है लेकिन कोई कार्यवाही नही हुई है। इस बात से बड़ी तकलीफ होती है। जब फैक्ट्री के मालिक के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज हुई है, उसे इन्होंने पकड़ा या छोड़ा यह तो ये ही जाने लेकिन डी ० सी ० के खिलाफ भी केस दर्ज होना चाहिये था उसने इतना बड़ा इललीगल काम किया है जिससे 30 लोगों की जानें चली गई और भी कई जगहों पर ऐसे हालत इन लोगों ने कर रखे हैं स्पीकर सर। सरकार को कानून व्यवस्था पर व एडमिनिस्ट्रेशन दर पूरी तरह से काबू रखना चाहिये। सी ० बी ० आई० को कैसे कैसे केस जा रहे हैं क्योंकि

आपको पता है कि यह सरकार इस क्षेत्र में बिलकुल नाकाम रही है। मैं बताता हूं कि एक केस सुप्रीम कोर्ट के अन्दर सी ० बी० आई० जांच के बाद गया जिस में हिसार के एस० पी ० ऐडी शनल एस० पीं ० व तीसरे इंस्पेक्टर को सुप्रीम कोर्ट के जजों ने सजा सुनाई और उन तीनों ने जेल भी काटी। सरकार को इस ओर कोई ऐसा पग उठाना चाहिये था जिससे आगे से ऐसे हालात कभी न पैदा हो और न ही कोई पुलिस अधिकारी' गलत काम करने की जुर्रत ही कर सके। ऐसे लोगों को नौकरी मैं दुबारा लेना ही नहीं चाहिये था। ऐसे लोगों को तो ऐसी सजा मिलनी चाहिये थी कि वे कभी भी ऐसा जुल्म करने का साहस ही न कर सकें और लोगों के साथ खिलवाड़ न कर सकें। लेकिन सरकार ने इस मामले में बिल्कुल चुप्पी ब्ही साध रखी है। सरकार उन लोगों को डिसक्रेज करने की बजाये ऐनक्रेज करना चाहती है क्योंकि आगे भी इस सरकार ने ऐसे लोगों से गल्त काम करवाने हैं। इसी तरह से फरीदाबाद के पुलिस इंस्पैक्टर ने ऐसा ही किया उसने एक बड़े इंडस्ट्रियलिस्ट को झूठे केस में पकड लिया जिसका नाम था श्री उमाशंकर। उसके मर केस क्या बनाया कि इन्होंने किसी की सोने की चेन छीन ली है। जिसके नाम से एफ० आई० आर० दर्ज करवायी गयी उसका नाम है सुरजीत और उसका पता दिल्ली के एक बहुत बड़े डालिमा नामक उद्योगपति का है। बाद में श्री उमाशंकर सुप्रीम कोर्ट में गये। सुप्रीम कोर्ट ने सी ० बी ० आई० से उस इंस्पैक्टर के खिलाफ जांच करवाई। उसका नाम था ईश्वर सिंह, जिसकी कल रिपोर्ट आई हुई थी। फिर सी ० बी ० आई०

उस इंस्पैक्टर को डायरैक्ट अरैस्ट करके ले गई। इसका मतलब यह हुआ कि उद्योगपति के खिलाफ जो इस सरकार ने साजिश रची थी उस में सरकार को मुंह की खानी पड़ा। अगर इस तरह से लोगों के खिलाफ झूठे मुकदमे बनाये जाएंगे तो इस सरकार के बारे में पब्लिक क्या इम्प्रैशन लेगी? इतना होने पर भी यह सरकार ऐसे पुलिस वालों को ऐनक्रेज करती है। कितनी हैरानगी की बात है कि एक अफसर का पांव जेल से बाहर आते ही उसको रेलवे मे पोसटिंग दे दी जाती है, कितनी शर्म की बात है। मैं आपको क्या–क्या बताऊ कि एक तरफ तो चौधरी देवीलाल जी के पोते और चौटाला साहब के लड़के के ऊपर फालस केस बनाये जाते हैं और दूसरी ओर यह सरकार जिनके खिलाफ अपराध के बलात्कार के और चोरी डकैती के केसिज हैं, उनको संरक्षण देती है (घंटी) मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि श्री अजय चौटाला जोकि राजस्थान असैम्बली के मैम्बर हैं और दूसरे उनके छोटे भाई अभय चौटाला के खिलाफ भी ये क्या फाल्स केस बनाते है। अभय चौटाला जिला परिषद का वाईस चेयरमैन है और ब्लाक समिति का चेयरमैन है। उसके खिलाफ केस बनाया कि उन्होंने रेल पटरी से फिश प्लेटस उखाड़ दी हैं। फिश प्लेटस उखाड़ने वाले इनके अपने होम मिनिस्टर है। वे यहां पर बैठे हैं और उन्होने ऐडमिट भी किया है कि मैंने पानी का रुख शहर की तरफ किया था। वह बैठा यहां पर दनदना रहा है, दूसरों को धमका रहा है। इसके साथ–साथ मैं यह भी कहना चाहता हूं कि चौधरी देवीलाल जी जैसे महान नेता, जिनका अपना सामाजिक जीवन है, उनके

खिलाफ केस बनाते हैं 307 का। उस केस में गवाह कौन रखे हैं अवतार सिंह और गुलाब सिंह। ये दोनों नेहरा साहब के अपने हल्के के हैं जो कि रोड़ी के रहने वाले हैं। उसकी बैक ग्राऊंड क्या है? 21 साल कफ इनके परिवार के खिलाफ उनको इस्तेमाल करते रहे और चौधरी देवीलाल जी के खिलाफ गवाही दिलवाई। फिर एक बार चौधरी रणजीत सिंह जी के खिलाफ भी गवाही दिलवाई उनकी दूसरी बैक ग्राऊड यह है कि वे टाडा में, रेपस में 302 व 307 मैं क्रिमीनल्ज है।

श्री जगदीश नेहराः स्पीकर साहब, यह सब असत्य कह रहे है। (शोर)

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर सर, ये बचि में कैसे आपकी इजाजत के बिना बोल रहे हैं। (शोर) स्पीकर सर, इनके टाइम के केसिज है। इन लोगों के खिलाफ दिनांक 5– 6– 92 का और 29–6– 92 का टाडा की सैक्शन तीन और चार के तहत आतंकवादियों को पनाह देने का केस है। इसी तरह से रेप के केसिज भी हैं, दफा 389 और 376 में। 30–4– 93 का 307 का और 26– 7– 93 का 302 का केस है। सरकार ने अन–आथोराइज गनमैन उन्हें दे भी रखे हैं। इससे फालतू स्पीकर सर, और क्या हो सकता है? ऐसे–ऐसे लोगों को यह सरकार इन कामों के लिये इस्तेमाल कर रही है जब ये पब्लिक में जाएगे तो अवश्य नंगे हो जाएंगे 1 इसीलिये तो अखबार में यह हैडिंग आया है कि हरियाणा पुलिस इज इन जिटरज। इसी तरह से एक केस जितेन्द्र पहल का

आज हाई कोर्ट के अन्दर चल रहा है। कोर्ट इंक्वायरी रिपोर्ट का ऐफीडेवट मांगती है लेकिन हरियाणा पुलिस इससे भाग रही है कि झूठा ऐफीडेविट कैसे दे दें क्योकि वह तो एक फालस पुलिस एनकाऊटर था जिसमे उन लोगों को मारा दिखाया गया है उस कारण से आज हाई कोर्ट के अन्दर फाल्स ऐफीडेबिट नही दे रहे हैं। इनके अपने ही आई० जी ० रोहतक की रिपोर्ट है जिसमें उन्होंने कहा है कि यह पुलिस का फाल्स ऐनकाऊंटर था।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, जो मामला सब जुडिस हो उसके बारे में यहां पर कोई बात नहीं कहनी चाहिए।

श्री अध्यक्षः अगर यह सब जुडिस है, तो यह डिस्कस नही करना चाहिए।

श्री जगदीश नेहराः सर, मेरा प्वायंट आफ आर्डर है। स्पीकर साहब, जिन किस्सों का इन्होंने जिक्र किया है, उनका सदन में जिक्र नही होना चाहिये क्योंकि वे मामले या तो हाईकोर्ट में हैं या सैशन कोर्ट में पैडिग हैं। मेरी आपसे प्रार्थना है कि यदि ये उनका जिक्र करेंगे तो उनको एक्सपंज किया जाए।

श्री अध्यक्षः ठीक है।

प्रो० सम्पत सिंहः तो स्पीकर साहब, जो लोग ईमानदार हैं उनमें एक किस्म की डिमौरेलाईजेशन है और जो लोग बेईमान हैं वे आगे बढ़ कर इस किस्म के काम करते हैं। इसलिये कहा है कि Haryana Police in Jitters.

श्री अध्यक्षः आपका टाईम हो गया है, आप बैठिए। अब चौधरी छतर सिंह चौहान बोलेंगे।

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर साहब, मुझे कनकलूड तो कर लेने दें। मैं एक दो बातें कह कर अपनी बात खत्म करुंगा। मैं कह रहा था कि इस वजह से डिमौरेलाईजेशन है। वे झूठे ऐफीडेविट नही देना चाहते। ये कह रहे हैं कि इससे हट कर दूसरी बात कर लें। इसलिये मैं जमीनों के बारे में जिक्र करना चाहता हूं। इन्होंने सारी जमीनों पर कब्जा कर लिया है केवल माल सरकारी इमारतें बची हैं जिनको काबू किया जा सकता है। अम्बाला कैन्ट में सी ० आई० डी ० का आफिस है वह खाली करवा लिया गया और किसी एम ० पी ० के नाम पर पावर आफ अटार्नी कर दी। अब बताएं इसमें किसी की क्या इटेशन हो सकती है। लाखों की जमीन खाली करवा ली। एक्सपोर्ट कार्पोरेशन का चण्डीगढ़ में दफ्तर है उनके दफ्तर भी खाली करवाए जा रहे हैं। यह बिल्डिगें सस्ते रेट पर किराए पर ली हुई थीं। अब इनको दूसरी जगह लेनी पड़ेगी जिस वजह से स्टेट एक्सचौकर को नुकसान होगा। ये कहते हैं अगर किसी ने कोई नाजायज कब्जा किया है तो वह पंच या सरपंच नहीं बन सकता लेकिन यहां लोग मन्त्री तक बने बैठे है। नाहर पुर मौजा जो करनाल के पास है वहां के तेजेन्द्र पाल सिंह सन आफ शमशेर सिंह ने पंचायत की जमीन पर कब्जा कर रखा है। उसकी गिरदावरी की कापी मेरे पास है। तो क्या ऐसा आदमी मन्त्री रहने के लायक है। ऐसी जमीन से तो पंचायत को आमदनी

होती है जिससे वह अपना काम चलाती है लेकिन उस जमीन पर कब्जा कर रखा है। इसके अलावा आज प्रदेश में लोगों को दफनाने के लिये भी जगह नही है। एक बच्चा जाकिर हुसैन सन आफ नेक मुहग्मद टे हाना में था वहां वह बच्चा मर गया लेकिन उसको दफनाने के लिये कब्रिस्तान में जगह नही मिली क्योकि उस पर कब्जा हो चुका था। वे लोग मुख्य मन्त्री जी की कोठी हिसार गए। पता नहीं इनको वे मिले कि नही। मैं भी उन दिनों वहां था। मैंने पूछा कि कैसे मरे हुए बच्चे को लिए बैठे हो। उसने रोते हुए कहा कि मुझे पता नहीं था कि अल्ला, यह वक्त भी मुझे देखना पड़ेगा कि मुझे बच्चे को दफनाने के लिये दो गज जमीन भी नही मिलेगी। स्पीकर साहब, आज इस तरह के हालात हो रहे हैं। इन लोगों ने एच० पी ० एस० सी ० के हालात भी बहुत खराब किए।

इन लोगों ने एच० पी ० एस० सी ० के मैम्बर्ज के अस्तीफे करवाए उन मैम्बइर्ज के बारे में सरकार ने कहा कि उन्होंने अपने आप अस्तीफे दिए है। ठीक है मान लिया उन्होंने अपने आप अपने अस्तीफे दिए यह बात भी ठीक है कि उन लोगों पर आपका प्रभाव था और आपने उनसे कहा कि छोड़ जाऔ वे छोड़ गए, कोई बात नहीं। लेकिन स्पीकर साहब, they all have been awarded उसके केवल एक चेयरमैन बचे थे उस चेयरमैन को भी इन्होने बागवानी का एक बोर्ड बनाकर उसका चेयरमैन बना दिया है। बाकी के तीन मैम्बर्ज को पहले ही ये कुछ न कुछ बना चुके हैं। एक मैम्बर को एजुकेशन बोर्ड का मैम्बर बनाया है, दूसरे

को हैंडलूम कार्पोरेशन का बनाया है और तीसरे को शूगर फैड का बनाया है। इस तरह से they all have been awarded यदि यही तरीका रहा तो फिर एच० पी ० एस० सी ० की इनडिपैंडैंट वर्किंग कैसे रहेगी। इसके अलावा मैं एक बात यह भी कहना चाहूंगा कि इन्होंने 20 लाख सीमेंट के कट्टे खरीदने थे। हाई पावर्ड कमेटी के अध्यक्ष मुख्य मन्त्री होते हैं।

12.00 बजे

श्री अध्यक्षः सम्पत सिंह जी अब आप बैठ जाएं। अब छतर सिंह चौहान बोलेगे। (शोर)

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर साहब, आप मुझे एक मिनट का टाईम दे दें मैं अपनी स्पीच कनकलूड कर लुगा। (शोर)

श्री जगदीश नेहराः स्पीकर साहब, डनको बोलते हुए बहुत देर हो चुकी है, हमें भी बोलना है। ये एक मिनट करके बोलते ही जा रहे है। (शोर)

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर साहब, आप मुझे एक मिनट का टाईम दे दें। (शोर)

श्री जगदीश नेहराः स्पीकर साहब, यदि आप इस तरह से इनको टाईम देते रहे ते हमें बोलने के लिए टाईम नहीं मिलेगा। (शोर)

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, एक घंटा मुझे बोलना है। इनको बोलते हुए एक घंटा हो गया है।

श्री अध्यक्षः सम्पत सिंह जी, आप एक मिनट में अपनी बात कहें।

प्रो० सम्पत सिंहः ठीक है जी। स्पीकर साहब, मैं कह रहा था कि 20 लाख सीमेंट के कट्टे खरीदने थे। सीमेंट की 33, 43 और 53 की डिग्रियां होती हैं 1 इनके पास 33 डिग्री. का नोटिस गया था जिसका सबसे लोएस्ट टैडर था सरकार नही चाहती थी कि उसको सप्लाई का काम दिया जाए इसलिये सरकार ने 43 डिग्री का बहाना लगा करके दो रुपए कट्टे के हिसाब से जोड़ कर कोई जे ० के० नाम की सीमेंट की इन्डस्ट्री है, उसको आर्डर दे दिया जिसके कारण 40 लाख रुपए का नैट चूना लग गया। अब इस बारे में मुख्य मन्त्री जी जाने कि इनका कौन औफिसर दोषी है और कौन मन्त्री दोषी है लेकिन इस्मे 40 लाख रू० का गोलमाल हुआ है। स्पीकर साहब, अब मैं कोआप्रेशन डिपार्टमैंट के बारे में लास्ट सटैसं कहना चाहूंगा। कोआप्रेशन डिपार्टमैंट के बारे मे मैं कुछ नही कहूंगा लेकिन जो कुछ राम सिंह बराड़ जनसला के लिखते हैं उसके बारे में उनको कोआप्रेशन डिपाटमैंट में इन्क्वायरी औफिसर लगा दें। उन्हेंने कोआप्रेशन डिपार्टमैंट की पोल खोल रखी है। इस डिपार्टमैंट के अन्दर जितनी बू आ रही है उसको उन्होने बाहर निकाल कर बहुत जब्रदस्त एक्सपोजर किया है। मेरा तो यही सुजैशन है कि उनको

इस विभाग का इक्वायरी आफिसर लगा दें। अल्प लोगो को अगर लोगों में जाना है, अगर आप अपनी आत्मा को जीवित रखना चाहते हो तो आप अपनी आत्मा को झकोरो और अपने कौशियस को क्लीयर करके अपनी आत्मा को ऊपर उठाओ। सारे के सारे सदस्य इस सरकार का विरोध करो। आज मौका है। साढ़े चार साल के सारे पाप धुल जाएंगे। जो इन ट्रेजरी बैचिज पर बैठे हैं, जो आसू बहा रहे थे। मैं सबसे अपील करुंगा कि सब इस मोशन को स्पोर्ट करे।

प्रो० छतर सिंह चौहान (मुढाल खुर्द): स्पीकर साहब, विपक्ष के नेता ने आज इस गैर जिम्मेदार और भ्रष्ट सरकार के खिलाफ जो नो कांफीडैंस मोशन रखा है, मैं उसका समर्थन करता हूं क्योंकि आज हरियाणा प्रदेश में ऐसा मालूम पडता है कि कोई रुल औफ ला नहीं है, केवल रुल औफ जंगल है। कहीं सरकार नाम की कोई चीज नही है। चाहे आज बाढ़ की स्थिति हो, चाहे कोई नहर का काम हो चाहे ला एण्ड आर्डर की स्थिति हो या और कोई स्थिति हो किसी पर भी सरकार का कोई कन्ट्रोल नहीं है। मैं आज की सरकार के मुख्यमन्त्री को याद दिलाना चाहता हूं कि 10 जुलाई 1991 को इस सरकार के पहले सत में सदन के नेता ने यह बड़े दम के साथ कहा था कि हम इस प्रकार की कानून व्यवस्था करेंगे कि हमारी बहू–बेटियां रात के 12 बजे भी सड़क पर अकेली जा सकेगा। बहू बेटियां तो क्या अब हालत यह है कि दिन में युवक भी सुरक्षित नही जा सकता। जिस सरकार में

अनेक कांड हुए हों उस सरकार के दामन पर एक ऐसी अमिट छाप पड़ी है जो आने वाली पीढियां कभी भूल नहीं सकती और ये पीढ़ियां इनको कभी बखशेगी नहीं। मैं इनको याद दिलाना चाहता हूं कि इनके राज में सुशीला कांड हुआ, रेणुका कांड हुआ और एक कांड और हुआ। न जाने इस प्रकार के कितने कांड और हुए होंगे। इन कांडों को देखते हुए मैं तो यह कहता हूं कि यह सरकार कांडों की सरकार है। आज हरियाणा में स्थिति बहुत दयनीय हो चुकी है। कोई भी आदमी अपने आपको सुरक्षित नहीं समझता। इन्होंने भिवानी में कांड किया। मैं कहना चाहता हूं कि जब भी कोई सरकार ओथ लेती है तो उसका पहला कर्तव्य यही होता है कि ला एंड आर्डर की स्थिति पर पहले कन्ट्रोल हो और डिवैल्पमैंट के काम चाहे थोड़ी देर बाद हो जाए। लेकिन यहां न तो ला एंड आर्डर की स्थिति में सुधार आया और न ही कोई डिवैल्पमैंट के काम हो रहे हैं। ला एंड आर्डर की बिगड़ती स्थिति को सुधारने केलिये सरकार की जिम्मेवारी होती. है। लेकिन इस सरकार ने इस बारे में कभी कुछ अनुभव महसूस नहीं किया। इनके राज में ब्राही, टोहाना, नारनौल और नीसिंग में किसानों पर गोलियां चलीं। अब इन कांडों में इस सरकार का सबसे ताजा उदाहरण 23 अगस्त को भिवानी के कादमां गांव में किसानों पर हुई गोलीबारी का है। बहा पर बिजली लोगों को नहीं मिल रही थी और बिजली के बिल प्रतिदिन बढ़ते जा रहे थे। इसलिये वे अपना विरोध प्रदर्शित कर रहे थे और उन पर गोलियां चलवा दी गई। एक सवाल के जवाब मेँ बिजली मंत्री ने माना है कि

ट्यूबवैल्ज के 71 हजार कुनैक्शंज पैंडिंग हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि जब इस सरकार ने कार्य– भार संभाला था तो उस वक्त कितने कुनैक्शंज पैंडिंग थे और अब इनकी संख्या निरंतर क्यों बढ़ती जा रहीं है। मैं यह भी जानना चाहता हूं इन की बढ़ती संख्या को रोकने के लिये सरकार ने क्या कदम उठाए हैं। मैं बता रहा था कि कादमा में प्रशासन ने 23 अगस्त को किसानों पर गोलियां चलवा दीं। वहां जो कांड हुआ उसने जलियांवाला कांड को भी भुलवा दिया। भिवानी की जनता इस कांड से बड़ी परेशान हुई। इनकी सरकार के किसी आदमी की या किसी मती की हिम्मत नहीं हुई कि वे वहां पर जा सके और लोगों की दुःख तकलीफ को सुन सके। 23 तारीख को इस अन्यायी सरकार ने, इनके प्रशासन ने वहां पर दनादन गोलियां चलवा दीं जिससे 6 लोग मारे गए और दर्जनों घायल हो गए। जब इनके आदमियों में कोई हिम्मत नहीं थी कि वे वहां पर जा सकें। इसलिये बाद में वहा के विधायक यानि हरियाणा विकास पार्टी से संबंधित विधायक मौके पर पहुंचे। वे अपनी जीप मे 9 आदमियों को लेकर आये जिनमें से दो को रोहतक मैडिकल कालेज में दाखिल करवाया। इसी तरह से इस सरकार ने नीसिंग में किसानों पर गोलियां चलवाई थीं। कादमा कांड के बाद मुख्य मंत्री जी ने कहा था कि मरने वाले लोगों को दो–दो लाख रुपये देंगे। Speaker Sir, in legal terms, the Chief Minister has confirmed that he and his administration has caused these deaths.

स्पीकर सर, होना तो यह चाहिये था कि इनके खिलाफ क्रिमिनल केस चलते, वरना क्या जरुरत थी दो–दो लाख रूपये देने की। चीफ मिनिस्टर ने दो–दो लाख रुपये दे कर माना है कि उनके प्रशासन ने लोगों के साथ जुल्म किया है, उनके जीवन के साथ खून की होलियां खेले।. हैं। स्पीकर सर, कादमा काण्ड ही नहीं इस सरकार के आने के बाद कांडों की कमी ही नही है। अभी विपक्ष के नेता बता रहे थे कि एक 15 साल की ब्राह्मण लड़की रेणुका स्कूल से आ रही थी, उस का अपहरण किया गया तथा उससे बलात्कार किया गया फिर उसके जीवन को खत्म किया गया। स्पीकर सर, आज उन लोगों पर उंगलियां उठ रही है जिनकी इस सरकार में भागीदारी है। मैं आपके माध्यम से चीफ मिनिस्टर का ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूं कि इन्होंने उसकी हिम्मत बंधाई है, उसको इन्होंने निगम का चेयरमैन बना रखा है। उसके रिश्तेदार, उसके लड़के या सम्बन्धियों की तरफ उंगलियां उठ रही हैं। वे आएं, अगर उनका दामन साफ है तो वे बताएं कि रेणुका काण्ड में दोषी कौन है। स्पीकर सर, इसी तरह से करनाल में द्रोपदी कांड हुआ। स्पीकर सर, इस हिन्दुस्तान में एक द्रोपदी काण्ड आज से 5 हजार साल पहले हुआ था जिसने अनेकों लोगों का जीवन खत्म कर दिया था। उससे भारत को वह धक्का लगा था कि शताब्दियों तक भारत उमसे उभर नहीं पाया। आज द्रोपदी कांड करनाल में हुआ है। दउ–रइ की बात यह है कि एक मिनिस्टर की तरफ इस बारे में उंगलियां उठें। अध्यक्ष महोदय, हरियाणा के मुख्य मन्त्री को इस बारे मे भी बताना चाहिये। (विघ्न)

आबकारी तथा कराधान राज्य मंत्री (श्री जय प्रकाश): अध्यक्ष महोदय, मेरा कहना यह है कि यह मामला सब–जूडिस है इसलिये इसको उठाना नही चाहिये। मैं इसके लिये पर्सनल एक्सप्लेनेशन देनें के लिये भी तैयार हूं। (विघ्न)

प्रो० छतर सिंह चौहानः स्पीकर साहब, इस का कोर्ट से कोई सम्बन्ध नही है। श्री गुप्ता जी करनाल अपने लोगों के पास जाएं। लोग खुद ही बता देंगे कि श्री जय प्रकाश गुप्ता इस बात के दोषी हैं या कि नहीं। इस बात के लिये इन्हें करनाल के लोगों से प्रमाण पत लेना पड़ेगा। स्पीकर सर, दें कितने कांडों का जिक्र करूं इनका तो कोई अन्त ही नहीं है। भजन लाल जी की सरकार तो कांडों की सरकार बन गई है। भ्रष्टाचार की अगर बात करें तो उसका भी कोई अन्त नहीं है। जिस प्रदेश में चपड़ासी से ले कर एच०सी ०एस० तक की पोस्ट्स बिके, जहां के कमीशन के मैम्बर्ज पर उंगलियां उठें और चीफ मिनिस्टर के इशारे पर वे त्याग पत्न दें फिर त्याग–पत्न देने के बाद भी उनको लाभ का पद देने की बात ने इस बात को साबित कर दिया है कि उन लोगों का दोष था। चीफ मिनिस्टर के कहने पर ही इन लोगो ने इस्तीफे दिए और आज भी वे पोस्ट्स आफ प्रोफिट पर बैठे हुए है। स्पीकर सर, इसी प्रकार से जहां तक नौकरियों या सम्बन्ध है, जबसे चौधरी भजन लाल की सरकार आई है तब से बगैर पैसे दिए कोई चपडासी भी नही लगा है। नौकरियो के रेट्स फिक्सड हैं। जिस प्रकार डी०सी००एम० की दुकान मे जाएं तो वहां पर कपड़े के

रेट्स दिए होते हैं कि कौन से कपड़े का क्या भाव है उसी प्रकार क्लर्क लगने के लिये 90 हजार रुपये दो, पुलिस का सिपाही भर्ती होना है तो 80 हजार रूपये दो और अगर एच०सी०एस० लगना है तो साढ़े पांच लाख रुपये दो वरना इस प्रकार का काम करने की क्या जरुरत थी। स्पीकर सर, पिछले महीने पुलिस की भर्ती हुई जिस का कोई पता ही नहीं लगा। अगर इस सरकार की नीयत साफ थी तो खुले रूप से बताती कि फलां तारीख को भर्ती है। 7 तारीख को भिवानी मैं पुलिस की भर्ती थी। जो लोग वहां गए थे वे कहने लगे कि आज भर्ती नहीं होगी क्योंकि 9 तारीख को चीफ मिनिस्टर साहब भिवानी मे आ रहे हैं। इसलिये आप भर्ती के लिये 10 तारीख को आना। स्पीकर सर, भर्ती 7 तारीख रात को हो गई, पता नही किस की चिटों से हो गई। मैं आपके माध्यम से एक बात बताना चाहता हूं कि इस सरकार ने किस ढग से प्रदेश के एडमिनिर्स्ट्रेटिव सिस्टम को स्पायल ही नही किया बल्कि कोलैप्स कर दिया है। आने वाले लोग कभी इस सरकार को माफ नही करेंगे। पुलिस भर्ती के बारे में आपके ध्यान में मैं लाना चाहता. हूं। रोहतक जिले के 80 सिपाही भर्ती हुए और हिसार जिले से 581 भर्ती हुए। उन 581 में से भी कोई राजस्थान से बिश्नोई है और कोई पंजाब का है। इस भर्ती को इस सरकार ने मखौल बना दिया। स्पीकर सर, चीफ मिनिस्टर साहब को आज नहीं तो फिर कभी इसका लेखा जोखा देना पड़ेगा, हरियाणा के लोग इनको कभी माफ नहीं करेंगे। मैं सरकार से यह जानना चाहता हूं कि हिसार से 581 सिपाही भर्ती करने की क्या जरूरत

थी। रोहतक भी इसी के समान बड़ा जिला है, वहां से केवल 81 भर्ती हुए। स्पीकर सर, वह सारे का सारा एक खेल है जिसको चीफ मिनिस्टर ने अपनी निजी जायदाद बना रखा है। स्पीकर साहब, नौकरियों के मामले में तो महसूस होता है कि हरियाणा में नौकरी योग्यता के आधार पर तब तक नही मिल सकती जब तक इस सरकार को उठाकर फेंक न दिया जाए। यह आम लोगों में धारणा बन चुकी है। वेसे तो यह सरकार बाबू में बह गई है। स्पीकर साहब, इसी तरह से, मैं आपको बहादुरगढ के बारे में बताना चाहता हूं कि 27– 7– 95 को राजबीर नामक युवक को पुलिस उठाकर ले गई और उसको बहुत यातनाएं दीं, जिस वजह से वह मर गया। जब हमने उसका मैडीकल करवाया तो डाक्टरो ने यह कहा कि इसकी मौत पीटने की वजह से हुई है। इसी तरह से रमेश चन्द्र को सोनीपत में रखा गया है। अध्यक्ष महोदय, न जाने कितने ही लोग हैं जिनको पुलिस उठाकर ले गई है, जिनको देखने वाला कोई नहीं है। पुलिस का काम लोगों की रक्षा करना है लेकिन आज ये रक्षक ही भक्षक बन गए हैं। यह बड़े दु:ख की बात है कि पुलिस ने आज राजनीतिज्ञों के सामने अपने घुटने टेक दिए है। अध्यक्ष महोदय, आज ये हालात हो गए हैं कि सुप्रीम कोर्ट ने पुलिस के तीन आदमियों को सजा दी थी लेकिन इस सरकार ने उनके छूटते ही उनको दोबारा से नौकरी में रख लिया है। सर, उन आदमियों के खिलाफ क्रिमिनल केस दर्ज था। अध्यक्ष महोदय, अपने आदमी को फेवर करने के लिये किसी बेगुनाह को सजा देना, यह ठीक बात नहीं है और आज इस सरकार में ऐसा

ही हो रहा है। आने वाले समय में आप पढ़ेंगे कि इस सरकार में इस प्रकार के मंत्री थे, जो कोर्ट के आर्डर की अवहेलना किया करते थे। आज शासन और प्रशासन आकण्ठ तक डूबा हुआ है। (घन्टी) अध्यक्ष महोदय, कालका से लेकर नारनौल तक पलवल से लेकर डबवाली तक यह सरकार और प्रशासन आकण्ठ तक डूब चुका है। प्रदेश के लोग कहते हैं जब भजन लाल की सरकार आती है तो ये कहते हैं कि भ्रष्टाचार शुरु, तुम चेले मैं गुरु। अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी ने स्वयं माना है कि प्रशासन ने इन्हें धोखा दिया है। पहले मुख्यमंत्री जी यह कह रहे थे कि इनके एडमिनिस्ट्रेशन ने बहुत अच्छा काम किया है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताऊं कि 23 तारीख के ट्रिब्यून में छपा है:—

"The Chief Minister is very sore on the working of the administration. He has said that the administration has let him down".

इस एडमिनिस्ट्रेशन ने अपने हितों के लिये हरियाणा के हितों को तिलांजली दे दी। अध्यक्ष महोदय, भिवानी में बाढ़ आई हुई थी और इनके डी०सी ० और एस० पी ० मौज कर रहे थे। (विघ्न) स्पीकर सर, इसके पश्चात अब मैं ट्रांसपोर्ट विभाग के बारे में आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं। पिछले सैशन में भी हमने कहा था कि हरियाणा में से हो कर दिल्ली से लेकर बीकानेर तक न जाने कितनी ही बसिज रोजाना चलती हैं जिनका न कोई परमिट है और न ही वे रोड टैक्स या पैसैन्जर टैक्स सरकार को देती है। ये बसिज रोजाना हरियाणा में 250 किलोमीटर का सफर

तय करती हैं। मुख्यमंत्री जी ने कहा था कि हम इसकी इंक्वायरी करवाएंगे. लेकिन कुछ भी नही हुआ। ये बसिज किसी बड़े आदमी के संरक्षण में चल रही हैं। स्पीकर सर, इससे ज्यादा खराब वात और क्या हो सकती है? यह हमारे लिये बहुत ही चिन्ता की बात है। मैं चाहता हूं कि मुख्यमत्री अपने पहले दिए हुए आश्वासन को पूरा करें। ट्रांसपोर्ट डिपार्टमैण्ट में मुख्यमंत्री जी ने स्वयं माना था कि मिनि बसिज में घपला हुआ है। घपला करने वाले लोगों के नाम भी इन्होंने इस सदन में लिये थे जो कि रिकार्ड में भी हैं। लेकिन उनके खिलाफ भी कोई कार्यवाही नहीं हुई जबकि इन्होंने कार्यवाही करने के लिये कहा था। स्पीकर सर, यह इस सरकार का आखिरी सत्र है फिर तो जनता इनको यहां पर आने नहीं देगी क्योंकि जो इनके कर्म हैं, जो इन्होंने लोगों के साथ धोखा किया है, विश्वासघात किया है उसको जनता जान चुकी है। इसी प्रकार से मैं इरीगेशन डिपार्टमैंट के बारे में कहना चाहूंगा। जहां तक नहरों में पानी का संबंध है, हम लोण चार साल से यह कहते चले आ रहे हैं कि हरियाणा के दक्षिणी जिलों के साथ सरकार भेदभाव कर रही है। वहां पर पानी की बहुत कमी है। मुख्यमंत्री जी हंस रहे हैं। ये इस प्रदेश के मुख्यमत्री हैं, अगर ये मुख्यमंत्री न होते तो इनसे कोई इस बात को नही कहता। आज हरियाणा के दक्षिणी जिलों के साथ जो भेदभाव किया जा रहा है वह ठीक नही है। सिरसा ओर हिसार जिलों में तो नहरे मे 24 दिन पानी चलता है जबकि रोहतक, भिवानी, रिवाड़ी और गुडगांव के लोगों को पानी बिलकुल नही मिल रहा है। इससे बुरी और क्या बात हो

सकती है। मैं चाहता हूं कि यह भेदभाव खत्म हो। चीफ मिनिस्टर साहब कहते हैं कि मैं एस ०वाई ० एल० का पानी हरियाणा में 6 मही ने में ला दूंगा लेकिन हमें नही पता कि इनके 6 महीनें कब पूरे होगे? कौन सी तारीख से शुरु होगे? पंजाब से पानी लाना तो इनके ताकत की बात नही है लेकिन अगर इन के अंदर दम है तो जो हरियाणा मे पानी है, उसका ही ये ठीक तरह से बंटवारा कर दें। यही इनके लिये एक बहुत अच्छी बात होगी। सर, भिवानी जिले में और खासतौर पर दादरी तहसील मे जो कि धर्म पाल सिह की कास्टीच्यूएंसीभी है, 26 दिन वा रिश के रुके होने के बा वजूद भी आज वहां पानी बढ़ता ही जा रहा है। वहां पर दस गांव पूरी तरह से जलमग्न है। एक वहां पर जयश्री गांव है जिसमें दस फुट पानी खड़ा है। इसी तरह से लोहारु करनाल पर लोग 25 दिन से लठियां लिए हुए खड़े हैं और अपनी रक्षा कर रहे पैं क्योंकि उन्हे कलानौर की विधायिक श्रीमती करतार देवी से खतरा है कि वे कही इस नहर को कटवा न दे। आज लोहारू कैनाल में पानी इतना अधिक है कि अगम्य आप उसको देखें तो आप बता ही नही सकते कि इस कैनाल के किनारे कहां है। वह पर 14— 14 फुट पानी खडा है। आप चाहें तो पांच एम ० एल ० एज ० की एक टीम वहां पर भेज दें जो इस बात को देख सकतीं है। जयश्री, मिश्री, और साल्हावास के कुछ एरियाज बिल्कुल जलमग्न हैं। आप शायद इस बात से सहमत नही होंगे कि वहां पर पानी बढ़ता ही जा रहा है लेकिन भिवानी. मे पानी का स्तर वाकई मे बढ़ रहा है। लोहारू कैनाल और बौंद डिस्ट्रीब्यूटरी के बीच मे 25

किलोमीटर तक के ऐरियाज में लोग रात को सो नही पाते क्योकि उनको पता है कि ये दोनों नहरें अगर कभी भी टूट गयी तो वे डूब जाएगे। कल ऊर्जा मती ने भी जिक्र किया और यह सरकार तो कहने की आदी ही हो गयी है कि किसानो को सस्ती बिजली देने से बिजली बोर्ड को करोड़ों रुपयों का घाटा होता है। मैं आ पके माध्यम से बताना चाहता हूं कि यह सारी झूठी स्टेटमैंट हैं, असत्य स्टेटमैंट सदन मे नही देनी चाहिए। कल स्वयं बिजली मती जी ने माना था कि हाइड्रो इलैक्ट्रिसिटी हमें 17 पैसे पर यूनिट मिलती है। (विघ्न)

बिजली मन्त्री (श्री वीरेन्द्र सिंह): आन ए प्यायंट औफ ऑर्डर, स्पीकर सर, माननीय सदस्य को गलतफहमी हो गई है। 17 पैसे तो जनरेटिंग कोस्ट है डिस्ट्राब्यूशन, ट्रांसमीशन और लाइन लौसिज का खर्च 65 पैसे है। टोटल 82 पैसे में पड़ती है और किसान को 50 पैसे में देते हैं।

प्रो० छतर सिंह चौहान: अध्यक्ष महोदय, मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि, ट्रांसमीट करने के बाद 35 पैसे से ज्यादा में नहीं पडती, आप किसी से भी हिसाब लगवा लें। घाटा इनकी अपनी मिसमैनेजमैट की वजह से है। आज हरियाणा में 46 परसैट लाइन लौसिज हैं जब कि 15 से 17 परसैटं से ज्यादा नहीं होने चाहिए। बड़े–बड़े जो कारखानेदार हैं वे लोग मुख्यमंत्री जी और मंत्रियो की शह पर बिजली की चोरी करते हैं और यह बात किसान पर लाद दी जाती है। मैं आपके माध्यम से मुख्यमंत्री जी

से कहना चाहता हूं कि वे एक प्वाइट पेपर इशु करें कि किसान को बिजली देकर कितना घाटा हो रहा है। आपने तो न बाढ़ में उनकी हालत पूछी, न सूखे में पूछी, न भूख में पूछी। न दवाई का प्रबन्ध किया न खाने का प्रबन्ध किया। इस प्रकार जो इनइफैक्टिव गवर्नमैंट है जिसका ऐडमिनिस्ट्रेटिव सिस्टम कोलैप्स हो चुका है उसको सत्ता में रहने का कोई अधिकार नही है। इनकी आत्मा में अगर बल है तो ये इस्तीफा देकर आज घर जांए। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

चौधरी वीरेन्द्र सिंह (उचाना कलां): स्पीकर महोदय, अविश्वास का प्रस्ताव सदन में सरकार के खिलाफ है। 1966 में हरियाणा पंजाब से अलग होकर एक प्रान्त बना था। उससे पहले हरियाणा के राजनीतिक लोग चाहे वे सत्ता में थे, या सत्ता से बाहर थे कभी यह नही सोचते थे कि हमें मुख्यमंत्री बनने का मौका मिल सकता है। जब हरियाणा बना तो हरियाणा के लोगों को खुशी का अहसास हुआ कि अब हमारे अपने मुख्यमंत्री होंगे, अपनी सरकार होगी अपने मंत्री होगे। मुझे अच्छी तरह से याद है कि हरियाणा बनने से पहले एक या डेढ़ मंत्री इस हरियाणा से आते थे, जहां से आज 90 विधायक आते हैं। चाहे श्री राम शर्मा थे या राव वीरेन्द्र सिंह थे, इनमें से एक मन्त्री या ज्यादातर एक छोटा मंत्री बना दिया जाता था। 45 करोड़ रुपया उस समय टैक्सों की शक्ल में हरियाणा के लोग पंजाब राज्य में देते थे मौर

हम पर खर्च होता था उसका एक तिहाई पैसा। बाकी पैसा जो लोग सत्ता में होते थे उनके इलाकों जैसे जालंधर, लुधियाना और अमृतसर में खर्च होता था। उसके बाढ प्रशासन की बागडोर हमारे लोगों को सौंपी गई क्योंकि सत्ता का विकेन्द्रीकरण करके लोगों को कायदा पहुंच सकता है। आजादी के 18 साल के बाद हरियाणा के लोगों को अपनी सरकार बनाने का, अपना मुख्यमंत्री चुनने का मौका मिला। हरियाणा बने हुए 29 साल हो गए है। इन 29 सालों में से साढ़े 26 साल तक हरियाणा पर तीन परिवार सत्ता पर काबिज रहे है। 11 साल से ऊपर भजन लाल जी ने राज किया है। साढ़े आठ साल बंसी लाल जी ने राज किया है और 6 साल चौधरी देवीलाल जी और उनके परिवार ने शासन किया है। मैं यह मानता हूं कि मुख्यमंत्री तो एक ही बनता है, एक ही बनेगा लेकिन एक प्रथा पड़ गई कि हरियाणा में जो मुख्यमंत्री बना उसने राज को अपनी ही मुट्ठी मे रखा। जब उस राज की मुट्ठी को खोलने का मौका आया तो केवल अपने परिवार के लोगों के लिये, अपने रिश्तेदारों के लिये या उन लोगों के लिये मुट्ठी खोली गई जोकि चाटुकारिता में माहिर, थे या फिर उन लोगों के लिये राज की शक्ति की मुट्ठी खोली गई जोकि उनके अपने सगे सम्बन्धी थे। अध्यक्ष महोदय, इससे आगे मैं यह कहना चाहता हूं कि डेढ़ दो साल पहले भजन लाल जी के काल में पटवारियों की सिलैक्शन हुई थी। इनके अपने हल्के में एक गांव बालसमंद है। वहां ये महानुभाव सिलैक्शन से पहले भाषण देकर आये कि मैंने तुम्हारे गांव से 17 पटवारी सिलैक्ट किये है। मेरे पास इनका रिकार्डिड

भाषण है जिसको मैं इस औगस्ट हाउस में प्रस्तुत कर सकता हूं। मुख्य मन्त्री क्या कहते हैं कि लोगों, किसी एक हल्के को 10– 10 भी नही मिले लेकिन मैंने आपके अकेले गांव से 17 पटवारी सिलैक्ट किये हैं और आदमपुर से 300 पटवारी सिलैक्ट किये हैं। इस बारे में, मैं यह कहना चाहता हूं कि हमेशा ही मुख्यमत्रिंयों ने और खासतौर पर इस मुख्यमंत्री ने अपनी सभी सीमाओं को लांघ कर, सभी प्रजातन्त्र की परम्पराओं को लांघ कर, ताक पर रख दिया है। इनकी नीति तो यह है कि जो वोट से सत्ता मिलती है, उसको अपनी मुट्ठी में ही रखो, लोगों में न बखेरो। सत्ता तो आनी जानी है। अध्यक्ष महोदय, जब डाक्टर राम प्रकाश जी बोल रहे थे तो इन्होंने उन्हें कहा कि आपको पता नही है कि लीडर आफ दी हाउस जब खड़ा होता है तो आपको बीच में बोलना नही चाहिये, बैठ जाना चाहिये। आपको इन सभी बातों का ध्यान रखना चाहिये। अध्यक्ष महोदय, मैंने पार्लियामैंट के अन्दर और दूसरे हाउसिज में देखा है कि जब कभी भी सरकार पर, मंत्रियों पर आपोजीशन की ओर से अटैक होता है तो उसको वे झेलते हैं। लेकिन यहां पर हरेक बात पर मुख्य मन्त्री महोदय बोलने के लिये खड़े हो जाते हैं। या तो इनको अपने मन्त्रियों पर विश्वास नही या फिर वे कपीटैन्ट नहीं हैं। हम तो कहते हैं कि मुख्य मन्त्री सर्वोच्च होता है। वह लीडर आफ दी हाउस है। जब लीडर आफ दी हाउस बोलने के लिये खड़ा होता है तो हाउस के अन्दर एक सन्नाटा सा हो जाता है। दूसरी तरफ ली डर आफ दा आपोजीशन है। हमने सैन्ट्रल हाल पार्लियामैंट में यह देखा कि जब श्री अटल

बिहारी वाजपेयी जी बोलने के लिये खड़े होते थे तो मैम्बर्ज भाग कर सुनने के लिये जाते थे कि वाजपेयी जी बोल रहे हैं। श्रीमति इंदिरा जी, श्री राजीव गांधी जी जब बोलते थे तो मैम्बर्ज उनको सुनने के लिये भागते थे लेकिन यहां पर तो बात ही उल्टी है। यहां के मुख्यमन्त्री तो यूंही इधर उधर की बातों में ही उलझे रहते है। कभी ओम प्रकाश जी के बारे में कुछ कह दिया, कभी किसी दूसरे के बारे में कुछ कह दिया। मेरा कहने का मतलब यह है चौधरी भजन लाल जी कि यह आपको शोभा नही देता। आप तो बड़े पुराने मुख्यमंत्री हैं। 11 साल तक मुख्यमन्त्री रहना यह कोई छोटी मोटी बात नही है। अब भी 6 महीने हैं। आपको अपने आप में झांक कर देखना चाहिये कि आपमें कहां कहां कमियां हैं? क्या क्या गलतियां आपने की हैं। लोगों के बीच में जा जा कर यह कहना कि मैंने आपके गांव से इतने पटवारी लगा दिये हैं और आदमपुर से 300 पटवारियों को नौकरी मे लगा दिया है। इसमें आप दोषी नहीं हैं, आपका जो सिस्टम है, वह दोषी है। या ये जो आपके सहयोगी बैठे हैं, इनमें इस बात की शक्ति होनी चाहिये कि वे पूछे कि चौधरी भजन लाल जी क्या आदमपुर और बालसमद गांव में ही अक्लमन्द लड़के हैं। क्या तुम्हारे हल्के मे ही सब से ज्यादा हरियाणा के पड़े लिखे लड़के हैं। क्या वे ही हरियाणा के दूसरे बच्चों से ज्यादा पढ़े लिखे अक्लमन्द हैं। क्या हमारे बच्चो का यह हक नही था। इससे आगे प्रोफेसर छतर सिंह जी ने कहा कि भजन लाल जी आप भी हमारे साथ एक वायदा करके आये थे। उस वायदे में, मैं भी भागीदार हूं क्योंकि उस समय मैं प्रदेश

कांग्रेस का प्रधान था। हमने अपने कांग्रेस के घोषणा पत्र में यह कहा था कि हम रावी–व्यास का पानी एस० वाई० एल० के द्वारा अपने हरियाणा के खेतों मे देंगे। उस वायदे पर मैं यह बात सदन में कह सकता हूं कि इस पार्टी के लोगों ने कभी भी इस बात का दबाव नही डाला कि आप इस नहर को प्राथमिकता दे कर खुदाए। व्यास नदी का 18 लाख एकड़ फुट पानी पानीपत, कुरक्षेत्र और करनाल जिलों के लिए, कैथल और जीन्द आधे जिलों के लिए तथा रोहतक, सोनीपत, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी और गुड़गांव जिलों के लिए है, लेकिन उनको आज पानी नही मिल रहा है। चौधरी देवी लाल 1977 मे सत्ता में आए थे। तब उस पानी का गोबिन्द सागर में आना शुरू हुआ था। यह पानी इन जिलो के नाम लिखा हुआ है जोकि उनका हक भी है। मैं आपको दोषी नही मानता, मैं देवी लाल को दोषी नहीं मानता। मैं दोषी उनको मानता हूं जिनके हल्के में यह पानी जाना था। वे आज इसलिये आप से घबराते हैं और अपनी जनता की मांग नहीं उठा सकते क्योंकि उनको कांग्रेस का टिकट चाहिए। अगर उनको टिकट नही मिलेगा तो चुनाव कैसे लडेंगे। चुनाव नहीं लड़ेंगे तो एम० एल० ए० कैसे बनेंगे। एम० एल० ए० नही बनेंगे तो मिनिस्टर कैसे बनेंगे। मिनिस्टर बनने के बाद आप उनको छूट देंगे। (विघ्न) अरोड़ा साहब आप तो मत बोली। मैं इसलिए कह रहा हूं कि आप हर शाम को भजन लाल को हटा कर सोते हो और सुबह उनके साथ होते हो। मेरा सारा जीवन आप लोगों के साथ कांग्रेस में रहा है इसलिए मैं आपकी शान में नही कहना चाहता हूं लेकिन मैं कुछ कमियां बताना

चाहता हूं जो पोलिटीकल सिस्टम में आ गई हैं। आज हरियाणा के लोग बात करते हैं कि हमारा 18 लाख एकड़ फुट पानी डबल्यू० जे० सी ० को स्ट्रैथन करने के लिए नहीं आता। एन० बी ० के० कैनाल जिसकी कैपेसिटी 4200 क्यूसिकस है, उसकी पिछले कई सालों से डि–सिल्टिग नहीं हुई है। इस नहर का हिस्सा जो पंजाब के अन्दर है क्या उसकी डिसिल्टिंग करवाना आपका परम कर्तव्य नहीं बनता। आज उसकी कैपेसिटी 42 सौ से घट कर 23–24 सौ क्यूसिकस रह गई है। उसकी सफाई करवाई जाए और डबल्यू० जे ० सी ० को स्ट्रैग्थन किया जाए। लेकिन आप ऐसा करना नही चाहेंगे क्योंकि भाखड़ा मेन क्ऐ नाल से जो पांच नहरें जाती हैं ज्यका पानी चौटाला के तेजा खेड़ा फार्म मे और भजन लाल के आदमपुर हल्के में जाता है। इसलिए आप लोग और विपक्ष में बैठे हुए चौटाला साहब यह कहते हैं कि हम अकेली नहर के पानी का फैसला नहीं करेंने। हम चण्डीगढ़ के बदले 104 गांव भी लेंगे। हमें पता था कि लोगों की भावना से इस किस्म का खिलवाड़ हुआ था कि चण्डीगढ़ के ईशू और पंजाब के दूसरे इलाकों को इमोशने– लाईज किया गया। हमने पोलिटिकल रिस्क लेकर हरियाणा की जनता को कहा कि चण्डीगढ़ का फैसला तो साल दो साल बाद हो सकता है, हमारी नई कैपिटल बन सकती णै और इलाकों का फैसला भी बाद में हो सकता है लेकिन हमारी पहली प्राथमिकता नहर के पानी की है। जो लोग हरियाणा के एक खास इलाके से आते हैं उन्होंने कभी इस बात की परवाह नहीं की कि एस० वाई० एल० कैनाल खुदनी चाहिए।

श्री अध्यक्षः आप नहर का पानी मांग रहे हो या कोई खास पानी मांग रहे हो।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, घरों में 10– 10 फुट पानी आ गया फिर भी इनको तसल्ली नहीं हुई।

चौधरी बीरेन्द्र सिंहः ऐसा पानी तो आपको ही मुबारक हो, अगर आप उसको ले जा सको हो। जो मैंने स्पैसिक्किली यह बात पूछी कि चौधरी साहब आपने सदन में आश्वासन दिया है कि 6 मशेने में नहर पूरी करवादूंगा तो आपने बड़ा मुस्करा कर यह कहा कि बीरेन्द्र सिंह मैंने यह थोड़े ही कहा है कि कौन से 6 महीने में। यह राजनैतिक सत्यता नहीं है। यह राजनैतिक धोखा है। आप बेशक कितने ही चालाक बनें, आप अपने मन में तसल्ली. करैं कि आपने लोगों को कोई आश्वासन नही दिया। 6 महीने का मतलब होता है जिस दिन मुख्य मती बोलता है उसके 6 महीने बाद। लेकिन आज सारी की सारी राजनैतिक मान्यताएं और प्रजातांन्त्रिक मान्यता धरी की धरी रह गई। मैं यह बात कहना चाहता हूं कि आगे आने वाले 10– 15 साल हरियाणा की जनता के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। आज उस मुख्य मन्त्री को जरुरत है, आज उस नेतृत्व की जरुरत है जो आगे आने वाले 10– 16 साल की बातों को भांप कर चले। आपने एक बात यह कही कि आप गुड़गांव सिटी के पास एक जापान सिटी के नाम से सिटी बनाऊंगे, जिसमें करीब 20 हजार छोटी बड़ी इंडस्ट्रीज होगी। मुझे यह बात कहते हुझ बड़ी शर्म आती है कि आपके बडे बड़े

औफिसर्ज यह बताते हैं कि जापानियों को आपने साइट और दिखाई और जमीन कहीं और एक्वायर कर दी। आपने उनको जमीन बांई साइड पर दिखाई और एक्वायर दांई साइड में कर दे।। इस तज की बात से हमें अल्टी–मेटली नुक्सान होगा। आज तक नोएडा के बारे में भी कोई फैसला नहीं हुआ है। मैं यह बात मानता हूं कि उदारीकरण की नीति के बाद दिल्ली के चारों तरफ हरियाणा में अगले 10– 12 साल में 100– 100 किलोमीटर में टोटल इंडस्ट्रीयलाइजेशन होगा। जमीन खेती के लिए कर होवो और कारखानों में जमीन ज्यादा जाएगी। मुझे इस बात का भी अन्दाजा है कि जा इस किसम का उद्योगीकरण होगा तो उसमें तकरीबन 20 लाख बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा। लेकिन आज सोच इस बात की शै कि क्या हम अपने नौजवान बच्चों को उस किस्म के रोजगार के लिए उन स्कूलो मे ट्रैनिग दे सकेंगे जिन स्कूलो के पास अपनी कोई बिल्डिंग भी नही है। जिनमें पूरे टीचर नही है, जिनमे तकनीकी ज्ञान की सोच पैदा करने वाले आदमी नही हैं। मैं आपको एक मिसाल दे कर एक बात बताना चाहता हूं। चौधरी जसवन्त सिंह जी का जाखौली गांव है, वे एम ० एल ० ए० हो ते थे। आज से एक डेढ़ महइ। ना पहले मेरा उनके गांव में जाने का प्रोग्राम था। वह गांव जी ० टी ० रोड से दो किलोमीटर दूर है। जब मैं जी० टी० रोड से उस गांव में घुसा तो जी० टी ० रोड से निकलते ही एक बड़ी फैक्टरी है। मैंनै उस फैक्टरी के बारे में गांव में जा कर पूछा कि यह किस चीज की फैक्टरी है। मुझे बताया गया कि साहब यह शीशा बनाने की फैक्टरी है और

सलिका सैंड उसका सबसे बड़ा रा मैटीरियल है। मैंने उनसे पूछा कि इस फैक्टरी में कितने आदमी काम करते हैं और उनमें से आपके गांव के कितने आदमी है। लोगों ने कहा कि इस गांव के तो इसमें 30 या 40 लड़के काम करते हैं। मैंने कहा कि वे लड़के क्या काम करते हैं तो उन्होंने कहा कि तीन काम करते हैं। एक तो रात को पहरा देते हैं, दूसरा फैक्टरी के गेट पर खड़े हो कर जब फैक्टरी. का साहब आता है तो उसको सलूट करके गेट खोलते हैं और फिर गेट बन्द करके सलूट करते हैं। ती सरा काम यह क जो रेत ट्रक से नी चे उतारी जाती है उसको फैक्टरी मे भेजते हैं। मैंने कहा कि इस फैक्टरी में इजी नियर भी बहुत होंगे। उन्होंने कहा हां साहब, इसमें तकनीकी ज्ञान के बहुत इंजीनियर हैं। वे लोग बंगाल से कोर्स करके आए हैं। उस गांव के लोगों ने एक खास बात कही कि इस फैक्टरी में चश्में लगाने वाले बहुत लड़के हैं जिनकी तनखाहें भी बहुत हैं। मैं कहना चाहता हूं कि अगर आपकी सोच हरियाणा की जनता के बारे में उदारीकरण के तहत उद्योगीकरण की हो रही है तो दिल्ली के आस पास जो हमारी फैक्टरी ज हैं, उनमें हमारे हरियाणा के लोग काम करें न कि बाहर के काम करें। नहीं तो वे यही काम करते रखेंगे कि फैक्टरी के बाहर खडे होकर रखवाली करते रहेंगे। यदि हरियाणा के बच्चों को वही तकनीकी ज्ञान दिया जाये तो हम मानेंगे कि सरकार कोई काम कर रही. है। यदि ऐसा ज्ञान हमने अपने बच्चों को नहीं दिया तो हरियाणा की जनता यही' कहेगी कि हरियाणा की राजनीति पर शासन करने वालों ने हरियाणा की जनता के

साथ धोखा किया है। मैं मुख्य मन्त्री जी से यह कहना चाहता हूं कि अब बकाया छः महीनो में वे ज्यादा कुछ तो करने वाले नहीं लेकिन कुछ बुनियादी बातें तो कर सकते हैं, जिनका आगे चल कर फायदा हो सकता है। मुझे इस बात की चिन्ता है कि इस देश में और प्रदेश मे कांग्रेस का जो जनाधार आप खिसकाने में लगे हुए हैं तो यहां की सत्ता और देश की सत्ता ऐसे लोगों के हाथों में चली जायेगी, जो जात पात के नाम पर, धर्म के नाम पर लोगों पर शासन करेंगे। यदि उन लोगों के हाथों में सग आती है तो वे ऐसा वैशियाना काम करेंगे जो इतिहास में कभी सुनने को नहीं मिलेगा। आज जरूरत इस बात की है कि अगर हरियाणा में आग आदमपुर से बाहर निकल कर आ सकते

पेज 59

करके ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए। जो टमाटर बाहर जाएगा उस पर खर्चा, दलाली और जहाज का किराया लगेगा। वह अगर 150 रुपये भी लग जाए तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा। इससे गरीब किसान को फायदा होगा, उसकी आमदनी बढ़ेगी। सरकार को ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए जिससे उनका आगे सम्पर्क हो। सरकार उसके लिए प्रबन्ध करे, उसको वीजा दिलाए और बाकी जो

जरूरत है, वह पूरी हो सके ऐसा प्रावधान करें। इस बारे में मैं एक उदाहरण देना चाहूंगा। अध्यक्ष महोदय, एक बार मेरी एटलस फैक्टरी के एक बहुत बड़े आफिसर से बात हुई। मैंने उससे पूछा कि आपको साईकल कितने में पड़ती है। उसने बताया कि 1200–1400 के करीब पड़ती है। मैंने उससे पूछा कि इसमें मुनाफा कितना है। उसने बताया कि जो साईकल लुधियाना में बनती है और उसके मुकाबले में जो साईकल सोनीपत में बनती है, उसका मुनाफा कम है। इसकी वजह यह है कि राम गढ़िया बिरादरी के लोग वहां पर रहते हैं जो कि तकनीकी. तौर पर बहुत ही कुशल हैं। उनकी पैनी नजर इतनी ज्यादा है कि जो सामान डैमेज कर दिया जाता है, बडी संख्या में उसमें जो अच्छे पुर्जे होते हैं, वे उनको एकदम भांप लेते हैं। उनको नये साईकल में फिट कर दिया जाता है जो कि काफी सस्ते पड़ते हैं। अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से हमारे यहा भी जो हरिजन भाई हैं, बैकवर्ड क्लासिज के लोग हैं, राम गढ़िया बिरादरी के लोग हैं या दूसरी जो भी जातियां काम करती हैं, अगर उनको पर्याप्त साधन उपलब्ध करवाए जाए तो दूसरे कामों से उनकी आमदनी 15,20,30, या 40 गुणा ज्यादा हो सकती है। आज पंजाब प्रदेश को छोड्कर वहां के लोग अब विदेशों में, अमरीका, इंग्लैड इजराइल, कनाडा आदि देशों में जा कर काम कर रहे हैं। हजारों की संख्या में वे परिवार वहां जा कर बस गए हैं। वे परिवार करोड़ों रुपये की राशि अपने साधनों से कमा कर पीछे अपने परिवार के सदस्यों को, रिश्तेदारों को और अपने प्रदेश को आर्थिक तौर पर मजबूत कर रहे हैं। वे लोग

जिनके बारे में कहा जाता था कि वे गरीब हैं, बैकवर्ड हैं, हरिजन हैं, लैण्डलैस हैं, यानी उनके पास प्रोपर्टी नहीं है, आज वे लोग आनरेबल जिन्दगी बिता रहे है उनके पास किसी चीज की कमी नहीं है और हर ऐशो–आराम उनको उपलब्ध है। आज वे अपने आप को किसी से कम नहीं समझते हैं। अध्यक्ष महोदय, मेरे कहने का मतलब यह है कि हमारे देहात में जो कामगार हैं जिनमें खाती हैं, लुहार हैं, चमड़े का काम करने वाले लोग थोर दूसरे छोटे मोटे धन्धे करने वाले लोग आते हैं। कितने हो ऐसे धंधे हैं जिनमें लोगों को रोजगार दिलाया जा सकता है। अगर सरकार की नीयत ठीक है तो कोई अलग डिपार्टमैंट बना कर या इंडस्ट्रीज डिपार्टमैंट के हारा सरकार उन लोगों को धंधे की तकनीकी शिक्षा उपलब्ध करवा कर और दूसरे साधनों से प्रोत्साहन देकर उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत कर सकती है ऐसा प्रबन्ध किया जाना चाहिए। आज के परिपेक्ष में पैदा हुए हालात के तहत उनकी सहायता होनी चाहिये। इससे उन की आर्थिक स्थिति सुधरेगी और उनको सोशल सिक्योरिटी भी मिलेगी। अध्यक्ष महोदय इसके साथ ही मैं कादमा का जिक्र करना चाहूंगा। वहां पर 1500 लोगों पर 500 हथियारबन्द लोगों को लगा दिया गया। अगर 5000 हजार लोग होते तो 500 व्यक्तियों को उन पर लगाना कुछ ठीक होता। लेकिन इतनी अधिक फोर्स को वहां तैनात करना मानवाधिकार के खिलाफ बात है। हम चाहते हैं कि यह माननीय हाउस इस मुद्दे को मानवा– धिकार आयोग के सामने उठाए। दूसरी बात मैं चौधरी वीरेन्द्र सिंह जी से कहना चाहता हूं कि 1500 करोड़ रुपये के

बिजली के बिल इकट्ठे भेजने पर और उनकी अदायगी न करने पर किसानों पर यह अत्याचार कादमा में किया गया है। आप हिसाब लगा कर देखें कि हिसार, फरीदाबाद, यमुनानगर और औद्योगिक नगरों में बिजली के बिलों का कितना पैसा बकाया पड़ा हुआ है, लेकिन फिर भी किसी को पकड़ा नही गया। क्या किसी के खिलाफ आपने एक्शन लिया, क्या किसी फैक्टरी में आपने ताला लगाया और क्या वहां पर किसी पर गोली चलाई? नही, वहां पर ये ऐसा नही कर सकते हैं क्योंकि वहां से इनको आमदनी होती है। वहां पर इनका आमदनी का जरिया है। ये बातें हैं जो हमें इनके खिलाफ बोलने के लिये मजबूर करता. है। अध्यक्ष महोदय, मैं इनको कहना चाहता हूं कि ये लोगों की भलाई के लिये कुछ करें वरना जब ये गांवों में जाएंगे तो लोग इनको वहां पर घुसने नहीं देंगे। मैं इनको कहना चाहता हूं कि आप बतरा जी से कुछ सीखें। आज ये इतने डिमोरेलाईज हैं क्योंकि इनके वहां के लोग इनसे नाराज हैं। मैं इनको उसमें से उभारने की कोशिश कर रहा हूं, परन्तु क्या 'करे वहां की जनता इनसे अभी भी नाराज है। This is time to rise. This is time to come up upto the expectations of the masses of the Haryana, otherwise you will loose your career. Thanks Sir.

श्री अध्यक्षः राम बिलास जी अब आप बोलें। आपको बोलने के लिये दस मिनट का टाईम दिया जाता है। (विघ्न)

प्रो० राम विलास शर्मा (महेन्द्रगढ़): अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे अविश्वास प्रस्ताव पर बोलने के लिए समय दिया, इसके

लिये मैं आपका धन्यवाद करता हूं। अध्यक्ष महोदय, 1991 में जब चुनाव हुए थे तो ये चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी की अध्यक्षता में हुए थे। उस समय चोंधरी भजन लाल इनके सहयोगी थे। उस समय यह सरकार अपने दो वायदों के लिये चुनी गई थी। एक तो यह वायदा था कि हम रावी ब्यास का पानी लाएंगे और एस० वाई० एल० खुदवाएंगे। इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण चौधरी बीरेन्द्र सिह जो हैं जो कि मेरे पड़ोस में बैठे हुए हैं। आज इस बात को पूरे साढ़े चार साल हो गए हैं। इस, सरकार का सबसे बड़ा अपराध यह है कि इन्होंने आज तक रावी–व्यास का पानी लोगों को नहीं दिया और न ही एस० वाई० एल० बनी है। इस वजह से इनसे जनता का विश्वास उठ चुका है। इन्होंने बहुत बड़ा विश्वासघात किया है। अध्यक्ष जी आज तक इस सरकार ने उस विषय के बारे में एक भी मीटिंग नही की और एक भी प्रयास नहीं किया है। अध्यक्ष महोदय, जब हम पहली बार अविश्वास प्रस्ताव लेकर आए थे तो इन्होंने कहा था कि अभी मुझे 6 महीने ही हुए हैं उस वक्त यह आश्वासन दिया था कि इसको 90 दिन में कर देंगे।

13.00 बजे

दूसरे इन्होंने जो बात कही थी वह बहुत कैटेगरीकली और एम्फेथैटिकली कही थी कि मैं ऐसे राज्य की स्थापना करूंगा जिसमें रात के 12 बजे सर सोना पहनकर हरियाणा की बहन बेटी सुरक्षित अपने घर आ जा सकेगी। लेकिन आज कोई जिला ऐसा

बाकी नही है जिसमें बहनों के साथ अत्याचार नही हुए हों। अम्बाला जिले में नारायणगढ़ हल्के में संग्रहणी गांव मे एक हरिजन लड़की संतोष के साथ अत्याचार हुआ जब उसका घरवाला रघुबीर सिंह उलाहना लेकर उन दुष्टों के पास गया तो उन्होंने उसको साईनाइड का जहर देकर मार दिया ताकि यह मुकद्दमा दर्ज न हो जाए। उसका गला घोट कर उसके मुहं में साईनाईड दिया गया था, यह बात मधुबन करनाल को लेबोरेटरी की रिपोर्ट से साबित हो गयी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि उसके मुख में साईनाइड मरने से पहले डाला गया था, जब उसको थोड़ा थोडा सांस आ रहा था। यह ठीक है कि बाद में यह केस रफा दफा हो गया क्योंकि उनका राजीनामा हो गया लेकिन हमने यह मुद्दा उठाया। स्पीकर सर, जब गरीब आदमी की इज्जत चली जाती है और उसकी लडने की केपेसिटी नहीं होती तो वह बात उसके जहन में चली जति।. है, जनता के जहन में चली जाती है। इसी प्रकार से स्पीकर सर, रेणुका शर्मा जो कि 15 साल की थी वह स्कूल से आ रही थी। इस लड़की का बाप रेलवे में कर्मचारी है। इस लड़की से बलात्कार कर दिया गया और बाद मे उसकी लाश को बोरी में भर कर फेंक दिया गया। स्पीकर सर, कौन सी ऐसी सामाजिक संस्था थी जिसने इस बात को लेकर आन्दोलन न चलाया हो लेकिन पुलिस ने यह कहकर इस केस को खत्म कर दिया कि वह लड़की भागी हुई थी। स्पीकर सर, आज धीरपाल सिंह को यदि मेडीकल कालेज पहुंचाना हो तो तनि घंटे में ही सारी कार्यवाही करके पुलिस उनको वहां पहुंचा सकती है लेकिन

इस केस में वह उस लड़की के चरित्र पर शक कर रही है। यदि इस तरह से होता रहा तो फिर क्या हालत होगी? सदन में तो सरकार हम पर भी तीन चार इल्जाम लगाएगी ताकि वह इस मामले से मुक्त हो जाए। परन्तु सर, जनता के जहन में तो यह बात हमेशा के लिये रह जाती है। रेणुका के साथ जो कुछ हुआ है उसको जनता कभी नहीं भूलेगी। इसी तरह से सर, भूतमाजरा में कुसमलता तथा विमला के साथ क्या हुआ यह सबको पता है। (इस सभा श्री उपाध्यक्ष पदासीन हुए)। इस मामले को तीन साल हो गए, मैंने और डा० राम प्रकाश जी ने इस मुद्दे को बार बार उठाया है और कहा है कि इसमें एक पुलिस औफिसर शामिल है। आज इन गरीब परिवारों के लोग अदालतों में नही जा सकते, बड़े राजनेताओं के साथ इनकी सांठगांठ नहीं है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि ये लोग अपने ऊपर हुए अत्याचारों को कभी भूल जाएंगे। डिप्टी स्पीकर सर, पुलिस रेणुका के कातिलों को पकड़ने के त्र कए कहती है कि उसका चरित्र ठीक नहीं था। डिप्टी स्पीकर सर, 15 साल की लड़की का चरित्र कैसा होता है। पुलिस के जिम्मे यह जांच नही थी कि वह उसका चरित देखे, उसके जिम्मे तो यह था कि वह अपराधिये को पकडे। आज भी वे पकड़े नही जा सके है। इसी प्रकर से हिसार में सुशीला के साथ हुआ ये हिसार के मुद्दे को रोक नही सकते। डिप्टी स्पीकर सर, आज हरियाणा में कोई भी मुद्दा हो, सभी में जनता यह मांग करती है कि उनकी जांच सी० बी ० आई० से करवायी जानी चाहिए। ऐसा क्यों है? डिप्टी. स्पीकर सर, इसी प्रकार से दादरी में दुधवा गांव

में एक अशोक नाम के लड़के का मर्डर हुआ था। यह केस डी ० एस० पी ० को भी. दिया गया, एस ० पी को भी दिया गया डी ० आई० जी ० को भी दिया और आई० जी ० को भी दिया गया लेकिन इसकी जांच नहीं हो सकी। मुलजिमों को कटघरे में खड़ा नहीं किया जा सका। इस बारे में जब पुलिस से बात होती है तो वह कहती है कि उनके बड़े राजनेताओं के साथ संबंध हैं। डिप्टी स्पीकर सर, इसी तरह से मैं द्रोपदी केस में किसी पर झूठा आरोप नही लगाना चाहता लेकिन वहां से द्रोपदी गायब तो हुई है, इस बात से तो कोई इंकार नहीं कर सकता। यह अपराध करनाल में हुआ है और इस बात से कोई इन्कार नही कर सकता। पुलिस को अपराधियों का पता लगना चाहिए। इसी तरह से स्पीकर सर, धारूहेड़ा थाने में वहां के एस ० एच० ओ० ने क्या किया? वहां थाने में ही अपराध हो गया। यहं बात ठीक है कि कुछ लोगों के जो मा–बांप हैं वे गरीब हैं और इस वजह से वे अपनी बात कह नही सकते। वे पगला गए हैं परन्तु ये बातें उनके जहन में से नही गयी हैं। डिप्टी स्पीकर सर, कादमा में तो गोली चलाने का कोई ओकेजन ही नही हू था लेकिन वहां पर सरकार गोलियां चलवा सकती है। मैं चौधरी वीरेन्द्र सिंह जी की परफोरमैन्स के बारे में कोई दूसरी तरह से नही कह रहा हूं। वहां पर हरियाणा के कि सान बिजली ही मांग रहे थे। यह उनकी मौलिक जरूरत है और उसके लिये सरकार की जिम्मेदारी है। बिजली जैसी मांग, पानी जैसी मांग के लिये निसिंग में भी चार लोग मारे गए। टोहाना में जो किसान शांति से आदोलन कर रहे थे, वे भी मार गए।

नारनौल में पानी की मांग को लेकर दो नौजवान मारे गए, कादमा में 6 लोग मारे गए। ऐसे निहत्थे और निर्दोष लोग मारे जाएं और फिर सरकार मारने वालों का बचाव करे। सरकार उसको महस्म न करे, इससे तो ऐसा लगता है कि चौधरी भजन लाल जी को इनफर्मेशन देने वाला तन्त्र पूरी तरह से दूषित हो चुका है या फिर उनकी संवेदना में कुछ कमी आ गई है। मुख्यमन्त्री जी भिवानी व रोहतक गए वहां लोग उनसे अपनी ग्रीवैसिज को लेकर मिलना चाहते थे। यह लोगों का कसूर नहीं है, लोग जब मुसीबत से घिरे होते हैं, तब उम्मीद करते है। ऐसे में रोहतक में भी लोगों पर लाठी चार्ज किया गया। बाढ़ में रोहतक खड़ा है भूख से लोग मर रहे हैं, पानी में बच्चे मर गए, औरते मर गई, जानें चली गई, पशु पूंजी चली गई। सन 1947 में यहा आकर लोगों ने अपनी मेहनत से, पसीने से घोंसले बनाये थे वे तबाह हो गये। शोरे। मार्किट तबाह हो गई। लोग यह उम्मीद कर रहे थे कि मुख्यमन्त्री जी आएं हैं कुछ राहत की बात करेगे। कुछ आसू पोछेगे, कुछ जख्मो पर मल्हम लगाएंगे। लोग कुछ कहना चाहते थे, हो सकता है कि वे सुभाष बला जी के खिलाफ कुछ कहना चाह रहे हों। यदि सुभाष बता के खिलाफ लोगों के मन में कोई बात है तो वे कह सकते हैं। इसमें कोई पाप नहीं है। मुसीबत के समय में वे कह सकते हैं लेकिन उनको लाठी चलाकर के चुप कराते है। डिप्टी स्पीकर सर, मुख्यमन्त्री जी ने कहा कि राम भजन जी भिवानी में थे और राम भजन जी ने भी कहा कि मैं था परन्तु ग्रीवैंसिज कहते समय भी लोगों पर मुकद्दमें बने। राम भजन जी हरियाणा विकास पार्टी के

एम ० एल० ए० है, इनके लड़के पर 307 का मुकदमा ठोक दें। डिप्टी स्पीकर सर, मुख्यमन्त्री जी कहते हैं कि उन्होंने पत्थर चलवाए। मुख्यमन्त्री जी वहां रुकते और लोगों के बीच में जाकर के कहते कि इस मुसीबत में पीड़ा है तो मुख्यमन्त्री जी की बात का वजन ज्यादा बढ़ता और राम भजन जो को लोग यह कहते हैं कि यह गलत है। डिप्टी स्पीकर सर, शफाली नाम की लड़की पेहवा में 19–9–95 को मार दी गई। उस बारे मे शिकायत की कि अमेरिका से लोग आते हैं, इनके पहले कही संबंध हुए थे लड़की का परिवार गरीब है और इस लड़की की जान को खतरा है। 19–9–95 को वह लड़की मार दी, कोई मुकदमा नही बना। या तो हरियाणा महाराष्ट्र बन गया है। जैसे शरद पवार के समय में बम्बई में बांदरा की एक बस्ती में दाउद इब्राहिम आर० डी ० एक्स बम विस्फोट करके भाग जाए। क्या आज हरियाणा इतना असुरक्षित हो गया है। सर, आज लोग राहत की उम्मीद करते है हमें अविश्वास प्रस्ताव लाने का शौक नही है, यह तो हमे मजबूरी में करना पड़ता है क्योंकि लोगों के बीच में हम रहते हैं। भजन लाल जी को मुख्यमन्त्री हरियाणा की जनता ने बनाया है, हमने नहीं बनाया है। परन्तु साढ़े चार साल की जो इस सरकार की परफौरमैंस है, इनके आसपास के लोगों की जो परफौरमैन्स है उसके प्रति लोगों मे गुस्सा बढ़ रहा है। लोग यह सह सकते हैं कि विकास कम हो, सड़कें कम बने परन्तु लोगों का सम्मान कम हो जाए, बहन बेटियों की इज्जत कम हो जाए, लोग यह नही सह सकते। यमुना पार मुजपफर नगर में एक कांड हुआ था। तब वहां

एक बड़ी सरकार चलती थी। आपस में राजनीतिक विचारधाराए विपरीत हो गई थीं, जिसके कारण वह सरकार चली गई थी। आज क्योंकि कांग्रेस के लोगों की इस देश में मैजोरिटी है, इसलिये हम जो बात कहते हैं वह टैकनीकल तौर पर पास नहीं हो सकती। हम जो रात कहते हैं, वह बात कानून का दर्जा नहीं ले सकती। सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले को रिवर्ट करने के लिये, उस फैसले से बचने के लिये एक कानून ले आए कि यह एक नवम्बर 1966 से हरियाणा के इंजीनियर्स की सीनिऐरिटी फिर से तय होगी। हमने लौकिक शक्तियां तो देखी थीं लेकिन अलौकिक शक्तियां भी इस सरकार में आ रही हैं। जो लोग यह दुनिया छोड़ कर चले गये हैं, उनकी सीनऐरिटी यह सरकार तय करगी। उनकी सीनऐरिटा तो वहां पर तय हो चुकी है। किस तज से सुप्रीम कोर्ट के निर्णय कौ आदर के साथ सिर झुकाकर कबूल करना चाहिये। किस तरह से सुप्रीम कोर्ट ने हमारे आई० पी ० एस० आफिसर्ज के खिलाफ निर्णय दिया ओर आते ही हम उनको रिवार्ड पर चढ़ा दें। लोग इस बात से क्या गेन करते हैं लोग इससे कैसा अपोनियन फार्म करते हैं कि जो आदमी कानून की निगाह में गुनाहगार है जिसको भारत का सुप्रीम कोर्ट बड़े सोच समझ के बाद दण्ड देता है, जेल भेजता है, सुप्रीम कोर्ट ने तो यहां तक कहा कि यह वर्दी और पेटी अभी उतार कर इनको सीधा ही जेल ले जाओ। That was the decree of the resentment of the Supreme Court and here we are rewarding. Just they came out from the jail and we are rewarding them. कागज लिये तैयार खड़े हैं। बहुत से

पुलिस अफसर ईमानदार भी हैं, आई० ए० एस० में भी बढिया लोग हैं। परन्तु यहां इस सरकार के वक्त में रिवार्ड उसको मिलता है जोकि गुनाहगार हो। (शोर) डिप्टी स्पीकर साहब, मेरे पास ट्रिब्यून अखबार है, जिसने फोटो सहित छापा है कि "Wheat worth rupees one crore damaged." हैफड ने एक करोड का गेहूं सड़क पर फेंक दिया। बाद पीड़ित हरियाणा तरस रहा है, वह गेहूं सउ गई। न आदमी के काम आई और न ही किसी जानवर के ही काम आयी। न किसी की नेग्लीजैस के लिये जिम्मेवारी ठहरायी गयी है और न ही कोई कटघरे तक पहुंचा है। मिल जुल कर सब लोग अपना अपना रास्ता निकाल रहे हैं। इस के इलावा मेरे पास एक अखबार 'मजदूर मोर्चा' के नाम से है। इसमें लिखा है कि पुलिस अधीक्षक गुड़गांव ने पुलिस लाईन की पांच बीघा जमीन ही बेच दो। हमारे डी ० जी ० पी ० साहब का नाम दिया है कि कुटेल गांव का वीर सिंह नाम का एक सरपंच बना था, वह पुलिस में भर्ती करवाता है। स्टेट का डी ० जी ० पी ० हो और उसके खिलाफ अगर इस तरह से क्ये' तो उस' अखबार की ही यह हिम्मत है कि वह इस तज की खबरें छापता है। उसके बाद भी यह सारा मामला ऐसे ही चलता रहता है। मेरे पास जनसत्ता अखबार है पदकारों की भी बड़ी कठिन जिम्मेदारी है, ये बलवन्त तक्षक लिखते हैं। हत्याकांडों की सच्चाई पर पर्दा नामक हैंडिंग है। इसमें इस सरकार के राज में हत्याओं का जिक्र है। चौधरी भजन लाल जी के नेतृत्व में चलने वाली इस सरकार के कारनामे अखबार लिखते हैं और आगे से भजन लाल जी क्या कहते हैं कि

सुशीला कांड का मामला तो हमारे हिसार का मामला था। मैंने उस पर से नकाब उतार कर रख दिया है, चाहे कोई भी उसमे सम्मिलित क्यों न हो। हम यह नहीं कहते कि चौधर। भजन लाल जी के मन मे बहू–बेटियों के लिये इज्जत नही है, इसलिये शायद उन्होंने अपनी सरकार के फौरन बनने के बाद शुरू में ही कानून और व्यवस्था का जिक्र किया था। इन्होंने कहा था कि मेरे राज में सभी बहू–बेटियों की इज्जत सेफ है और उनको कोई खतरा नही है। परन्तु चौधरी भजन लाल जी आपके साढ़े चार साल के राज में आपकी पुलिस के आचरण के कारण आपका कहा हुआ वह वाक्य बिल्कुल उल्ट हो गया है। यहां पर आपने जिस सम्मान और उम्मीद के साथ कहा था just it has been reverted by the conduct of our Police Officers. मुझे तो यह ऐसा लगता है कि कांग्रेस की यह संस्कृति है कि सिंदूर को तंदूर मे जलने की कोई परम्परा ही डाल दी है। डिप्टी स्पीकर साहब, यह भारत है। अब तो पत्रकारों की कलम ही यह सब कुछ बिना किसी झिझक के लिखने लग रही है। गाड़ी में जाते हुए दक्षिण भारत की. एक अखबार मलयालम भाषा में हम देख रहे थे। उसमें एक कार्टून था। जो आदमी अपनी. अखबार पढ़ रहा था हमने उमसे पूछा कि इस कार्टून के नीचे क्या लिखा है। उसने कहा कि इसमें लिखा है कि दिल्ली की तरफ लड़की मत देना जहां काग्रेस का राज हो, वहां लड़की मत देना जहां लड़कियों की कमी हो गई है, वहां तदूंर गर्म करने के लिय नैना. साहनी को जलाते हैं। डिप्टी स्पीकर साहब, Things have been corroborated. हरियाणा में भी

इस तरह के जघन्य अपराध हो रहे हैं। इसलिये चौधरी भजन लाल जी से मैं गुजारिश करना चाहता हूं और मैं इनको सलाह देना चाहता हूं कि ये चाहे आपके पुलिस के लोग कुछ भी कह दें हम उस तरह का आरोप किसी राजनेता पर नहीं लगाते परन्तु इस बात को साफ करने के लिए कहते है कि जब तक सुशीला के कातिलों का पर्दाफाश नहीं होता, जब तक रेणुका के कातिलों का मुह काला नही होता, जब तक यमुनानगर के लोगो को पता नही चलता और जब तक संग्रहणी की सन्तोष के बारे मैं पता नही चलता, जब तक पेहवा की शैफाली के हत्यारों का पता नही लगता, तब तक हरियाणा आपकी बात स्वीकार नहीं करेगा। (घंटी)

श्री उपाध्यक्षः शर्मा जी, आपका टाईम हो गया है।

प्रो० राम बिलास शर्माः सर, मैं कनकलूड कर रहा हूं। क्योकि मेरी मर्यादा है मैं इस पार्टी का अकेला सदस्य हूं और मुझे यह भी मालूम है कि आप लोगों ने समय पहले लिख कर रखा हुआ है, इसलिए मैं कनकलूड कर रहा हूं। उपाध्यक्ष महोदय, यहां चौधरी भजन लाल जी किस तरह से. हरियाणा की पैरवी कर रहे, हैं। एस०वाई०एल० की, रावी व्वास के पानी की और ला एण्ड आर्डर की। इन सारी बातों के बावजूद इतना बड़ा विनाश हुआ है हरियाणा में। हरियाणा जल मगन हो गया, इनकी लापरवाही के कारण। रिवाडी के डिप्टी कमिश्नर को इनफार्म करने के बाद भी बाढ़ के पानी को रोकने की कार्यवाही नही होती। रिवाड़ी के लोग कहते है कि यह तो सरकार ने कराया है। डिप्टी स्पीकर साहब,

एक बात मैं और कहना चाहता हू कि प्राइम मिनिस्टर हरियाणा मे बहादुरगढ़ के पास भोजन खाने तो आ सकते हैं परन्तु मुसीबत मे घिरे हुए लोगों को देखने की उनको फुरसत नहीं। यह इनका तरीका है। इनकी पार्टी 'हरियाणा के लोगों कें बारे में कितनी चिन्ता करता है, यह इस बात से साबित होता है। डिप्टी स्पीकर साहब, इन कनकलुजन मैं एक दात कहना चाहता हूं कि इस सरकार के दामन में फूल कम है और काटे ज्यादा है और कोई वफा नही इनसे वायदा। इस सरकार की साढ़े चार साल की परफारमैंस में कोई एचीवमैंट नही है, उपलब्धि नहीं है। उस मे वायदा खिलाफी एं, बेवफाई है और संवेदना शून्य इनका आचरण है। ऐसा लगता है कि अब तो इनकी हरियाणा के लोगों के साथ हमदर्दी भी नही है। मैं अविश्वास प्रस्ताव पर यह कहना चाहता हं कि चौधरी भजन लाल जी चाहे इसको दूसरी तरह से लें परन्तुं उनके लिए एक अवसर है कि ये जो बातें कही गई हैं इनमे कही पर भी कोई अतिश्योक्ति नहीं है। यदि इन बातो पर ये एक बार ठडे दिमाग से विचार करेंगे तो ये स्वयं कहेंगे कि यह हमारे से 'भूल हुई है, यह हमारे से लापरवाही हुई है। ये बाढ़ के मामले में लाख बातें यहां पहते रहे कि हमने यह रोटी दे दी, यह पानी दे दिया परन्तु हरियाणा का आदमी इस बात को मानने के लिए तैयार नही हैं। बस यही मैं कहना चाहता था।

वैयक्तिक स्पष्टीकरण–

(1) औद्योगिक प्रशिक्षण राज्य मंत्री द्वारा

औद्योगिक प्रशिक्षण राज्य मन्त्री (श्री तेजेन्द्र पाल मान): डिप्टी स्पीकर साहब, मैं पर्सनल एक्सप्लेनेशन देना चाहता हूं। (विघ्न) मैंने अपना पर्सनल एक्सप्लेनेशन देना है .... जो मर्जी आए मुह से निकाल दें। (शोर) डिप्टी स्पीकर साहब, कल भी एक विपक्ष के साथी ने बड़ी गैर जिम्मेदारी से एक बात कही। उस आदमी के चाल चलन को सारे जमाने को मालूम है, वह शराबी कबाबी है। उसने बहुत गैर जिम्मे– दारी से मेरे बारे में कीकर के पेडू काटने के बारे में कहा। जिस चीज को मैंने कभी सपने में भी नही सोचा कि इस तरह की कोई बेहूदा हरकत भी की जा सकती है, वह मैं कैसे कर सकता हूं। ये लोग ही ऐसा किया करते हैं, इसलिए इनको यही सपने आते हैं। आज फिर सम्पत सिंह जी ने कहा। मैं तो सदन के सामने एक बात बताना चाहता हूं कि मेरे परिवार की ईमानदारी की हिस्टरी के मारे में सारे हरियाणा में कस्म खाई जा सकती हं। मेरे परिवार के बारे में भी और मेरे व्यक्तिगत जीवन के बारे में भी कस्म खाई जा सकती है। करनाल जिले में तो बच्चे–बच्चे को यह मालूम है कि मैं किस हैसियत का इन्सान हूं। गलत बात करना और गलत काम करना तो मेरी तौफीक ही नहीं है लेकिन इनको मेरे से बड़ी तकलीफ है। जब इनका राज था तब भी इन्होंने बड़ी भारी कोशिश की कि इस परिवार को नष्ट किया जाए लेकिन परमात्मा रखने वाला था। सारा जमाना और सारी दुनिया जानती है कि इनकी कुर्सी की पहली टांग मेरे हादसे से हिली थी। इन्होने मेरे से हस्तक्षेप किया, मेरे ऊपर कत्ल के मुकदमे बनाए और मरवाने

की कोशिश की लेकिन मैं नहीं मरा तो मेरे ऊपर मुकदमे बना दिए। मेरी जमीन छीनने की कोशिश की। यह जमीन जिसका जिक्र सम्पत सिंह जी ने किया। सम्पत सिंह जी आपके पास किसी जमाने में साईकिल भी नहीं होती थी लेकिन आज आप करोड़पति बन गए। हम तो वहीं के वही हैं। मेरे बाप दादा मुझे जो प्रोपर्टी दे कर गए थे, वह कुछ न कुछ थोड़ी हुई होगी, हमने उसको बढाया नहीं। जायदाद के नाम पर इनको तकलीफ होती है। 1947 में पाकिस्तान में हमारे पास जो जमीन थी, उसके बदले में हमें यहां पर एक गांव मिला था। वह हमारे परिवार की जमीन है, किसी भाई का उस पर किसी प्रकार का कोई हिस्सा नहीं है। छोटा सा मौजा था वह मेरे परिवार को मिल गया और उसमें 1947 से किसी भाई का किसी प्रकार का कोई हिस्सा नहीं है। आज भी वहां पर किसी का घर नहीं है, सिर्फ हमारा फार्म हाउस है। अगर कोई जमीन पंचायत के नाम है तो वह वैसे ही गैरमारूसी हो गई लेकिन वह जमीन 1947 से हमारे परिवार के पास है। सन् 1947 में वह जमीन सरकार ने हमें दी थी। हमने ही उस जमीन को आबाद किया है। उस जमीन को मेरे पिता जी ने और मेरे चाचा जी ने आबाद किया है। फिर उसके बाद बदअस्तुर जैसे हैरीडिटरी कोई चीज आती है, वह मेरे हाथ में भी आ गई। लेकिन इनको बड़ी तकलीफ है क्योंकि इन्होंने अपने समय में लोगों से नौकरियों के लिए भी पैसे लिए। इन्होंने जमीनों पर नाजायज कन्ने किए। लोगों से जमीनें खाली करवाई। बहू बैटियों

को मारा। लोगों के कत्ल करवाए फिर भी ये इस तय से गैर जिम्मेदाराना बात किए जा रहे हैं।

श्रम एवं रोजगार मंत्री (चौधरी कृष्ण मूर्ति हुड्डा): आप इस बात का भी जिक्र कर दें कि इन्होंने सरे आम लोगों को गोलियों से कत्ल करवाया। (शोर)

श्री तेजेन्द्र पाल मानः हां गोली का मैंने कह दिया है। डिप्टी स्पीकर साहब, हम सरकार में होते हुए भी कायदे कानून के दायरे में हैं। डिप्टी स्पीकर साहब, जब वह जमीन मेरे परिवार को मिली, उस समय वहां पर जंगल होता था और जिस भाव में वह जमीन ली उस समय जमीन उसी भाव में मिलती थी। लेकिन इनको वह जमीन खटक रही थी, इन्होंने वह जमीन लेना चाही और अपने दामाद को देनी चाही। उस जमीन के वारे में, जब इनका 1988 में राज था, उस समय एक हादशा हुआ। जब इन्होंने उस जमीन को हड़पने की कोशिश की तो करनाल में दफा 144 लगने के बावजूद भी हजारों लोगों ने करनाल में प्रदर्शन किया। मैं तो उस समय मौके पर नहीं था लेकिन नेहरा जी ने और दूसरे सारे भाईयों ने वह हादशा देखा था। करनाल जिले के हजारों लोग इनकी बदमाशियों के खिलाफ सड्कों पर आ गए थे। इन्होंने उस समय अपने अधिकारियों को जगह जगह पर भेजा और उनसे लोगों को कहलवाया कि आगे दफा 144 लगी है, आप न जाए, आपको गोली लग जाएगी। लेकिन उसके बावजूद भी गरीब किसान, गरीब मजदूर करनाल जिले के सारे गांवों से हर दिन एक

एक हजार तक आते रहे। जिस दिन हमने मुजाहिरा करना चाहा उस दिन हमें करनाल शहर में मुजाहिरा नहीं करने दिया। तो हजारों की तादाद में लोगों ने शहर से बाहर ट्रैक्टरों की 8 किलोमीटर लम्बी लाईन लगाई। इनको उस जमीन की बहुत तकलीफ है। उस समय इनका प्रभाव था जिसके कारण ये लोगों से नोटों की माला लिया करते थे। हम तो माला भी नहीं लेते। हम किसी से पैसा नहीं लेते। इनको बड़ी तकलीफ है क्योंकि ये उस समय लोगों से हजारों रुपए की माला लिया करते थे लेकिन आज इनको वहां पर कोई दो रुपए की माला भी नहीं देता। अगर ये किसी गांव में चले जाएं तो इनके साथ 10 आदमी भी इक्ट्ठे नहीं होते। हमने इनकी कारगुजारी और जहनियत सब लोगों को बताई। हमने लोगों से कहा कि आप इनको पैसों की मालाएं मत दो। हमने लोगों से कहा कि आप गरीब आदमी हो, इसलिए आप अपने खून पसीने की कमाई इन नालायक आदमियों को मत दो। इन्होंने तो सारे हरियाणा प्रदेश को लूट रखा है। जब ये राज में थे तो फैक्टरी वालों से कहा करते थे कि हमें टर्न ओवर का हिस्सा चाहिए। इनको यह भी नहीं पता कि टर्न ओवर क्या होता है और मनाफा क्या होता है। ये लोगों से नौकरियों के लिए पैसा लिया करते थे और हर प्रकार के कर्मचारियों से पैसा लिया करते थे। मुझे यही कहना था।

(2) प्रो० सम्पत सिंह द्वारा–

प्रो० सम्पत सिंहः सर, मैं भी पर्सनल एक्सप्लेनेलन देना चाहता हूं। डिप्टी स्पीकर साहब, मैं इस चीज का जिक नहीं, करूंगा कि इन्होने अपने पर में एक जमा दारनी का कत्ल कर दिया या अपने फार्म में चार हरिजन व पिछड़े वर्ग से संबंधित मुजारों का कत्ल कर दिया। मैं तो जो इन्होंने जमीन पर जबरदस्ती कब्जा किया हुआ है, उसका जिक्र करूगा। इससे पहले मैं यह बात कहना चाहूंगा कि इन्होंने बोलते हुए यह कहा कि मैं पैसों की मालाएं लेता का। मैं कहता हूं कि मैं चुनाव जीता या हारा, मैंने किसी भी आदमी से चुनाव के बाद दो रुपए की भी माला नहीं डलवायी। इन्होंने एक बात कही कि हम तो खानदानी रईस है। खानदानी होना अलग बात है लेकिन इसका मतलब यह भी नही कि खानदानी' रईस हो जाये तो किसी की जमीन पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया जाए और गरीब आदमियों की जमीन पर कब्जा कर लिया जाए। या कोई गरीब आदमी आगे उन्नति की तरफ यदु तो उसमें ये रुकावट बनें। खानदानी कहने से कोई बुरी बात' दब नही सकती.। मेरे पास ताहरपुर गांव जिला करनाल की फर्द जमा बन्दी है। इस फर्द में लिखा है, जो कि 1979– 80 की है तेजन्द्र सिंह सुपुत्र श्री शमशेर सिंह बिला लगान काबज इसका मतलब यह है कि इस जमीन पर इनका जबरदस्ती कब्जा है। पहले यह जमीन 'किसी और की थी अब इन्होंने उस पर जबरदस्ती कब्जा किया हुआ है। इसके पढ्ने से साफ जाहिर है कि बाकायदा इनका जबरदस्ती कन्ना है। खानदानी रईस कहने से कोई खानदानी रईस नही बन जाता।

श्री जगदीश नेहराः सम्पत सिंह जी, मैं एल०एल०बी ० हूं और मुझे अच्छी तरह पता है कि इसका क्या मतलब है। बिला लगान का मतलब है कि इनकी जमीन पर पहले किसी ने कब्जा किया हुआ होगा और बाद में इनके बुजुर्गो ने अपनी जमीन वापस ली होगी। इस बिला लगान जमीन का मतलब यह है कि बेकार पड़ी जमीन पर कोई एडवर्स पोजैशन होगा। इसका मतलब यत् नही कि उस पर जबर– दस्ती कब्जा कर लिया। उस समय इन्होंने वह जमीन ले ली होगी। ये लीगली उस जमीन के मालिक हैं। इनके बुजुर्गो ने अपनी जमीन निकाली होगी इसलिए अब इस जमीन पर इनका कब्जा है। (शोर)

प्रो० सम्पत सिंहःयदि आप चाहते है तो मैं यह रिकार्ड सदन की पटल पर रख सकता हूं। (शोर)

श्री जगदीश नेहराः इनका उस जमीन पर जबरदस्ती कब्जा नही है। (शोर)

बैठक का समय बढ़ना

Mr. Deputy Speaker : Is it the sense of the House that the time of the sitting be extended by two hours.

Voices : Yes Sir.

Mr. Deputy Speaker : The time of the sitting is extended by two hours.

वैयक्तिक स्पष्टीकरण (पुनरारम्भ)

(3) आबकारी तथा कराधान राज्य मंत्री द्वारा

श्री उपाध्यक्ष आप सभी बैठिए। अब 'श्री जय प्रकाश गुप्ता जी अपनी बात कहेंगे।

श्री जय प्रकाशः उपाध्यक्ष महोदय, नो–काफीडैसं मोशन पर बहस करते हुए करनाल के द्रोपदी कांड का जिक्र मेरे इन साथियों ने किया। डस कांड में इन्होने मेरा नाम लिया इसलिए मैं इस बारे में अपनी पर्सनल एक्सप्लेनेशन देना चाहता हूं। डिप्टी स्पीकर साहब, करनाल में द्रोपदी केस के बारे में चौधरी सम्पत सिंह तथा छतरसिंह चौहान जी ने जिक्र किया है। (विघ्न) मेरा नाम इसमें लिया है। मैं आपको इस केस के बारे में बताना चाहता हूं। 4– 7– 1995 को वह लड़की अपने किसी फ्रैंड के साथ करनाल में किसी के बर्थ डे पर गई थी। जैसे कि उसकी मां ने प्रैस के सामने और अपनी कम्पलेंट में बताया है, वह 4 तरिख को अपने किसी फ्रैण्ड के साथ गई थी, उसके बाद वह घर नही आई। उस की मां 6 तारीख को मेरे पास आई और मुझे बताया कि मेरी लड़की चार तारीख से घर नही आई। मैंने एस०पी ०, करनाल से सम्पर्क स्थापित कर उस लड़की को ट्रेस करने के लिए कहा। कांग्रेस का इतिहास 110 साल पुराना है। हम लोग लोगों का मान– सम्मान करते हैं। उस लड़की की मां ने जहां–जहां बताया वहां उस लड़की को ढूढने का पूरा प्रयास किया। जिस तरीके से उसकी मां ने बताया पुलिस ने उसके साथ जा कर बाकायदा छानबीन की मगर वह बालिग लड़की अपनी मर्जी से करनाल से

कहीं गई। डिप्टी स्पीकर साहब, आपको मालूम ही है कि लड़कियां तो आती–जाती रहती है। उसकी मां की कम्पलेंट पर सरकार ने उसको ट्रेस करवाने की पूरी कोशिश की। मेरे भाई आदरणीय श्री सम्पत सिंह जी ने कहा कि वह मेरे घर में या दुकान में काम करती थी। हमने दूसरों की दुकान में अपना पार्टी आफिस खोला था, वह उस समय उस आफिस में काम करती थी। कांग्रेस कमेटी के आफिस में उस लड़की ने काम किया। पहले वह लड़की पी. ०डब्ल्यू०डी० में डेली वेजिज पर काम करती थी। वह नौकरी से खाली थी। उस लड़की की मां उस लड़की को ले कर मेरी मिसेज के पास आई थी और उस लड़की को कही नौकरी पर रखने के लिए सिफारिश करने को कहा। मेरी मिसेज से उसने बताया कि घर में खाने–पीने की दिक्कत है क्योंकि हमारी आय का कोई. साधन नहीं है। इस लड़की के पिता ने दो शादियां की हुई हैं। दूसरी शादी के कारण धुर में डिस्प्यूट रहता था। इस लड़की को कहीं नौकरी दिलवा दो। मेरी मिसेज ने इस बारे मुझे बताया तो मैंने उस लड़की की मां को बताया कि हमारे कांग्रेस पार्टी के आफिस में जगह 'तो है लेकिन वहां कोई रैगुलर पे वगैरा नहीं होती। कांग्रेस आफिस में जब फण्डज वगैरा आते हैं तो उसमें? से जो कुछ देना सम्भव होगा उसको दे दिया करेंगे। वह लड़की कहां गई इसका हमें कोई इल्म नहीं है। उस लड़की के कही आने में हमारा कोई हाथ नहीं है। हमारा दामन बिछल साफ है। डिप्टी स्पीकर साहब, इस बारे कोर्ट में भी केस चल रहा है और 5 तारीख लगी हुई ई। मेरा निवेदन है कि आप इस हाउस की एक

कमेटी बना दें जो इस बारे में छानबीन करे। हाउस की कमेटी की छानबीन में अगर कहीं पर भी मुझ पर कोई आरोप लगे या मैं दोषी पाया जाऊं, दोनों हाथ उठा कर मैं कहता हूं कि कमेटी जो भी सजा मुझे देगी वह मे भुगतने के लिए तैयार हूं। अगर मेरा कोई दोष न मिले तो जो लोग इस मामले में अपनी राजनैतिक रोटियां सेंकने में लगे हैं तथा इस मामले को हाउस में तथा बाहर उठा रहे हैं उनको सजा दी जानी चाहिए ताकि आगे के लिए इस प्रकार की कोई ओछी बात न उठ सके। यह हाउस मुझे या इनको सजा दे ताकि पोलिटिकली कोई छींटाकशी न हो। इस केस को जानबूझ कर उछा ला जा रहा है। डिप्टी स्पीकर साहब, इस लड़की का केस पहला नहीं है। पहले भी केस हुए हैं। सम्पत सिंह जी की पार्टी ने या किसी भी अन्य पोलिटिकल पार्टी ने किसी को पूछा तक नहीं है। करनाल के ड़ाईवर का केस हुआ था और उसमें भी ऐलिगेशन्ज लगे थे।

प्रो० छतर सिंह चौहानः उपाध्यक्ष महोदय, मेरा प्वायंट आफ आर्डर है। मेरे माननीय सदस्य ने मेरा नाम लिया कि मैंने द्रौपदी केस में उनके ऊपर संदेह की उंगलियां उठाई हैं। उपाध्यक्ष महोदय, यह मैंने नहीं कहा है, यह तो आप अखबारों की कटिंग उठा कर देख लें। उसमें उस लड़की की मां का व्यान है कि आबकारी एवं कराधान मन्त्री का इसमें हाथ है। (शोर एवं व्यवधान)

श्री जय प्रकाशः उपाध्यक्ष महोदय, इन्हें कहिए कि ये पहले मेरी बात सुनें। जब दो बच्चों के गम होने की बात आई तो वे घर में ही मिले, इसी तरह से ड्राईवर की बात आई थी। उपाध्यक्ष महोदय, ये हमेशा ही ऐसी मातें करते हैं। मैं यह कहना चाहता हूं कि जिस बात में वजन हो वही बात इन्हें यहां पर कहनी चाहिए। ऐसे हो नहीं जो दिल करा उसको बोल दिया। आज ये जो भी पब्लिक मीटिंग करते हैं वहां पर इनको कोई भी साथ नहीं मिलता है। आप इस बारे में अखबारों की कटिंग देख लें। उपाध्यक्ष महोदय, इन्होंने जो धरना लगाया हुआ है वहां पर कोई औरत भी करनाल की नहीं है। वहां पर जो भी औरत आती है उसे ये बाहर से ला कर वहां बिठाते हैं। उपाध्यक्ष महोदय, आप हाउस की कमेटी बना में और उनसे यह जानकारी करवाएं। अगर मैं दोषी पाया गया तो वो सजा मुझे वह कमेटी देगी मैं मानने के लिए तैयार हूं वरना इनको सजा दी आए।

प्रो० सम्पत सिंहः उपाध्यक्ष महोदय, मेरा प्वायंट आफ आर्डर है। (शोर) गुप्ता जी ने फरमाया था कि करनाल में बहुत सी ज्यादतियां हुई हैं। उपाध्यक्ष महोदय, करनाल में जो ज्यादतियां हुई हैं, इस सरकार की तरफ से जुर्म हुए हैं तो अगर हम इनके खिलाफ धरने नहीं दें, इनके खिलाफ नहीं गेलें तो वह हमारे कर्त्तव्य में कोताही होगी। (इस समय श्री अध्यक्ष पदासीन हुए)। अध्यक्ष महोदय, वहां पर लड़की के मां–बाप ने कहा है कि द्रौपदी को इनके (गुप्ता के) लड़कियों के साथ संबंधों के बारे में पता

चल गया था। तो स्पीकर साहब, इनको डर था कि कहीं वह इनका भांडा–फोड़ न कर दे इसलिए उसको गायब करवा दिया गया। साथ में ये यह भी बताएं कि पानीपत में इनकी टांग कैसे टूटी थी। वहां पर भी लड़कियों का ही मामला था। अध्यक्ष महोदय, इस विषय में आप सी ०बी ०आई० से इंक्वायरी करवाएं।

वाक आउट

श्री अध्यक्षः नो कफिडैस मोशन पर डिस्कशन के लिए दो घंटे का टाईम दे दिया गया था जिसमें सी ० एम० साहब ने भी जवाब देना था। इस मोशन पर डिस्कशन 11.10 पर शुरू हुई थी और अब 1.40 हो गए हैं। याने। दो घंटे से टाईम तो पहले ही ऐक्सीड हो चुका है। जो जो मेन पार्टीज हैं, हमने उन सभी के ली डर्ज को यानी सम्पत सिंह जी को, चौधरी बंसीलाल जी की पार्टी के प्रो० छतर सिंह चौहान को, राम बिलास शर्मा को और चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी को पहले ही बोलने के लिए समय दे दिया है और अब इतना ही काफी है। हर एक मैम्बर को तो बोलने के लिए टाईम नहीं दिया जा सकता। (विघ्न) अब मुख्य मन्त्री जी बोलेंगे।

चौधरी ओम प्रकाश बेरीः अध्यक्ष महोदय, हमें तो बोलने के लिए टाईम मिला ही नहीं, हम कहां गए। (शोर एवं व्यवधान) (इस समय बहुत से सद्स्य बोलने के लिए खड़े हो गए)

श्री अध्यक्षः जसविन्द्र जी, आपके लीडर्ज ने माना था कि आपकी पार्टी से केवल वे ही बोलेंगे और कोई नहीं बोलेगा। हर एक मैम्बर को टाईम देना जरूरी नहीं है।

डा० राम प्रकाशः स्पीकर सर, आपने केवल मुझे ही बोलने के लिए टाईम नहीं दिया है। सर, यह तो अनप्रैसीडैंटिड होगा।

श्री अध्यक्षः आपके लिए तो सारी चीजें ही अनप्रैसीडैंटिट हैं। (विघ्न) You are not allowed to speak. That is all. (Interruptions).

डा० राम प्रकाशः मैं बैकवर्ड क्लास के लोगों के साथ और एस०सीज० के लोगों के साथ जो अत्याचार हो रहे हैं, के बारे बताना चाहता हूं। अगर मुझे यहां पर बोलने नहीं दिया जाएगा तो यह बहुत बड़ा अन्याय होगा। या तो आप हमारी पार्टी को मान्यता दे देते तो एक ही सदस्य बोल लेता लेकिन अगर आपने हमारी पार्टी को मान्यता नहीं दी एं तो मेरा भी बोलने का हक बनता है। इसलिए हमें बोलने का टाईम दें। अगर आप मुझे बोलने का समय नहीं देगे तो यह जो बैकवर्ड क्लास की आवाज है, एस ०सइाज० की आवाज है, उसके साथ अन्याय होगा। डस बारे में जो चिट्ठा है, वह हाउस मे न बताया जा सके, इसलिए मुझे बोलने मे रोका जा खा है। अभी सिर्फ थोड़े ही आदमी बोलें है। अगर मुझे बोलने के लिए समय नही दिया जाएगा तो मैं प्रोटैस्ट के तौर पर वाक आउट करने जा रहा हूं।

श्री अध्यक्षः राम प्रकाश जी, आप बैठिए आपकी बात हो चुकी है। (विघ्न)

डा० राम प्रकाशः मुझे बोलने का समय नही दिया जा रहा है इसलिए मैं प्रोटैस्ट के तौर पर सदन से वाक आउट करता हूं।

(इस समय माननीय सदस्य डा ० राम प्रकाश तथा श्री ओम प्रकाश बेरी बोलने के लिए समय न दिए जाने के कारण सदन से वाक आउट कर गए)

प्रो० सम्पत सिंहः चूकि बैकवर्ड क्लास के लोगों के साथ अन्याय हो रहा है इसलिए हम भी एज ए प्रोटैस्ट सदन से वाक आउट करते हैं।

(इस समय जनता पार्टी के सदन में उपस्थित सभी सदस्य मदन से वाक आउट कर गए)

सिंचाई मन्त्री (श्री जगदीश नेहरा): स्पीकर सर, ये सुनने की हिम्मत नही कर सकते इसलिए ये वाकआउट कर रहे हैं। अब मुख्य मन्त्री जी बोलेंगे तो इनको उनकी बातें सुननी चाहिए। सर, आप इनका तरीका देखिए कि ये सुनने की हिंम्मत नहीं कर सकते। (विघ्न)

नेमिंग आफ मैम्बर

प्रो० छतर पाल सिंहः स्पीकर सर, अब वे लोग तो सारे चले गए है और अब केवल मैं ही बोलने के लिए रह गया हूं। इसलिए अब तो आप मुझे बोलेने के लिए टाईम दें। (शोर एवं व्यवधान)

श्री अध्यक्षः अब चीफ मिनिस्टर साहब बोलेंगे। छतर पाल सिह जी, आप बैठिए। आपको बोलने के लिए अलाउ नहीं किया गया है।

प्रो० छतर पाल सिंहः सर, मेरी भी पार्टी है, मुझे भी बोलने दें। (विघ्न) मुझे भी इनका कच्चा चिट्ठा खोलना है।

Mr. Speaker : It is a fag end of the Session. (Interruptions & Noise) कोई बदमजगी आप पैदा न करें। I advise you to please take your seat.

प्रो० छतर पाल सिंहः सर, मैं बदमजगी पैदा नही कर रहा हूं। मैं तो नो काफिडैन्स मोशन पर बोलना चाहता हूं। मेरे भी इम मोशन पर साईन है लेकिन आप मुझे बोलने नही देना चाहते है क्योंकि मैंने कच्चा चिट्ठा खोलना है।

Mr. Speaker : May be, but everybody is not supposed to speak. Please take your seat. (Noise & interruptions).

(प्रो० छत्तर पाल सिह बिना इजाजत बोलते रहे)

Mr. Speaker : Nothing to be recorded. (Noise &

Interruptions) Prof. Sahib, you are not allowed to speak. (Noise & Interruptions) Nothing to be recorded. Prof. Sahib. please take your seat, you are not allowed to speak. प्रो० साहब, आप जिस मूड मे खड़े हैं, यह आपत्तिजनक है। यह कोई लाठी नही है जिसका सहारा आपने ले रखा है। आप जवान आदमी है, ऐसे खड़े न हो। (शोर एव व्यवधान) Prof. Sahib, if you persist then I shall have to name you. You please take your seat. It is my advice to you. (Interrutions)

prof. Chhattar Pal Singh : Mr. Speaker Sir, kindly allow me to speak on this motion (Noise & Interruptions).

Mr. Speaker : Nothing to be recorded. Prof. Sahib, I warn you.

Prof. Chhattar Pal Singh : Mr. Speaker, Sir.

Mr. Speaker : Prof. Sahib, No, no, you are not allowed to speak. (Noise & Interruptions). I have already warned you.

(Noise & Interruptions) I name you, Prof. Sahib. He should be out from the House. (Noise & Interruptions)

(Prof. Cthatter Pal Singh came to the well of it: House and started speaking loudly. He did not withdraw from the House. The Speaker then directed the Sergeant-at-Arms to executive his orders. The Sergeant-at-Arms went to the Hodble Member with other Watch & Ward Staff to take prof. Chhatter Pal Singh out of the House. but many members from the Janata Party 'gheroed' Prof. Chhattar Pal Singh and uproarious scene was created in the House.)

Mr. Speaker : Please take the member out from the House. (Interruptions)

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर सर, आप यह क्या कर रहे हैं? आप अपने स्टाफ से कहें कि वे मैम्बर से इस तरह का बिहेव न करें। (शोर एवं व्यवधान)

श्री अध्यक्षः सम्पत सिह जी, पहले आप अपने आदमियो को कहें कि वे अपनी अपनी सीट पर बैठें। (शोर एवं व्यवधान)

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर सर, यह ज्यादती है। अगर आप ऐसा करते हैं तो हम सारे ही चले जाते हैं। (शोर एवं व्यवधान) (इस समय बहुत से सदस्य एक साथ बोलने लग गए और कुछ भी सुनाई नहीं दिया)

श्री अध्यक्षः कटवाल साहब, आप अपनी सीट पर बैठें। कृष्ण लाल– जी आप भी अपनी सीट पर बैठें। (शोर एवं व्यवधान) कटवाल साहब आप अपनी सीट पर बैठ जाएं otherwise I will name you. Krishan Lal Ji, I warn you. You take your seat. (Interruptions)

प्रो० सम्पत सिंहः सर, मैं छतर पाल सिंह जी से अपील करूंगा और ये अपने आप चले जाएंगे।

श्री अध्यक्षः अपने आप चले जाएंगे तो यह बड़ी अच्छी बात है, आप अपील करें। क्या आप एश्योर करते हैं कि ये चले जाएंगे?

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर सर, मैं आपसे अपील करता हूं कि अपने स्टाफ को बिठा दें, उसके बाद में इनसे अपील करूगा।

श्री अध्यक्षः वाच एंड वार्ड स्टाफ अपनी अपनी जगह पर जाएं। (शोर एवं व्यवधान)

चौधरी बीरेन्द्र सिंहः स्पीकर सर, आप इनको बोलने का मौका तो दे ही देते। (शोर)

श्री अध्यक्षः यह इतनी ही बात नहीं है। Ch. Birender Singh Ji, this is not the time to speak. I have already named him. First that order should be executed. अभी सम्पत सिंह जी ने कहा था कि मैं इन्हें अपील करूंगा और वे अपने आप चले जाएंगे। (शोर एवं व्यवधान)

प्रो० सम्पत सिंहः सर, जो कुछ हो रहा है, वह बड़ा ही अन–फारचुनेट हो रहा है, यह नहीं होना चाहिए। एक मैम्बर को आपने नेम कर दिया और आपके मार्शल उनके पास गये लेकिन आप का स्टाफ बीच में नही आना चाहिए था? (शोर)

श्री अध्यक्षः सम्पत सिंह जी, आप कह रहे थे कि आप उन से बाहर जाने के लिए अपील करेंगे। इस तरह की बातें मुझे बताने की आवश्यकता नही है। (शोर)

प्रो० सम्पत सिंहः सर, बैक ग्राऊंड तो बतानी ही पड़ेगी।

श्री अध्यक्षः नो नीड। बैक ग्राऊंड तो हर मैम्बर जानता है। (शोर) आप तो कह रहे थे कि आप उन से अपील करेंगे। उनको जो कुछ कहना है, कहो, मुझ क्यों कह रहे हो?

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर सर, आपने जब नेम कर दिया तो आपके मार्शल उनके पास उनको बाहर ले जाने के लिए चले गए और साथ में आपके स्टाफ ने भी उन को घेरना शुरू कर दिया। वे बाहर जा ही रहे थे। (शोर)

Mr. Speaker : He was not going outside. He was coming to the well of the House. I asked him to leave the House but he did not do so.

प्रो० सम्पत सिंहः उसको इस तरह सै आपके स्टाफ ने घेरा कि वह बहुत ही' निन्दनीय था। उनके कपड़े फटे, उनकी घड़ी टूटी और यह बात बिल्कुल ना– वाजिब थो। स्पीकर साहब, जब एक मैम्बर जा रहा है.... (शोर)

आवाजें: कहां जा रहा था? (शोर)

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर सर, जब' उसको टाईम नही मिला तो आपको रिक्वैस्ट की। हो सकता है आपके पास टाईम की कमी हो, आपकी बात भी वाजिब कही जा सकती है या फिर कई बार सरकार के इशारे पर भी देखना पड़ता है। आप कम से कम उसकी बात तो सुनते।

श्री अध्यक्षः सम्पत सिंह जी, इन बातों को कहने की जरूरत नही है। आप उनको अपील करें कि वे हाउस से बाहर चले जाएं। (शोर) It is advisable for him to leave the House immediately.

मुख्य मन्त्री (चौधरी भजन लाल): अध्यक्ष महोदय, क्या यह कोई अपील हो रही है?

प्रो० सम्पत सिंहः अध्यक्ष महोदय, जब किसी मैम्बर को नेम किया जाता है तो कई बार मैम्बर रिएक्शन करते ही हैं। (शोर) अध्यक्ष महोदय, जब वे मैम्बर अपनी बात आपको कहकर बाहर जाने को थे या जा रहे थे तो आपके स्टाफ दारा उनकी घेराबन्दी की गये।। पहली बात तो यह है कि स्पीकर सर, आपको पहले उस मैम्बर को बोलने की अपरचुएनिटी देनी चाहिए थी, लेकिन आपने नहीं दी और आपको पता है उसका रिएक्शन क्या हुआ है। इसलिए अब मैं अपने आदरणीय मैम्बर से अपील करता हूं कि जब स्पीकर साहब का एक फैसला आ गया तो आप उस फैसले को मान लें। स्पीकर सर, यह जो इस तरह से सरकार यहां पर सिचुएशन क्रिएट कर रही है कि कोई मैम्बर यहां पर अपने व्यूज न रख सके, न बोले, यह अच्छी बात नहीं है। सरकार जिसको चाहेगी क्या वही बोलेगा? (शोर)

चौधरी भजन लालः सरकार का स्पीकर साहब, इसमें क्या मतलब है?

प्रो० सम्पत सिंहः सरकार के इस पक्ष को तो हम कंडम करते हैं कि वह यहां हाउस में पक्षपात से काम ले रही है। लेकिन आपका जो फैसला है स्पीकर सर, उसे क्रो सिर माथे पर लेते हैं। मैं अपने भाई छत्तर पाल सिंह जी सेर दूह अपील करूंगा कि तनको स्पीकर साहब का फैसला मारन लेना चाहिए और बाहर चले जाना चाहिए।

चौधरी बीरेन्द्र सिंहः स्पीकर सर, अगर कोई मैम्बर हाउस के अन्दर अनरूली सीन क्रिएट करता है तो आप उस को नेम करते हैं। इसकी परम्परा यह है कि उसके बाद आपका मार्शल उस मैम्बर के पास जाता है और कहता है कि आप बाहर चलिए। They are not musclemen. I think. you are not using the muscle power to remove the members from the House. Sir, this is very serious. You have directed your marshal to execute your orders and only the marshal should take action against the erring Member and not the entire Watch & Ward staff. दूसरी बात यह है कि अगर उनको शान्तिमय तरींके से जाने देते तो वे चले भी जाते। वे जा भी रहे थे लेकिन उनको एकदम आपके स्टाफ के कम से कम 10 आदमी खीच रहे थे जो कि निन्दनीय था। स्पीकर सर, हम कोई एनीमल्ज नही है, आप हमें ऐसे ट्रीट न कीजिये। स्पीकर साहब, हम विपक्ष में जरूर बैठे हैं लेकिन इसका मतलब यह नही है कि 10 आदमी हमारे किसी माननीय सदस्य को उठकर ले जाएं। आप कहें तो एक आदमी की भी जरुरत नही है, आपके कहने के ही मैम्बर चले जाएंगे। मैम्बर को अपनी ड्यूटी का

पता है। उनको अपनी रिस पौन्सीबिल्टी का भी पता बै। दूसरी बात यह है कि आपने रूलिंग दे दी कि दो घंटे से ज्यादा समय हो गया है, अब मुख्य मन्द्री जी जवाब देंगे। मैं कह रहा था कि कुछ मैम्बर चाहते थे कि वे भी बोलें। अगर आप उनको पांच पांच मिनट बुला देते तो कोई ऐसी बात नही थी क्योंकि उन्होंने भी आपको नो–कफिडैस का मोशन दिया था। इसके अलावा, अगर कोई ऐसी बात है जिससे आपको बुरा लगा है तो मैं आनरेबल मैम्बर को कहूंगा कि उसको इस तरह सै नहीं करना चाहिए था।

सिंचाई मन्त्री (श्री जगदीश नेहरा): स्पीकर साहब, यह सैशन पिछले चार दिन बड़ी अच्छी तरह से चला और उसमें कोई अन–रूली सीन नहीं हुए। जब बी० ए०सी० की मीटिंग हो रही थी तो मैंने विपक्ष के लोगों को कहा था कि हमने अपनी अपनी बातें कहनी हैं। अगर हाथापाई करेंगे तो लोग हमें क्या कहेंगे। ऐसे सीन क्रिएट करने से क्या फायदा है? लोग कहेंगे कि ये भी बेवकूफ हैं, यह सीन क्रिएट करने की क्या जरुरत थी? प्रोफैसर छतर पाल पढ़े लिखे है। आपने इस मोशन पर अढ़ाई घंटे का टाईम दे दिया। उसके बाद विपक्ष के लीडरो ने इनको अपील कर ली और इधर से भी कहा गया कि ऐसा नहीं करना चाहिए जिससे हमारी परम्पराएं खराब हों। मेरी आप लोगों से अपील है कि हाउस को समूथली चलाया जाए। मैं इस बात को मानता हूं कि धक्के से भी कोई बिल या मोशन पास करना ठीक नही होता। कल मुख्य मन्त्री जी ने अढ़ाई घटे तक बाढ़ पर भी डिस्कशन

करवाई। क्या केवल इनकी ही ठेकेदारी है कि ये अढ़ाई घंटे तक बोलते रहें? क्या हमारा जवाब देने का अधिकार नही है? मेरा आपसे फिर अनुरोध है कि इस माहौल को ठीक करें। हम आपके द्वारा प्रो० साहब को अपील करते हैं कि वे हाउस से बाहर चले जाएं ताकि मुख्य मन्त्री जी अपना जवाब दें और काम समूथली चले तथा लोगों को पता चले कि हम उनके चुने हुए नुमायंदे हैं।

प्रो० राम बिलास शर्माः स्पीकर साहब, हम आपका रिगार्ड करते हैं। हमारा काम तो अन–प्लेजैट है। मैं प्रो० छतर पाल सिंह जी. से कहना चाहता हूं कि माननीय स्पीकर साहब नें जो फैसला दे दिया, उसको मानते हुए एक बार वे स्वय बाहर चने जाएं। स्पीकर साहब, कई बार ऐसी मूवमैंट्स आ जाती हैं, इसलिए पहले वे बाहर चले जाएं और उसके बाद आप उनको वापिस बुला लें और उनको पांच मिनट का समय दे दें। आप इस मोशन पर एक घटे का समय और बढ़ा लें, क्या फर्क पड़ता है। सारे सदस्य अपनी अपनी बात कह लेगे। पता नहीं फिर मुलाकात हो या न हो। शायद यह आखिरी सैशन है। स्पीकर साहब, हो सकता है इसके बाद फिर मुलाकात न हो। इसलिए मैं छतर पाल जी से कहुंगा कि वे स्पीकर साहब के आर्डर्ज को मानते हुए बाहर जाएं।

14.00 बजे

चौधरी बंसी लालः अध्यक्ष महोदय, मेरा प्यायंट आफ आर्डर णै। मैं एक सबमिशन करना चाहता हू। अध्यक्ष महोदय, इस

असैम्बली की साढ़े चार साल की आयु में आज तक कोई ऐसा मौका नहीं आया जब किसी मैम्बर को आनरेबली इस हाउस से बाहर निकाला गया हो। पार्लियामैंट की 43 साल की हिस्ट्री में आज तक मार्शल को नही बुलाया गया। लेकिन इस हाउस में क्या होता है, जैसे ही आप किसी एक मैम्बर को वार्निंग देते है और उसको नेम करते है तो एकदम 20– 30 आदमी वैल में पहुंच जाते है। यह थी कोई अच्छी बात नहीं है। पार्लियामैंट में जब कभी ऐसे अनरूली सीन होते हैं तो 10 मिनट के लिए या 20 मिनट के लिए हाउस को एडजर्न कर दिया जाता है। उसके बाद हाउस को खाली करवा लिया जाता है और फिर हाउस रीअसैम्बल होता है। हमारी इस असैम्बली की साढ़े चार साल की आयु में इस सदन के अन्दर एक बार भी ऐसा नहीं हुआ। अध्यक्ष महोदय, यह कोई अच्छी प्रथा नहीं है और हम यह आगे के लिए कोई अच्छी प्रथा नहीं डाल रहे हैं। एकदम हाउस में 20– 30 लोग ऐसे टूट कर पड़ते हैं जैसे पता नही हा उस में क्या हो गया। आखिर सभी आनरेबल मैम्बर हैं। यदि आप किसी को नेम करते हैं तो उस माननीय सदस्य को ठीक ढंग से हाउस से बाहर निकालना चाहिए। पार्लियामैंट में और राज्य सभा में भी लोग बैल में जा कर बैठ जाते हैं, उनको भी इज्जत से डील किया जाता है। लेकिन यहां पर तो हमेशा ही हाथापाई होती है। पता नहीं ये कहां से इतनी बटालियन लाते हैं। मैम्बर्ज के साथ मिसबिहेव किया जाता है।

Mr. Speaker : I request Prof. Chhattar Pal Singh to leave the House.

(इस समय माननीय सदस्य प्रो० छतर पाल सिंह विपक्ष की लौबी में चले गए)

श्री अध्यक्षः यह कोई हा उस से बाहर जाने का रास्ता नही है। (शोर)

This lobby is also a part of the House. He should go out from the House and also from the lobby.

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर साहब, हम उनको कह देते हैं कि वे वहां से भी चले जाएंगे। (शोर)

(इस समय माननीय सदस्य श्री राम कुमार कटवाल को विपक्ष लोबो में माननीय सदस्य प्रो० छतर पाल सिंह को बाहर जाने को कहने के लिए भेजा गया।)

श्री अध्यक्षः आपने भी ऐसे आदमी को भेजा है जो शायद कामयाब न हों। (शोर) कादियान साहब आप जाएं।

(इस समय प्रो० छतर पाल सिंह हाउस से बाहर चले गए)

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर साहब, मेरी एक रिक्वैस्ट है। मैं लौबी के बारे में कहना चाहता हूं। कई बार ऐसा होता है, लौबी में कोई अनफोरसीन बात हो सकती है, जैसे गैस लोक कर जाए या कोई और बात हो जाए, इसलिए आप लौबी में एक गेट और लगवा दें, वरना हम सारे मर सकते हैं इस बारे में कुछ करे।

श्री अध्यक्षः यह देख लेंगे। आप लम्बी बात न करें, और भी बिल पास करने है

मन्त्री परिषद कं विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा (पुनरारम्भ)

श्री अध्यक्षः अब मुख्यमन्त्री जी अपना जवाब देंगे।

मुख्य मन्त्री (चौधरी भजन लाल): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, पिछले 4 दिन से इस असैम्बली का सैशन चल रहा है और इसे चलते हुए आज पांचवा दिन है। अपोजीशन पार्टी सरकार के खिलाफ अविश्वास का प्रस्ताव लायी है लेकिन आपने देखा होगा कि हमारे अपोजीशन के भाई इस अविश्वास प्रस्ताव को लाने में कितने सीरियस हैं। अगर इनको सरकार के प्रति कोई विश्वास नहीं था तो इनको पहले दिन ही अविश्वास का प्रस्ताव लाना चाहिए था लेकिन ये नहीं लाये। प्रदेश में कितनी भंयकर बाढ़ आयी हुई थी, उस पर चर्चा के लिए इन्होंने बी ० ए० सी ० की मीटिंग में दो दिन का समय खुद मांगा और हमने सहर्ष स्वीकार किया। हमने भी सोचा कि प्रदेश में भंयकर बाढ़ है इसका मुकाबला सबको दलगत राजनीति से ऊपर उठकर करना चाहिए। इन चार दिनों की चर्चा में इन्होंने छीटा कसी के सिवाय और कोई ठोस बात नहीं कही। वही पुरानी घिसी पिटी बातें कहीं जो पिछले चार सालों से कहते आ रहे हैं। सरकार के खिलाफ किसी खास मुद्दे पर एक दफा, दो दफा अविश्वास प्रस्ताव लाया जा सकता है लेकिन इन्होंने इस साढ़े चार साल के दौरान चार बार

अविश्वास का प्रस्ताव रखा। मैं यह मानता हूं कि हर सैशन में अपोजीशन को किसी सरकार के प्रति अविश्वास का प्रस्ताव लाने का हक है। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि थोड़ी बहुत इंसानियत, कुछ मर्यादा और इतनी समझ तो होनी चाहिए कि अविश्वास प्रस्ताव के मायने क्या है। ये इस बात को जानते हैं कि पहली बार भी, दूसरी बार भी और तीसरी बार भी ये अविश्वास प्रस्ताव पर बुरी तरह हारे और आज चौथी दफा भी बुरी तरह हारेंगे। ये भी इस बात को जानते हैं कि जब कोई विशेष मुद्दा न हो तो अविश्वास का प्रस्ताव नहीं लाया जाना चाहिए। बिना मुद्दे के अविश्वास का प्रस्ताव लायें, यह कहां की बात है। कल भी इन्होंने इसी अविश्वास से संबंधित यहां पर एक घंटा हंगामा खड़ा किया। (विघ्न) हाउस का एक एक सैकेण्ड कितना कीमती होता है, वह इन्होने बर्बाद किया। इसी तरह से इन्होंने बाढ़ की स्थिति पर सिवाय चौधरी बंसी लाल जी के कोई ठीक सुझाव नहीं दिये। इन्होंने अधिकारियों पर छींटाकशी करने और सरकार पर दोष लगाने के अलावा कोई विशेष बात नहीं कही। इन्होंने कहा कि बाढ़ लाने में परमात्मा से ज्यादा सरकर का ज्यादा हाथ रहा है। और न जाने क्या क्या इन्होंने कहा। इन्होंने सिर्फ वही घिसी पिटी बातें कहीं जो ये हमेशा से कहते आये हैं, कोई नई बात नहीं की। अध्यक्ष महोदय, इस प्रदेश की मौजूदा सरकार को बने हुए साढ़े चार साल होने को हैं। हमारे सूबे में हर क्षेत्र में चाहे वह एग्रीकल्चर की बात हो, चाहे लोगों को रोजगार देने की बात हो, चाहे उद्योग लगाने की बात हो, चाहे गरीबों के लिए कोई स्कीम

बनाने की बात हो, चाहे बैकवर्ड भाइयों के लिए, किसानों के लिए या पढ़े लिखे नौजवानों के हित की बात हो, यानि हर वर्ग के लिए इस सरकार ने काम किया है। मेरी सरकार का चार्ज हमने 1991 में लिया। उस समय टोटल उत्पादन 93 लाख टन से कम था लेकिन आज 106 लाख टन उत्पादन है। यह आपके सामने हैं। अध्यक्ष महोदय यही नहीं पिछले 4 सालों से किसानों को हमने बहुत अच्छे भाव दिए हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। चाहे गन्ने का भाव हो, चाहे जीरी या सरसों का भाव, कहने का मतलब यह है कि सभी जिन्सों का भाव किसानों को अधिक मिला। कपास और नर्मा का भाव भी बहुत अच्छा हमने किसान को दिया है। इसके साथ ही अच्छी खाद और अच्छे बीजों की सप्लाई हमने किसानों को दी है। किसानों की आर्थिक मदद के लिए उन्हें बैकों से लोन लेने की पूरी सुविधा है। अध्यक्ष महोदय, ये लोग राज्य में किस तरह का माहौल छोड़ कर गए थे, वह आपको मालूम है। आज राज्य में अमन और शांति है लेकिन इनके राज में प्रदेश में कानून और व्यवस्था नाम की कोई चीज नही थी। अध्यक्ष महोदय, सम्पत सिंह जी प्रदेश के गृह मन्त्री– थे, उस वक्त प्रदेश मे कितना खराब माहौल था। प्रदेश में किसी बहू बेटी की इज्जत महफूज नही थी। क्या प्रदेश में कोई ऐसी जगह बची थी जहां पर नाजायज कब्जे न हुए हों। चाहे म्यूनिस्पिल कमेटी की जमीन हो, चाहे पंचायत की जमीन हो और चाहे लोगो की जमीन थी हर जगह इन्हेने कब्जे करवाए। इनके राज में ग्रीन ब्रिगेड को नाजायज कब्जों का लाईसैंस मिला हुआ था। अध्यक्ष

महोदय, इन लोगों ने कितना जातिवाद का जहर फैलाकर भाईचारे के माहौल को खराब किया। हमने आते ही सबसे पहले बात यह कही कि सारे प्रदेश में से जाति वाद को खत्म करेंगे। प्रदेश में 36 बिरादरिया हैं, सभी का खून एक जैसा है, सभी लोग उस ईश्वर के बन्दे हैं। चाहे कोई गरीब है, चाहे कोई अमीर है सभी को साथ ले कर हम चले हैं। हमारा लक्ष्य तो गरीब आदमी की सेवा करना रहा है। आज की सरकार भेदभाव की नीति मे विश्वास नही करती बल्कि 36 बिरादरी को साथ ले कर चल रही है। आज लोग अमन से रह रहे हैं और विकास कर रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, आज पूरे प्रदेश में अमन और शांति है। इन लोगों ने ऐसा माहौल बना दिया था कि हर नागरिक यह कहने लगा था कि कांग्रेस पार्टी की सरकार रहनी चाहिए। आज लोग अमन की नींद सोते हैं और चौन की नीद उठने हैं। अमन का माहौल आज है लेकिन इनके राज्य में व्यापार और इण्डस्ट्रीज का बुरा हाल था। कितने ही इण्डस्ट्रियलिस्ट प्रदेश से इण्डस्ट्रीज उठा कर दूसरे प्रान्तों में ले गए। इन लोगों ने प्रदेश मे किस तरह से इण्डस्ट्रीज को तबाह किया, उसे दोहराने की आवश्यकता नही है। अध्यक्ष महोदय, इनके राज में इस तरह का माहौल बना हुआ था, जिससे सारे प्रदेश का विनाश हो रहा था। कोई भी उद्योगपति प्रदेश में आना नही चाहता था लेकिन आज सारे देश के और यहां तक कि विदेशों के उद्योगपति भी हरियाणा मे उद्योग लगा रहे है और वे हरियाणा की तारीफ करते हैं। अध्यक्ष महोदय, वर्ल्ड बैक दुनिया का सबसे बड़ा बैक है। वर्ल्ड बैक ने भी हरियाणा प्रदेश के बारे में कह दिया है

कि यहां पर ठीक काम पर पैसा लगता है। पैसे का उपयोग ठीक काम में होता है। हिन्दुस्तान के दूसरे प्रान्तों में अगर हरियाणा जैसा काम हो तो हिन्दुस्तान बहुत आगे जा सकता है। अध्यक्ष महोदय, यह मैं नहीं कहता बल्कि वर्ल्ड बैक की रिपोर्ट है जो कि रिकार्ड में दर्ज है। प्रदेश में पिछले 4 सालों से इण्डस्ट्रीज का बहुत विकास हुआ है। 27 हजार नये उद्योग लगे हैं' सतह हजार करोड़ रुपये के नये प्रोजैक्टस हमारे पास आए हुए हैं। आज देश के लोग और दुनिया के लोग उद्योग लगाने के लिए हरियाणा प्रदेश की ओर देख रहे हैं क्योंकि हरियाणा में अमन अरि शांति का माहौल है। यहां के लोग बहुत अच्छे बर्कर्ज हैं, बहुत अच्छे लेवरर्च हैं जो कि बड़ा अच्छा काम करके पैसा लेना चाहते हैं। अध्यक्ष महोदय, मेरे कहने का मतलब यह है कि अगर प्रदेश में अमन और चौन हो तभी कोई उद्योगपति प्रदेश में उद्योग लगाने के लिए आता है। उनको सरकार की तरफ से भी पूरी सेफ्टी है। हमारे समय में 2.50 लाख लोगों को रोजगार मिला है जिसमें से पिछले साल एक लाख से ज्यादा लोगों को रोजगार मिला था। हमने बहुत सी स्कीमें बनाई है जिनसे लोगों का फायदा हुआ है। अपनी बेटी अपना धन जैसी कई स्कीमें है। इस बारे में वर्ल्ड मैक वालों ने भी कहा है कि हरियाणा को जो पैसा दिया जा रहा हूँ वह सहे स्कीमो मे प्रयोग हो रहा है। जिस तच्च की स्कीमें हरियाणा में हैं, हम चाहते है कि सारे ससार मे इस तरह की स्कीमें चले। प्रधानमन्त्री जी ने भी कहा है कि इस तरह की स्कीमें सारे देश मे लागू करूगा। ये बहुत ही अच्छी स्कीमें हैं। अध्यक्ष

महोदय, आज हर लिहाज से हरियाणा प्रदेश ने तरक्की की है। आज हरियाणा में बाढ़ आई है और इनको बाढ मे निपटने के लिए कोई अच्छे सुझाव देने चाहिए थे लेकिन अपोजिशन में से एक भी भाई ने ऐसा कुछ नही कहा। अध्यक्ष महोदय, मैं कल दिल्ली गया था, वहा पर मेरी बलराम जाखड़ जी के साथ चार बजे मीटिग थी। उन्होंने मुझे बताया कि भजन लाल मेरे पास तो नैचुरल कलैमिटी के लिए सिर्फ 140 करोड़ रुपया है। मैंने खुद वहां पर क्यो है कि आठ प्रदेशों से क्यके अस क्य विंषय मे रिपोर्ट आई है। मैंने तो उन्हें कह दिया कि जाखड़ जी मेरा तो 140 करोड़ रुपए से कुछ नही बनेगा हमें आप और ज्यादा पैसा दें। मैं जाखड़ साहब का धन्यवाद करूंगा कि उहोंने कहा कि मैं प्रधान मन्त्री जी से कहूंगा कि हरियाणा प्रदेश के लिए स्पैशल मदद दें। हमने जिस तरीके से भारत सरकार के सामने यह केस रखा है वह आप भी जानते है। अभी किसी. ने कह दिया था कि प्रधानमन्त्री जी बहादुरगढ़ में आए थे और वे वहां रोटी खाने आए थे। क्या वे बाद ग्रस्त क्षेत्र देखने नहीं जा सकते थे। मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि प्रधान मन्त्री जी ने मेरे सामने कहा था कि बलराम जाखड़ जी आप एक कमेटी बनाए और उसको लेकर हरियाणा के बाढ़ ग्रस्त एरिए का दौरा करके मुझे रिपोर्ट दे और वे वहा पर गए। अध्यक्ष महोदय, 10 सीनियर आफिसर की टीम बनी और मौके पर मुआयना किया गया। जितनी जल्दी इस टीम ने यह दौरा किया उतनी जल्दी किसी प्रेदेश मे आज तक नहीं हुआ होगा। अध्यक्ष महोदय, उसमें सीनियर आफिसर्ज थे वे नावों मे बैठकर

और ट्रैक्टरों में बैठकर वहां पर गए थे। उन्होने यहां के हालात देंखे और महसूस किया कि वाकई में हरियाणा मे बहुत नुक्सान हुआ है तथा उन्होने इसकी रिपोर्ट भारत सरकार को दी। आप सब जानते हैं कि साधन चाहे भारत सरकार के हों, या किसी और के हों, वे सीमित होते हैं। हमने भारत सरकार के साथ चार दिन पहले एक मीटिंग की थी और उसमें भी हमारी बात को बहुत गौर से सुना गया था। जाखड़ साहब भी वहां पर मौजूद थे। मैंने उनको कहा था कि आप हमे नैचुरल कलैमिटी से निपटने के लिए अलग से पैसा दें। उन्होंने प्रिंसीपल सैकेटरी से बात करी और कहा कि मेरी वित्त मंत्री जी से कल मीटिंग करवाओ। मैने कहा कि कल तो ने चण्डीगढ जाएंगे तो उन्होंने कहा कि मैं अभी बात करता हूं। थोड़ी देर बाद उन्हे बताया कि हमने वित्त मंत्री जी से कह दिया है कि कोई न कोई रास्ता निकालें कि हरियाणा की किस तरह से मदद की जा सकती है। प्रधानमंत्री जी की पूरी हमदर्दी हरियाणा के साथ है। इसी तरह से वित्त मन्त्री, कृषि मन्त्री, प्लानिंग मिनिस्टर और भारत सरकार के सारे अधिकारियों की भी पूरी हमदर्दी हरियाणा के साथ है। हमें पूरा भरोसा है कि हमें भारत सरकार से ज्यादा से ज्यादा मदद मिलेगी। अध्यक्ष महोदय, मैं आपको विपक्ष के रोल के बारे में बताना चाहता हूं। अगर इन्होने कोई ठीक बात कही होती तो हमें और ताकत मिलती लेकिन इन्होंने ऐसी कोई भी बात नहीं की।

चौधरी बंसी लालः अध्यक्ष महोदय, आप हमसे यहां पर एक यूनानीमस रैजोल्यूशन पास करवा लें कि भारत सरकार से दो हजार करोड़ रुपये की मांग की जाए और भारत सरकार दो हजार करोड़ रुपये हरियाणा को दे।

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर सर, हम तो यह कहते है कि भारत सरकार से दो हजार करोड़ रुपये से भी फालतू भागों। हम तो इस मामले में सरकार को स्पोर्ट करनें के लिए तैयार हैं। इस मामले में हमसे जितनी भी मदद ली जाए, हम उतनी ही मदद दने को तैयार हैं। मैंने पहले भी बोलते हुए कहा था कि आपने जो प्रीलिमिनरी रिपोर्ट बाढ़ के नुक्सान से संबंधित भारत सरकार को भेजी है उसमें आपने उनसे 600 करोड़ रुपये मांगे हैं, वह बहुत ही कम हैं। हमने तो यह कहा है कि ज्यादा से ज्यादा सहायता हरियाणा को मिलनी चाहिए। स्पीकर सर, इस मामले में सारा हाउस एक है।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, इन्होंने जो प्रस्ताव किया है, उस 'पर हमें कोई, ऐतराज नहीं है।

चौधरी बंसी लालः अध्यक्ष महोदय सरकार इस बारे में एक रैजोल्यूशन ले आए, हम उस पर सरकार को पूरा सहयोग देने के लिए तैयार हैं। हमें कोई ऐतराज नहीं है।

प्रो० सम्पत सिंहः अगर सरकर इस तरह का कोई प्रस्ताव लाती है तो हम भी उसको स्पोर्ट करने के लिए तैयार हैं।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, ठीक है, अब यह प्रस्ताव हो गया है कि सारा हाउस यह महसूस करता है कि हरियाणा सरकार को भारत सरकार दो हजार करोड़ रुपये की सहायता दे। हम इनकी यह फीलिंग भारत सरकार के वित्त मनी एवं प्रधान मन्त्री जी को लिखकर भेज देगें।

चौधरी बीरेन्द्र सिंहः अध्यक्ष महोदय, मुख्य मन्त्री जी भारत सरकार से यह कहें' कि हरियाणा में इतनी जबरदस्त बाढ़ आयी है कि वहां पर टोटल तबाही हो गयी है'। इसलिए दो हजार करोड़ रुपये से हरियाणा का काम नहीं चलेगा यानि हरियाणा को इससे भी ज्यादा सहायता दी जाए।

चौधरी भजन लालः हमने भी उनको यही लिखकर भेजा है।

चौधरी वीरेन्द्र सिंहः अगर आप इतना सहायता नहीं लाओगे तो हम तो आपको ही पकड़ेगे।

चौधरी भजन लालः मुझे जब वह देंगे तभी तो मैं लेकर आऊंगा। हमारा तो कोशिश करने का धर्म है।

चौधरी वीरेन्द्र सिंहः अब आप उनको एम० पी ० खरीदकर दे सकते हो तो फिर यह सहायता राशि उनसे क्यों नही ला सकते?

चौधरी भजन लालः हमने उनको कोई भी एम० पी ० खरीदकर नहीं दिए हैं।

चौधरी बंसी लालः अध्यक्ष महोदय, इस बारे में कोई प्रोपर रैजोल्यूशन हाउस में पेश' हो जाए तो अच्छा रहेगा। ये इस प्रकार के किसी रैजोल्यूशन का ड्राफ्ट तैयार करा लें।

चौधरी भजन लालः हम देखते हैं कि क्या हो सकता है। अध्यक्ष महोदय, इसी तरह से सम्पत सिंह जी ने बोलते हुए कहा कि सरकार फेल हो चुकी है, सरकार नाम की कोई चीज नही है। मुझे नही पता कि यह सरकार किसको समझते है। अगर कोई सरकार आपको पकड़कर अंदर दे दे तो क्या आप उसको सरकार समझोगे? (हसी) आप सरकार किसे समझते हैं? अध्यक्ष महोदय, इससे बढ़िया तो और कोई सरकार हो ही नही सकती, इससे बढ़िया सरकार तो आज तक हरियाणा में आयी ही नहीं है। आपका जमाना भी लोगों ने देख लिया है। चौधरी बंसी लाल जी भी बहुत भारी बहादुर आदमी हैं, इनका जमाना भी लोगों को याद है।

चौधरी बंसी लालः इससे ज्यादा काला वक्त तो कभी हरियाणा में आया ही नहीं है।

चौधरी भजन लालः फिर मुझे भी आपके बारे में काली पुस्तकें खोलनी पड़ेगी। यह बात ठीक नहीं है। अध्यक्ष महोदय, इन्होंने यह भी कह दिया कि किसानों पर लाठिया चलायी,

गोलियां चलायी। अध्यक्ष महोदय, सरकार ने न तो कभी किसानों पर लाठियां चलवाई हैं और न कभी गोलियां चलवाई है। कुछ कायदे कानून होते हैं, अगर कोई आदमी उनको तोड़कर कानून अपने हाथों' में लेने की कोशिश करे तो सरकार को मजबूर होकर कुछ कार्यवाही करनी पड़ती है। मजबूर होकर आसूं गैस छोड़नी पड़ती है, लाठीचार्ज भी करवाना पड़ता है, रबड़ की गोलियां भी चलवानी पड़ती हैं। फिर भी अगर लोंग न मानें तो गोलियां भी चलवानी पड़ती हैं। जो लोग मरते हैं उनका हमें भी दुख होता है लेकिन पुलिस गोली तब चलाती है जब वह चारों तरफ से घिर जाती है और सोचती है कि अंध हमें लोग मारेंग। तभी वह मजबूरी में गोली चलाती है लेकिन आपको अपना जमाना याद रखना चाहिए। मैं आपके जमाने के किस–किस कांड का जिक्र करूं। सुप्रिया कांड का जिक्र करूं, मेहम कांड का जिक्र करूं या टोहाना कांड का जिक्र करूं। जगदीश बलात्कार कांड सपुत्र चौधरी देवी लाल की बात करूं, गरीब किसानों की आर्थिक दशा बिगाड़ने की बात करूं या मंडल आयोग की बात करूं जिसमें कई बसें क्यू दी थी। मैं एसी सैकड़ों मिसालें दे सकता हूं कि आपके राज में किस तरह का माहौल था। ये श्रीमान जी कहते हैं कि नौकरियों में पैसे इसलिए जाते हैं नौकरियों की नीलामी होती है। यहां कहा गया कि लिस्ट लगी हुई है कि पटवारी का ये रेट तहसीलदार का यह रेट एच० सी ० एस० का यह रेट है और सिपाही का यह रेट है। कुछ तो थोडी सी समझ से बात करते। अध्यक्ष महोदय, इस लाल किताब में सम्पत सिंह जी की बात है।

टैलीफोन की बात अखबारों में छपी। एक–एक सिपाही से 30– 30 हजार लेने की बात है, उसका केस दर्ज है, अब मैं क्या कहूं। जब मैं एसी बात कहता हूं तो केस तकलीफ होती है। इनकी तो जो मर्जी आये कह दें लेकिन उसका जबाब देते हुए भी मेरे दिल में थोड़ी झिझक आती है। क्योंकि मेरा लैवल यह नही है कि इन जेसी ओछी बात कहूं। अगर मैं भी ऐसी बात कहूं तो फिर मेरे में और इनमे फर्क क्या रह गया। ऐसी बात कह देते हैं जिसका कोई सिर पांव नहीं होता। सम्पत सिंह जी आप गीता लाकर अध्यक्ष महोदय के पास रखकर बहु कह दो कि भजन लाल ने पैसे ले लिए तो मैं इस्तीफा देकर घर चला जाऊंगा।

प्रो० सम्पत सिंहः अध्यक्ष महोदय, ये बातें तो ये कई बार कह चुके है कि मैं फांसी टूट जाऊंगा, मैं आत्महया कर लूंगा, मैं फलाना कर लूंगा। गीता का तो मामला आपने कम कर दिया। यहां तो द्रोपदी रुई, गीता गई। (विघन)

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, एक आदमी भी यह कह दे कि भजन लाल ने 'पैसे लेकर काम किया है तो मैं राजनीति छोड़ दूंगा। कोई भी बात मर्यादा मे रह कर कहनी चाहिए। आदमी को वह बात कहनी चाहिए जिसमें सच्चाई हो। हमसे गल्ली हुई हो तो हम उसे मानेगे। आपकी तरह से नहीं कि गल्त बोलें। आपके लीडर की तरह से नही कि ओम प्रकाश चोटाला मेरा बेटा नही है। भजन सरल कभी ऐसी बात नही कह सकता। सम्पत सिंह जी, आप तो तीन दफा हाउस में आ चुके हो,

अपने साथियों को भी कुछ पढाओ। (शोर एवं विघ्न) अध्यक्ष महोदय, मैं कह रहा था कि इनके इनके किस–किस कांड का मैं जिक्र करूं। ऐसी बात यह कह देते हैं जिसमें कोई सच्चाई नही होती। रगोंई नाले की बात इन्होंने कह दी ओर इल्जाम लगा दिया मेरे भतीजे पर कि वह भी लोभों के साथ खड़ा हुआ था। अध्यक्ष महोदय, चौधरी लीला कृष्ण और पीर चन्द जी वहां से बिधायक हैं। पिछली बार फतेहबाद पूरा बाढ से डूब गया था, इसलिए पूरे बांध बांधे कि फतेहाबाद शहर बच जाए। वहां बहुत बड़ी मण्डी है अगर वह टूट जाता तो सारा फतेहाबाद शहर डूब जाता मेरा भतीजा वहां जिला परिषद का वाइस चेयरमैन है। मैं आपको बताता हूं कि वह आप सब लोगों को हराकर के हरियाणा प्रदेश में सब से ज्यादा वोट लेकर के जिला परिषद का मैम्बर बना है। (शोर)

श्री राम कुमार कटवालः मेरे हल्के से हमारा आदमी सर्व–सम्मति से बना है। (शोर)

चौधरी भजन लालः स्पीकर साहब, इसी तरह से ये सिचाई की बात करते है। (शोर) जहां तक बांध बनवाने की बात है.

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर सर, सवाल बांध का नही है। उसके दो किनारे है। एक लैफ्ट और दूसरा राइट। लैफ्ट वाला

फतेहाबाद की ओर है और दूसरा जो राइट पर है, वह रतिया और टोहाना हल्के की तरफ पड़ता है।

चौधरी भजन लालः आपको पता है रतिया और टोहाना के बीच रतिया कैनाल पड़ती है।

प्रो० सम्पत सिंहः पता है। रतिया कैनाल जहां आती है तो उसके बाद टोहाना हल्का शुरू हो जाता है। उसके गाय साईफन लगी हुई है। (तोर)

चौधरी भजन लालः कैनाल उस को क्रौस नही कर सकती। वह पानी वापिस घग्घर में ही पड़ जाता है। (शोर)

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर साहब, ऐसी बात नहीं है। वह पानी ओवर फलों करता है।

चौधरी भजन लालः सम्पत सिह जी, आप बीच में न बोलें। (शोर)

वैयक्तिक स्पष्टीकरण (पुनरारम्भ)

(4) पर्यटन राज्य मन्त्री द्वारा

पर्यटन राज्य मन्त्री (श्री लीला कृष्ण चौधरी): स्पीकर साहब, मैं पसर्नल ऐक्सप्लेनेशन देना चाहता हूं। चौधरी सम्पत सिंह जी ने मेरा, चौधरी पीर चन्द और श्री हरपाल सिंह वी का नाम लिया। इनको हम पर बड़ा प्यार आता है और ये सदा ही हम

तीनो को आपस में लड़ाने की बात करते हैं। मुख्य मन्त्री महोदय जी की मेहरबानी से रंगोई ड्रेन 15 किलोमीटर बनायी गई है जिस्में रतिया, फतेहबाद व टोहाना को बचाना है। पहला किनारा उसका जो लगभग 15 किलोमीटर फतेहाबाद का है, उस के लिए हम लगे रहे कि वह मजबूत हो जाए। 1994 में फतेहाबाद में फल्ड आया था। दूसरा किनारा वह था जिसने टोहाना को बचाना था, वह पूरा हुआ। उसमे पहले 4000 क्यूसिकस की कैपैसिटी थी और इस बार पानी इतना आया कि वह लगभग 11000 क्यूसिकस तक पहुंच गया। ओवर पालो हुआ, हमने उसकी ऊंचाई रखी कि जिससे हम उसे हर हालत में बचायें रख सकें। लेकिन टोहाना और रतिया की तरफ का हिस्सा टूट गया यह भी लीला कृष्ण का कसूर है क्या? फिर भी हम उसको बचाने के लिय लगे रहे और इन्होंने लोगों को उकसाना शुरु कर दिया। रतिया–टोहाना के हजारों लोग उसको बचाने के लिय हमारे साथ आये और उन्होने हमारा पूरा साथ दिया। लेकिन इनके आदमी उसे तोड़ने पर लगे रहे। मैंने और धूडां राम ने उसको टूटने नही दिया। टूटा तो फिर भी हमने बनवा दिया। (शोर)

मन्त्री परिषद् के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा (पुनरारम्भ)

चौधरी भजन लालः आप तो लोगों को भडकाने में ही लगे रह सम्पत सिंह जी। हमारा काम तो है काम करवाना और आपका काम है उस काम को खराब करना। फिर सिंचाई के साथ साथ यमुना समझौते की बात कह दी। यमुना समझोते को जनता

ने स्वीकार किया है। उसका नतीजा यह हुआ है कि 23 जून को इन्होने इसी बात को लेकर के बन्द का आहवान किया कि इस समझौते को रद्द करने के लिय आप लोग सड्कों पर आ जाओ। साथ में इन्होंने यह ऐलान भी कर दिया कि न साइकल, न रेल, न ट्रैक्टर व न ट्राली ही चलने दी जावेगी। यहों तक भी कह दिया कि अगर किसी ने अपनी लड़की की शादी की तारीख पक्की की हुंई है तो वह भी अपनी लड़की की शादी की तारीख आगे पीछे कर दे क्योकि ट्रैफिक हमने बन्द करना है और लड़की के हाथ पी ले हम नही होने देंगे। (शोर) यह इन्होने ऐलान किया। लेकिन जनता ने इन को इतना फटकारा कि कही भी एक मिनट केलिये ट्रैफिक नही रुका। एक आध जगह पर इन्ही में से किसी ने एक आध दरखत काट कर रख दिया जिस वजह से ट्रैफिक कुछ टाईम के लिय जरूर रूका होगा। फिर साथ में इन्होंने यह कह दिया कि अजय व अभय चौटाला को सरकार ने गिरफ्तार कर लिया है क्योंकि वे रेल की पटड़ी से फिश प्लेटस उखाड़ रह थे और गाड़ी को उलटवाना चाहते थे। इत्फाक से वह ट्रेन रात को दो या सवा दो बजे चलती है। अगर दिन का समय होता तो पता नहीं कितने आदमी मरते।

चौधरी बंसी लालः भजन लाल जी, रेल की पटड़ी उखाडने का केस सुबह 7 बज कर कुछ मिनट पर दर्ज हुआ और वे गिरफ्तार होते हैं दूसरी एफ० आई० आर० शाम को 4 बजे दर्ज होने के बाद 1 एक की तो आपने उसी वक्त जमानत करवा दी

और दूसरे को आपने हस्पताल भेज दिया। उस बारे में यह कहा गया कि हस्पताल में इसलिए भेज दिया क्योंकि जेल में ज्यादा आदमी इनको मिलने आ रहे थे और उससे जल अथारिटीज को तकलीफ थी। तो जेल में तो ज्यादा आदमी आ रहे थे, क्या हस्पताल में कम आएगे। तो फिर जो रेल पटरी का इतना सीरियस क्राइम था, अगर रेल में ज्यादा पैसेंजर होते तो दो चार सौ लोग भी मर सकते थे। उसमें तो आपने हफ्ते के बाद गिरफ्तार किया लेकिन शाम को साढे चार बजे वाली एफ० आई० आर० में उसी दिन गिरफ्तार किया। यह आपने ही बताया है। (विघ्न)

श्री सतबीर सिंह कादयानः सर, मेरा प्यायंट आफ आर्डर है। 23 जून को अजय सिंह और अभय सिंह को धारा 144 तोड़ने के बारे में गिरफ्तार किया गया, दोपहर के बाद। एक को तो बेल पर 26 तारीख को छोड़ा गया और दूसरे अजय सिंह को उसी दिन छोड़ा गया। फिर एक कोई सजा याफ्ता नए एस० पी ० आ गए थे जिन्होंने झूठा केस बनाया। (विघ्न)

चौधरी भजन लालः उनको कोर्ट ने छोड़ा है, सरकार ने नहीं छोडा।

श्री सतबीर सिंह कादयानः फिर स्पीकर साहब, एक बार तो इनकी गवाह यह कहता है कि अंधेरी रात थी, नजर नही आया। जब दूसरी बार फिर ब्यान देता है तो कहता है कि मैंने रात को ही देख लिया था। एक आदमी अगर किसी केस में

इनवाल्वड है, एफ० आई० आर० दर्ज है तो उस केस में उसको क्यो नही रखा? इसका कारण यह है कि उस समय वह केस बनाया नहीं था। नए एस० पी ० रेलवे के आए 24, 25, 26 तारीख को। वह बोला कि मैं यह माड़ा काम करूंगा। उसने माड़ा काम किया और आपने वह करघा दिया। वह बोला कि रेल की पटरी तोड़ी है। तोड़नी होती तो और बहुत तोड़ने वाले इनके पास थे। (शोर)

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, इनको यह भी नहीं पता कि प्यायंट आफ आर्डर क्या होता है। इन्होंने प्यायंट आफ आर्डर का मलिया मेट करके रख दिया, उसका महत्व ही कम कर दिया। अध्यक्ष महोदय, मेरी आप से प्रार्थना है कि आप यह कहें कि यह कोई प्यायंट आफ आर्डर नहीं है ताकि प्यायंट आफ आर्डर का कोई महत्व तो रहे। (विघ्न)

(इस समय बहुत से सदस्य खड़े हो कर एक साथ बोलने लग गए)

श्री अध्यक्षः मेरी इजाजत के बगैर जो कुछ भी बोला जा रहा है, वह रिकार्ड न किया जाए।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, मैं अभी 23 तारीख की बात कर रहा था तो चौधरी बंसी लाल जी ने प्वायंट रेज किया। अध्यक्ष महोदय, बाकायदा केस दर्ज करके हमारी पुलिस ने उनको गिरफ्तार किया न कोर्ट में उनकी जमानतें भी नहीं हुई।

उन्होंने एन्टीसिटपेरी बेल की कोशिश की लेकिन वह भी नहीं हुई। चौधरी देवी लाल जी ने बड़ा भारी शोर मचाया कि साहब हरियाणा में बड़ी ज्यादती हो रही है। मेरे पोतों को पकड़ लिया, यह है, वह है। वह प्रधान मन्त्री जी के पास गए वहां जा कर रोए। मुझे पी ० एम० का टैलिफोन आया कि भजन लाल जी, देवी लाल आए थे क्या मामला है। मैंने उनको बताया ?ऊकि इस तरह से उन्होने बाकायदा रेल की फिश प्लेटस उखाड़ी हैं और इस जुर्म में हमने उनको गिरफ्तार किया है। हमने उनको कायदे कानून के मुताबिक गिरफ्तार किया है, मैं क्या कर सकता हूं। उन्होंने कहा ठीक है, कानून के मुताबिक चलने दीजिए।

चौधरी बंसी लालः तो 23 तारीख की सुबह साढ़े सात बज वाली सब से पहली एफ० आई० आर ० है। पकड़ा शाम को साढ़े चार बजे वाली एफ० आई० आर० में। अखबार में एक बात और आई थी, उसके बारे में भी आप बता दें कि सच है या झूठ है। चौधरी देवी लाल जी ने प्रधान मन्दी जी को टैलीफोन किया तो उन्होंने यह कहा कि या तो मेरे पोतों को छुड़वा दो, नही मैं पार्टी छोड़ दूगा, कांग्रेस छोड़ दूगा। उन्होंने यह भी कहा कि नहीं, यह बात अखबार में आई थी।

चौधरी भजन लालः वह दरखावस्त तो पुरानी हो गई। चौधरी देवी गनने कॉंग्रेस में आने की दरख्वास्त दी थी और उन्होने राजीव जी को जा कर लड्डू खिलाए थे। (विघ्न) राजीव जी ने उनको ताऊ कहा तो उन्होने कहा कि ताऊ नही, मैं तो आपका

माना लगता हूं, क्योंकि मैं पंडित नेहरु के वक्त का आदमी हूं। आपके लिए अपने घर से लड्डू बनवा कर लाया हूं, लो ये खा लो, और मुझे काग्रेंस पार्टी में शामिल कर लो। यह तब की बात है। (शोर)

प्रो० सम्पत सिंहः लड्डू और जलेबी देने की आपकी आदत है, उनकी नहीं है। वे माल्टे तो दे सकते हैं। (शोर)

चौधरी भजन लालः मैं आपको यह बात ईमानदारी से कहता हूं। उन्होने माल्टे भी और लड्डू भी दिए। गूंद के लड्डू ले कर गए और देसी धी के बताए। माल्टे भी ले गए होंगे। (शोर)

प्रो० सम्पत सिंहः जितने लगि उनके साथ रहे हैं, उन सचको वे माल्टे बांटते रहे हैं लेकिन देसी घी के लड्डू और जलेबी देने की आदत आदमपुर वालों को रही है? (शोर)

चौधरी बंसी लालः अध्यक्ष महोदय, एक वात की कलैरीफिकेशन नहीं आ ची है रेल की पटरी उखाड़ने के बारे में जो 23 तारीख को सुबह साढे सात बजे एफ० आई० आर० दर्ज हुई, उसमें तो उनको गिरफ्तार नहीं किया लेकिन जाम को सारे चार बजे के बाद जो एफ० आई० आर० दर्ज हुई उसमें गिरफ्तार करके उनकी जमानत करवा दी।

चौधरी भजन लालः यह मामला सबजुडिश है इसलिये दस बारे में कोई चर्चा करना मुझे शोभा नहीं देता।

प्रो० सम्पत सिंहः शाम को एफ० कई० आर ० दर्ज करवा करके गिरफ्तार करते है। तो इसका मतलब यह हुआ कि सुबह वाली एफ० आई० आर० ओपन रख लो ताकि उसमें जिसका नाम जोडना चाहे क्यका जोड़ लें उनका बाद में नाम जोड लिया और जमानत होने के बाद फिर एक केस में उनको गिरफ्तार कर्ते हैं। वह इनकी कस्टडी में थे तो उनको उस केस में गिरफ्तार करना चाहिए था। इसलिये वह केस झूठा था और उनको झूठा गिरफ्तार किया गया। (शोर)

चौधरी भजन लालः 23 तारीख का बन्द फेल हुआ इसलिये हरियाणा की जनता ने इस यमुना समझौते पर बकायदा अपनी मोहर लगा दी। आप श्रीमान जी फिर लोगों को वहका कर दिल्ली से चले। दिल्ली से चले घायरा पइन कर, औरत के कपड़े पहन करू बहादुरगढ़ आए। जब इन्होने घूघट ऊंचा किया तो लोगों ने इनको पहचान लिया। फिर वहीं से स्कूटर से उतर कर भाग लिए। यह हकीकत है। (हंसी)

वित्त मन्त्री (श्री मांगे राम गुप्ता): मुख्य मन्त्री जी इनका मुंह तो लुगाई जैसा नहीं है। (शोर)

प्रो० सम्पत सिंहः गुप्ता जी ने ठीक कहा कि मेरा मुंह लुगाई जैसा नही है। स्पीकर साहब, मैंने किसी का घागरा नहीं पहना था। घागरे वाली बात तो मुख्य मन्त्री बना रहे हैं। लेकिन इसमें भी कोई दो राय नहीं है कि उस समय मैंने जो कुर्ता

पजामा पहन रखा था, वह कुर्ता पाजामा जो मैं रैगुलर डालता है, वह नहीं था। वह कलर्ड कुर्ता पाजामा था, इसलिये इसको यहधाभश नजर आ गया हमेशा। (हंसी) स्पीकर साहब, मैं बाकावदा बहादुरगढ आया और इनके थाने में आ करके डिमांस्ट्रैटर्ज को छुडवाया और क्यको वहां पर ऐड्रेस करके फिर वही से उसी स्कूटर पर बैठकर हुआ।

चौधरी भजन लालः क्या वह स्कूटर भी दुपहिया था?

प्रो० सम्पत सिंहः हां वह दुपहिया स्कूटर था। उसके बाद मैंने शर्ट पैट पहन कर, कैप लगाकर, डांगी साहब के गांव मदीना में जा कर लोगों को ऐड्रैस किया। (शोर)

राजस्व मन्त्री (श्री आनन्द सिंह डांगी): जनानी की पुलिस को माननी पड़ती है इसलिये पुलिस को जनानी की माननी ही पड़ी।

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर साहब, वात यह थी कि यह इनके अपने ऐडमिनिस्ट्रैशन का फेल्योर था। इनकी पुलिस की यह हिम्मत नहीं हुई कि मुझे गिरफ्तार करे। अब ये घाघरे सलवार का बहाना लगाते हैं। यह तो इनकी आदत है जहां जाते हैं वहां भेष बदल लेते हैं। जहां कहीं जाएंगे कह देंगे कि मैं पंजाबी हूं। कहीं कह देंगे मैं पाकिस्तानी हूं, कहीं कह देंगे मैं जाट हूं, कहीं कह देंगे मै बिश्नोई हूं और कहीं पर साड़ी पहन कर कह देंगे कि मैं औरत हूं।

बिजली मन्त्री (श्री वीरेन्द्र सिंह): स्पीकर साहब, इस मौके पर मुझे एक बात याद आ गई। एक बूढ़ा आदमी रेल की टिकट लेने गया और वह टिकट ले कर रेल में चढ़कर बैठ गया। बेचारा गांव का था। उसी रेल में कोई मस्करा टिकट चौकर भी टिकट चौक कर रहा था। उस टिकट चौकर ने उस बूढ़े से मजाक करने की सोची। वह बूढ़ा आदमी मर्दाना डिब्बे में बैठा था तो चौकर कहने लगा कि ताऊ यह टिकट तो मर्दाना नहीं बल्कि जनाना डिब्बे की है। इस पर ताऊ जो कोथली अपनी लड़की की लेकर जा रहा था, उसमें से कपडे निकाल कर औरत वाले कपड़े पहन लिए और जनाना डिब्बे में चला गया। थोड़ी देर बाद वही चौकर फिर उस जनाना डिब्बे में गया, तो कहने लगा कि ताऊ यह टिकट तो मर्दाना है, आप यहां कहां पर बैठे हैं? इस पर वह परेशान होकर कहने लगा कि यह टिकट का ही चक्कर है। तो स्पीकर साहब, टिकट लेने के लिये ही सम्पत सिंह जी ने कपड़े बदले **चौधरी बंसी लाल:** आदरणीय अध्यक्ष महोदय, कपड़े बदल कर जाने की जो बात प्रो० सम्पत सिंह जी ने कही है, वह ठीक है क्योंकि एक बार बरनाला साहब भी इक ड्राइवर बन कर अमृतसर पहुंचे थे।

चौधरी भजन लाल: अध्यक्ष महोदय, ओम प्रकाश चौटाला को महज हवाई जहाज में ही घूमना आता है। वे वहां पर आए नहीं बल्कि हवा में ही सैर करके वापस दिल्ली चले गए। इनकी वहां पर उतरने की हिम्मत नहीं हुई। यहां पर एस० वाई०

एल० बनाने, दिल्ली को पानी देने और मसानी बैराज बनाने की भी बात कही गई। इस संबंध में मैं आपको बताना चाहता हूं कि मसानी बैराज पर बांध बनाने के संबंध में राजस्थान के मुख्यमन्त्री से बात चीत हुई है। उन्होंने वहां के सिंचाई मन्त्री श्री भाटी साहब की डियूटी लगायी है। बीच में भाटी साहब बीमार हो गए जिसके कारण इस बारे में खास बातचीत नहीं हो सकी। मैंने नेहरा साहब से कहा कि आप उनसे संपर्क स्थापित करके इस संबंध में जल्दी कार्यवाही करें। अभी बाटु के दिनों में भी उनसे मेरी बातचीत हुई है। मैंने कहा कि जब हमें पानी की जरुरत थी तब तो दिया नहीं, अब बाढ़ केदिनों में पानी आपने हमारी तरफ कर दिया। तो वे कहने लगे कि ऐसी बात नहीं है, आप लोग आकर देख सकते हैं राजस्थान के मुख्यमंत्री बहुत सीनियर नेता हैं और मैं उनकी इज्जत करता हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि जो जायज बात होगी वे उसको जरूर मानेंगे। इस संबंध में हम राम बिलास जी से भी रिक्वैस्ट करेंगे कि वे भी इस काम में हमारी मदद करेंगे।

श्री अध्यक्षः चौधरी साहब, आप यह बताए कि मसानी बैराज पर किवाड़ कब तक लगवा देंगे?

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, इस बात को गहराई से देखकर और सोच समझकर ही करना पडेगा क्योंकि इस पर तकरीबन 11 करोड़ रुपय खर्च होने हैं।

श्री अध्यक्षः जो पैसा लग चुका है, उसका क्या होगा?

चौधरी भजन लालः जो पैसा उस वक्त की सरकार ने लगाया है, वह गलत लगाया है।

प्रो० सम्पत सिंहः इसमें कई गेट्स लगने है एक दो गेट्स का इन्तजाम सरकार कर ले। बांध तो बना लिया लेकिन पानी थोड़ा आएगा। इसलिये सरकार एक–दों गेट्स लगवा ले। (विघ्न)

चौधरी भजन लालः ऐसा कुछ नहीं हो सकता। स्पीकर सर, पावर के बारे मे इन्होंने इजराईल की कम्पनी का जिक्र कर दिया और कहा कि ऐग्रीमैंट हा उस में नहीं रखा। अध्यक्ष महोदय, अभी उनसे पावर परचेज ऐग्रीमैंट नही हुआ है जब पावर परचेज एग्रीमैंट हो जाएगा तब बाकायदा उसको सदन में रखेंगे। (विष्य) एग्रीमैंट अभी फाइनल होना है इन्होंने साढ़े चार करोड़ रुपए प्रति के० वी० का जिक्र किया। यह साढ़े चार करोड़ नहीं बल्कि पौने चार करोड़ में इसको करवाएंगे। अगर इससे कम में कोई करके दे सकता है तो ये पकड़ कर जाएं किसी को। ये कुछ कहें तो सही, उसी से करवा लेगे। (विघ्न) हमने इस बारे में पूरी कोशिश कर ली है। भारत सरकार ने भी कह दिया है। इस वक्त कही से भी चार करोड़ से कम में यह बनने वाला नहीं है। इसका रेट चार, सवा चार या साढ़े चार है लेकिन हमने इसको पौने चार में पक्का कर लिया है। (विघ्न) रेट्स के बारे भी बताएंगे। महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश का भी बताएंगे कि क्या रेट्स तय हुआ है। जब एग्रीमैंट करेंगे तब आपको पूरी डिटेल देंगे। अध्यक्ष महोदय, अगर

साथ के प्रदेशों से हमारा रेट कम न हो तब ये लोग कुछ कहें। बाकी के प्रदेशों से हमारा रेट कम होगा। (विघ्न)

प्रो० राम बिलास शर्मा: स्पीकर सर, मुख्य मन्त्री जी ने फरमाया था कि आईजनवर्ग से हमारा समझोता हो गया। डीजल पर 900 मेगावाट बिजली जनरेट करने के बारे में भी थोड़ा एन्लाईटन कर दीजिए (विघ्न) पिछली बार भी इन्होंने कहा था कि एम० ओ० यू० साईन नहीं हुआ।

चौधरी भजन लाल: अध्यक्ष महोदय, मैं उसी बात पर आ रहा हूं। पहले या पूरी बात सुन तो लें। मैं अभी आईजनबर्ग ग्रुप आफ कम्पनीज के बारे बता रहा था। एक हजार 5 सी मैगावाट विवसी की बात उनसे हुई है। पहले 750 मैगावाट क्य प्लांट लगाएंगे उसके बाद साढ़े तीन–तीन सौ के दो लगाएगे और तीसरा 50 का और लगेगा। इसी तरह से हिसार मे एक हजार मैगावाट का, 400 मेगावाट का गैस का फरीदाबाद में बनेगा। बात लगभग फाईनल हो चुकी है और काम चालू होने के नजदीक है टैंडर किए हुए है। हिसार के बारे में चौधरी वीरेन्द्र सिंह जी ने पहले बताया भी है। अध्यक्ष महोदय, इसके साथ ही हमने यह महसूस किया कि प्रदेश में नये प्रोजैक्ट्स चार साढ़े चार या पाच साल में लगेंगे इसलिये हमने टैंडर इन्वाईट किए हैं डीजल से बिजली बनाने के लिये। डीजल में यह झमेला है कि 100 मैगावाट का प्लांट व्यार लगाएंगे तो उसके लिए सैटंर से मन्त्री लेनी पडेगी और मन्जूरी आने में फिर एक साल लग जाएगा। इस वक्त 925

मैगावाट के करीब फाईनल हो चुके हैं और हम चाहते है कि 1000 मैगावाट तक हो जाएं। टैंडर हमने किए है और सबसे कम 2.40 रुपये रट आया है। हमने आफिसर्ज की कमेटी में इसको फाईनल किया है। इस कमेटी में बिजली मन्त्री भी हैं, विल मन्द्री भी हैं और फाईनैसं सैक्रेटरी भी हैं। व्य कमेई ने नैगोसिएशन की है और 2.40 रु० प्रति यूनिट पर इसको फाईनल किया है। 925 मैगावाट के एग्रीमैंट साईन हो चुके हैं। 15 साल तक 2.40 रुपये प्रति यूनिट के हिसाब से बिजली मिलेगी (विघ्न) स्पीकर सर, मैं इनको बताना चाहूंगा कि हाईडल की बिजली 1.50 स्मये से 1.60 रुपये प्रति यूनिट तक मिलेगी। इसके साथ ही मैं एक और बात बताना चाहूंगा। (विघ्न) पहले मुझे अपनी बात को कम्पलीट कर लेने दो उसके बाद जो भी बात पूछना चाहे आप पूछ क्ले हैं। (प्रो० सम्पत सिंह की ओर से विध्न)

श्री अध्यक्षः सम्पत सिंह जी, आपने बहुत बार पूछ लिया है। आप जो कुछ भी पूछना सस्ते हैं वह आप बाद में पूछ लेना। आप बार बार इनको न सेके क्यसे फ्लूऐसी नहीं रहती है।आप इनको बोलने दीजिए।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय 2.40 रुपये में 15 साल तक का एग्रीमैंट हमने किया है। आज भी भारत सरकार 2.40 रुपये पर बिजली लेती है। वही बिजली किसानों को हम 50 पैसे में देते हैं। हमें 15 साल तक 2.40 रुपये प्रति यूनिट के हिसाब से बिजली मिलेगी और 18 महीने में वह चालू हो जाएगी। ऐसा

एग्रीमेंट हमने किया है ताकि महंगी बिजली न हो। हम फैक्टरी वालों को महंगी बिजली देंगे और जो बाकी बचेगी वह किसानों को सस्ते दामों पर देंगे। (विघ्न)

चौधरी वीरेन्द्र सिंहः अध्यक्ष महोदय, इन्होंने दो बातें कहीं हैं। इन्होंने कहा है कि हाईडल से 25 साल तक बिजली एक ही रेट पर देंगे और डीजल वाले की पन्द्रह साल तक देंगे। हाईडल से 1.50 रुपये से 1.60 रु० तक और डीजल की 2.40 रुपए में देंगे। अध्यक्ष महोदय, ये जो ऐग्रीमैंट होते हैं, ये बहुत ही चालाकी' से होते हैं। मैं इनसे यह जानना चाहूंगा कि कग आप एन्श्योर करेंगे कि आपका जो क्लाज बाई क्लाज एग्रीमैंट होगा, उसमें आप बाद में न तो कोई क्लाज ऐड करेंगे और न ही कोई क्लाज डिलीट करेगे?

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, इसमें भारत सरकार की गाईड लाईन होती है और उसके मुताबिक ही काम होता है। इस एग्रीमैंट को तैयार करने के लिए एडवोकेट जनरल और दिल्ली के बहुत सीनियर वकील होते हैं। वे इसको तैयार कर रहे हैं ताकि इसमें कोई ऐसी बात न रह जाए जिससे सरकार को नुक्सान हो और न ही किसी को नाजायज फायदा हो। उसमें हमारे हरियाणा के कायदे कानून ही लागू होंगे न कि किसी बाहर के देश के होगे। हम इसी बात में लगे हुए हैं कि हमारे मुताबिक ही काम हो। जो भी फाईनल होगा, हम इस हाउस में बता देंगे।

प्रो० सम्पत सिंहः अध्यक्ष महोदय, जैसे भाखड़ा का जिक्र हुआ कि वहां पर 17 पैसे में बिजली पैदा होती है और लाईन लौसिज की वजह से 65 पैसे और खर्चा हो जाता है। तो यह पांच गुना ज्यादा कन्यूमर को पड़ती टब यानि कि 82 पैसे में। इसी तरह से यह जो बिजली 2.40 रुपये में पड़ेगी, क्या यह भी कन्जूमर तक पहुंचते–पहुंचते पांच गुना तो नहीं हो जाएगी। अध्यक्ष महोदय, अभी इन्होंने कहा है कि हम सारी बात हाउस के सामने रख देंगे तो 'मैं इनसे यह कहूंगा कि हाउस की जो पब्लिक अण्डर टेकिग्ज कमेटी है, उसमें इनकी पार्टी के ही चेयरमैन होते हैं तो क्या यह एग्रीमैंट उनके थ्रू होकर जाएगा क्या ये ऐसा करवाएंगे?

15.00 बजे

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, पी०यू० सी० की बात अलग है। इन्होंने कहा कि निचली के रेट चार गुना या पांच गुना करेंगे। अध्यक्ष महोदय, ये पढ़े लिखे हैं, प्रोफेसर हैं। अध्यक्ष महोदय, इन प्रोजैक्टस में तो हमें फायदा ही होगा। जहां जहां भी ज्यादा फैक्ट्रीज हैं वही पर ये प्रोजेक्ट लगेंगे। उनके लोकल लाईन लौसिज बहुत थोड़े होंगे क्योंकि लोकल प्रोजैक्ट ही बिजली उनको देंगे। अध्यक्ष महोदय, वहां से जो बिजली बचेगी, चह हम किसानों को सस्ती देंगे ताकि उनके टयूबवैल्ल चल सकें। कई बार टयूबवैल्ज के लिये बिजली नहीं होती है, देहात में हम बिजली

नहीं दे पाते तो हम यह बिजली उनको देंगे और जो महंगे भाव की बिजली होगी उनको हम फैक्टरीज को देंगे।

प्रो० सम्पत सिंहः यह बिजली कितने पैसे में पड़ेगी?

श्री अध्यक्षः आपको क्या करना है चाहे यह कितने ही पैसे में क्यों न पड़े। इससे सस्ती बिजली तो कहीं पर भी नहीं मिल रही है।

प्रो० सम्पत सिंहः सर, यह स्टेट के इंट्रैस्ट की बात है, इसलिये मैं पूछ रहा हूं। **श्री वीरेन्द्र सिंहः** स्पीकर सर, एच० एस० ई० बी ० उनसे बिजली 2.40 रु० में खरीद लेगी। हमने सारे हरियाणा के लिये यह फसला किया है कि 50 मैगावाट का प्रोजैक्ट हिसार में लग जाएगा, 75 मैगावाट का फरीदाबाद में लग जाएगा और 100 मैगावाट का गुड़गांव में लग जाएगा, जिनसे लोकल बिजली सप्लाई होगी। बिजली बोर्ड जो भी टैरिफ मुकर्रर करेगा तो वह अपने लोगों को देखकर ही करेगा। यह तो हमने ही मुकर्रर करना है। हो सकता है कि हम 2.40 रुपये से भी कम भाव पर लोगों को बिजली दे दें या इससे भी फालतू भाव पर हम लोगों को दे दें। यह तो बोर्ड ने देखना है। हम बिजली की खरीद 2.40 रुपये में करेंगे।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, इनकी बात सही है। हो सकता है कि हम यह बिजली आगे तीन रुपये में बेचे या सवा तीन रुपये में बेंचे। अध्यक्ष महोदय, इन्होंने कादमा कांड का

भी जिक्र किया। इस कांड का जहां तक ताल्लुक है, इसका हमें भी दुःख है। अगर सारी स्टेट के लोग तो बिजली के बिल्ज दें और अढ़ाई या तीन साल से थोड़े से एरिये के लोग बिजली के बिल्ज न दें तो इससे बुरी बात और क्या हो सकती है। हमने भी बार बार उनसे अपील की है, मन्त्री जी ने बार बार उनसे अपील की है, अखबारों में भी यह अपील छपी है। इसके अलावा बिजली बोर्ड के चेयरमैन ने और टैक्नीकल मैम्बर्ज ने भी उनसे अपील की है कि आप अपने अपने बिजली के बिल्ज जमा करवा दें। लेकिन अध्यक्ष महोदय, वे लोग तो इस पर उतारू हो गए कि हमने बिजली के बिल्ज देने ही नहीं हैं। इसके अलावा मुश्किल यह भी है कि सियासी लोग भी उन लोगों को समझाने की बात नहीं करते हैं बल्कि उनको भड़काने की बातें करते हैं कि बिजली के बिल्ज नहीं देने हैं, बिजली की होनी चाहिये। अध्यक्ष महोदय, जैसे मेंने बताया कि अगर हमें 2.40 रुपये में बिजली मिलती है तो घर में आकर यह बिजली लाईन लौसिज होने की वजह से तीन रुपये में जाकर पड़ती है। अगर हमें तीन रपये में बिजली मिले और हम किसानों को 50 पैसे में दे तथा फिर भी वे लोग बिल्ज जमा न करवाएं तो इससे बुरी और क्या बात हो सकती है। किसानों पर कोई बैन नही है' कि वे तुरन्त ही अपने बिल जमा करवाएं।

चौधरी भरथ सिंहः जो नकली मीटर्ज चल रहे हैं, उनका आप क्या करोगे।

चौधरी भजन लालः अगर ये चल रहे हैं तो आप उनको ठीक करवा लो। अध्यक्ष महोदय, हम उनको बहुत थोड़े पैसे में बिजली देते हैं लेकिन ये लोग फिर भी उनको बिल नहीं देने देते। किसानों को ये बहकाते हैं और उनको गुमराह करते हैं। इससे बुरी और क्या बात हो सकती है। हमने तो उनको बार बार समझाया है कि आप अपने अपने बिजली के बिल जमा करवा दें। अध्यक्ष महोदय, भिवानी जिले की एक संघर्ष समिति बनी हुई है इस समिति के जो चेयरमैन हैं उनका नाम रवीन्द्र सिंह हैं और वे चौधरी जैसी लाल जी के दूर के रिश्तेदार भी है। चौधरी वीरेन्द्र सिंह जी ने उनके साथ बैठकर मीटिंग की। उस मीटिंग में उन्होंने फैसला कर लिया कि सब लोग बिजली के बिल जमा करवाएंगे लेकिन वे फिर नाट गए कि बिल नहीं भरैंगे। हमने तो उन सब लोगों के बिल्ज की 9 किश्तें बना दी थीं और उनकी जायज बातें भी मान ली थीं। हमने यह फैसला भी कर दिया था कि आगे से महेन्द्रगढ़ और रिवाड़ी, जहां पर गहरा पानी है, के मुताबिक ही भिवानी जिले में ही वही बिजली के रेट लिए जाएंगे जो कि इन जिलों में लिए जाते हैं, लेकिन वे फिर भी नही माने। मैं और वीरेन्द्र सिंह जी उसके बाद दादरी गए। उनके साथ हमने फिर मीटिंग की। वहां पर पूरी डिस्कशन होने के बाद यह फैसला हो गया था कि वे अपने बिल भरेंगे। वे यह बात मान कर वहां से चले गए थे। इसलिए हमने कादमा की पब्लिक मीटिंग में ऐलान कर दिया था कि 15 दिनों में अपने अपने बिल्ज की किस्तें जमा करवानी शुरू कर दें। हम आगे से यह यह रेट्स लेंगे। वे यह

सारी बातें मान कर भी चले गए थे लेकिन उन्होंने फिर भी, बिल नहीं भरे। हमने फिर उनको समझाया और वार्निंग भी दी लेकिन उन्होंने फिर भी बिल नहीं भरे। इसके बाद तो अध्यक्ष महोदय, आप जानते ही हैं कि बिजली तो कटनी ही थी। आज कोई आदमी बिजली का पैसा नहीं दे तो उसको बिजली कैसे दे सकते हैं। तीन साल के बाद बहुत मजबूर हो कर जब उनके कनैक्शन काटे तो उन्होंने बिजली बोर्ड के दफ्तर का घेराव कर लिया और कहा कि बिजली दोबारा दो। दो अढ़ाई हजार किसान इट्ठे हो गए और बिजली बोर्ड के कर्मचारियों पर हमला कर दिया और हैल्थ डिपार्टमैंट की भी जीप जला दी। पुलिस ने रोकने की कोशिश की तो पुलिस की जीप को आग लगा दी। उसके बाद पथराव शुरु कर दिया। एक सिपाही को घसीट कर अन्दर ले गए और तेल छिड़क कर आग लगाने लगे। तब मजबूर होकर पुलिस को लाठी चार्ज करना पड़ा, आमू गैस छोड़ी, रबड़ की गोली भी चलाई। बाद में मजबूर होकर अपने बचाव में पुलिस को गोली चलानी पड़ी जिसमें पांच आदमी मारे गए, जिसका हमें दुःख है। पुलिस के भी 25 आदमी जख्मी हुए। इतनी बुरी हालत पुलिस की हो गई। अपने बचाव में यह कदम उन्हें उठाना पड़ा। मैं वहां के लोकल एम०पी० श्री जंगवीर सिंह, श्री धर्मवीर जी भूतपूर्व विधायक व चन्द्रावती जी और धर्मपाल विधायक जी का आभारी हूं कि वे मेरे साथ इस मसले को हल करने के लिए बैठे। उन्होंने कहा कि इनकी बात सुनकर इनको मुआवजा दिया जाए। किसानों के साथ हिसार में मीटिंग हुई उसमें मैं व चौधरी वीरेन्द्र सिंह जी थे। चेयरमैन को

फोन करके बिजली बोर्ड के टैक्नीकल मैम्बर को बुलाया। चीफ इंजीनियर वहां थे। वहां बैठकर तय हो गया और उन्होने खुद प्रैस मे स्टेट– मैट दी कि क्या हुआ। उन्होने कहा कि किश्त 9 की बजाए 11 करो, वह हमने कर दीं। उन्होंने कहा कि भिवानी का रेट महेन्द्रगढ़ के बराबर होना चाहिए। हमने कर दिया। उन्होंने कहा कि 15 दिन के अन्दर पहली किश्त देनी शुरु कर देग, जो अब बिल आएंगे वह नकद देंगे। जो मर गए उनको दो लाख रुपए मुआवजा देने और उनके 1– 1 बच्चे को नौकरी देने की बात भी मानी। जो सीरियस जख्मी हुए, उनको 50– 50 हजार रुपये देने की बात मानी। सारी बात तय हो गई और बाकायदा प्रैस को बुलाया। प्रैस में हमने भी स्टेटमैंट दे दिया और उन्होंने भी कह दिया कि बहुत अच्छा फैसला हो गया, हम सरकार के आभारी हैं। हमने कहा कि फैसला हो गया है अब मुंह मीठा कराओ। फिर लड्डू खाकर सब गए।

प्रो० सम्पत सिंहः मेरा कहना यह है कि यह बात पहले ही मान लेते तो झगड़ा क्यों पड़ता (विघ्न) इस मामले में हमारा कोई दखल नहीं था। पहले मान लेते तो ये पांच लोग न मरते।

चौधरी बीरेन्द्र सिंहः स्पीकर सर, मेरा प्वांयट आफ आर्डर है। मुख्य मन्त्री जी को लेटैस्ट 7– 9– 95 को मैमोरैन्डम दिया गया। उसमे लिखा है कि 14– 3– 95 को जो समझौता करके गए थे, उसको तुरन्त लागू किया जाए। सम्पत सिंह जी ने भी यह ध्यान दिया था कि समझौता तुरन्त लागू किया जाए।

बिजली के बिलों की 9 की बजाए 11 किश्त हुई है, बाकी सब वही बात है। यह जो घटना घटी है उसके बदले में मुआवजा भी दिया जाए।

चौधरी बंसी लालः अध्यक्ष महोदय, मुख्यमन्त्री जी ने जो बात कही कि कि रवीन्द्र सिंह मेरे रिश्तेदार हैं। मेरी उनसे कोई रिश्तेदारी नहीं है। दूसरी बात यह है कि वहां हमको आपके किसी पौलिटिशयन का तो पता नहीं लेकिन हमारे किसी आदमी ने यह नहीं कहा कि बिजली के बिल न दो। यहां तक कि रवीन्द्र सिंह के भाई भी बिल भरते हैं। लेकिन जब पावर मिनिस्टर कहते हैं कि समझौता हो गया तो अच्छी बात तो यह हो कि उस समझौते को अखबार में छाया कर दो। जो उन के दस्तखत हैं, उनको छाया कर दो ताकि इलाके के किसानों को पता लग जाए कि क्या क्या करके आए हैं। (शोर)

चौधरी भजन लालः चौधरी बंसीलाल जी, मेरी बात सुन लो। गश्ती हमारे से यह हो गयी कि हमने उनसे दस्तख्त नहीं करवाए। उन्होंने लड्डू खा लिये। अखबार वालों के साथ उनकी कांफ्रेंस हो गयी। उन्होंने खुद अखबार वालों के सामने व्यान दिए। फिर हमने कहा कि दस्तखतों की क्या जरुरत है लेकिन जो फैसला हुआ उसको हम दोबारा अखबारों में छपवा देंगे।

चौधरी बंसी लालः जो कुछ हुआ है, वह सब के सामने आना चाहिए। क्योंकि फैसला होने के बाद वे लोगों को यह कह

रहे हैं कि हमारा मुख्यमन्त्री के साथ कोई समझौता नही हुआ है। उस इलाके के लोग यह भी मानते हैं कि ये समझौता करके आये हैं, लड्डू खाकर के आये हैं। यह चर्चा इलाके में है।

चौधरी भजन लालः चौधरी साहब, मेरे हाथ में गंगा जल समझना, जो मैं कह रहा हूं, ठीक है।

चौधरी बंसी लालः जो आप कह रहे हैं, मैं उससे ना नहीं करता। मैं तो यह कह रहा हूं कि यह मसला तय होना चाहिए क्योकि अभी तक यह कंफयूजन फैला हुआ है। उस राबिन्द्र को तो आपनें चौधरी बना लिया है।

चौधरी भजन लालः हमने थोड़ा बनाया है, उन्होने खुद प्रधान बना रखा है।

चौधरी बंसी लालः जिस गांव के पांच आदमी मरे थे, उस गांव में उजर खाई के ऊपर मैं गया था। एक धनासरी गांव है, उस गांव में एक आदमी के यहां मैं पाल पर बैठा था। एक आदमी वहां जोश में आ गया कि चौधरी साहब, हमारा तो फैसला यह है कि हम बिजली के बिल नहीं देंगे। मैंने कहा कि भाई मैं तो उबर खाई पे आया हूं। आप को यह कहने नही आया कि बिल न भरों। न यह कहने आया हूं कि भर दो। जो मर्जी आए करो। एक आपके बिजली बोर्ड की यह गल्ती है कि उसने अढ़ाई साल इन्तजार क्यों किया। अगर कोई बिल नही देता था तो कनैक्शन पहले ही काट देना चाहिए था, मैं इस बात का ऐतराज न करता।

लेकिन पुलिस ने जो मौके पर गोली चलायी उसमें कोई जख्मी ऐसा नही है जिसके घुटने के नीचे गोली लगी हो। कमर से लेकर छाती तक गोलियां लगी हैं। अगर पुलिस कही पर गोली चलाती है तो उसे हिदायतें है कि घुटने के नीचे ही गोली लगनी चाहिये लेकिन सब की छाती पर ही गोली लगी है। यह जो पुलिस ने किया, यह ज्यादती थी। ऐसे अधिकारियों के खिलाफ आप को ऐक्शन लेना चाहिए। एक बात आपने एक सवाल के जवाब में कही थी और आज भी कही थी कि लोग लाठी, गंडासी व जेली लेकर के आ गए थे। यह बात सही नही है। गांव का आदमी लाठियां, जेली व गंडासे लेकर के कोई नही आया लेकिन निहत्थे आदमियों पर गोलियां चलायी गई हैं। यह तो हो सकता है कि किसी बच्चे ने या किसी औरत ने कही पर कोई पत्थर फेंक दिया हो लेकिन लाठी, गोली, जेली व दूसरा कोई हथियार किसी के हाथ में नहीं था। यह. पुलिस ने एक तरफा काम किया है (शोर)

चौधरी भजन लालः चौधरी साहब, ऐसी– बात नहीं– है। हम इन सारी बातों की तह तक गए हें। पुलिस वालों की छातियों में – जेली व लाठियों के निशान थे। (शोर)

चौधरी बंसी लालः जो आप कहोगे, वह सारा सही है लेकिन मेरी दो मिनट बात तो सुन लो। आप इस केस की जुडिशियल इंक्वायरी करवा लो। कमिश्नर की कोई जुडिशियल इंक्वायरी नही होती। अगर आप हाई कोर्ट के किसी जज से इस की जुडिशियल इंक्वायरी करवा लेते हो तो दूध का दूध पानी का

पानी छन जाएगा। मुख्य मन्त्री जी, पांच आदमी मौके पर जान से मर गए और तीस चालीस जख्मी हो गए। (शोर) सरकार इन बातों को लाइटली ले रही है, यह कोई अच्छी बात नहीं होगी।

चौधरी भजन लालः यह बात आपने पहले भी कही थी। बाकायदा सारी बात को मान कर फैसला हो गया। हालांकि कमिश्नर रोहतक डिवीजन इसकी जांच कर रहे हैं। तो उन्होंने कह दिया कि इंक्वायरी कादमा में हो जाए। हमने कहा हो जाएगी और हमने उनकी बात मान ली। आपका कहना है कि गोली घुटनों के ऊपर लगी, नीचे लगनी चाहिए थी। तो मैं कहना चाहता हूं कि इंक्वायरी हो रही है। उससे पहले कोई बात कहना न तो आपके लिए मुनासिब है और न ही मेरे लिए मुनासिब है।

चौधरी बंसी लालः मुख्य मन्त्री जी, जो आप कहते हैं कि उन्होंने आप से समझौता कर लिया, मैं इसको चौलेंज नही करता। वे आपको दो बार मिले, यह सही है और मैं आपकी बात को चौलेंज नहीं करता। जहां तक इंक्वायरी का सवाल है तो कमिश्नर से करवाने की बजाए हाई कोर्ट के जज से इंक्वायरी करवाने के आर्डर कर दें तो दूध का दूध और पानी का पानी छन जाएगा। वहां निहत्थे आदमियों पर मौके पर गोली चलाई गई।

चौधरी भजन लालः वहां के एम०पी ० और हाउस के मैम्बर चौधरी धर्म पाल सिंह भी मौके पर मौजूद थे। उनके सामने यह फैसला हुआ था।

चौधरी बंसी लालः मैं फायरिंग की बात कर रहा हूं कि पीसफुल लोगों पर गोलियां चलाई गई। मैं सिर्फ इतनी बात कर रहा हूं कि उसके लिए हाई कोर्ट के जज से इन्क्वायरी कराएं।

श्री वीरेन्द्र सिंहः स्पीकर साहब, अगर ऐसी बात थी तो इनके मैम्बरो ने यह बात क्यों नहीं उठाई। इनके मैम्बर अतर सिंह तो बेचारे बीमार रहते हैं और वे बोल नहीं सकते। कादमा कांड पर एक एडजर्नमैंट मोशन देते, उनको यह मामला उठाना चाहिए था। अब कहते हैं कि हाई कोर्ट के जज से इन्कवायरी करा दें। जो संघर्ष समिति 18 महीनों सै लड़ रही थी वह स्वयं कहती है कि आप इकवायरी ठीक करवा रहे हैं लेकिन इसे आप कादमा में करवाएं। वह मुख्य मन्त्री जी ने मान ली। जो सघर्ष चला रहे थे बात तो उनकी मानी जाएगी। अब उसमें क्या कमी रह गई।

चौधरी भजन लालः फिर इन्हेंने एक वह बात कह दी कि उस एस०पी ० को दोबारा रेलवे में लगा दिया। मैं जानना चाहता हूं कि आपको उससे क्या तकलीफ हो गई हम गैर कानूनी काम नही करेंगे। जब उस एस०पी०, डी ०एस०पी ० और इन्सपैक्टर ने सजा काट ली है तो उसके बाद उनको कहां भेजेगे। कानून के मुताबिक, जिस दिन उनको सजा हुई थी उनको उसी दिन सस्पैड कर दिया था और जब छूट कर आए तो बाकायदा कानून के मुताबिक उनको बहाल करके लगाया है। उनकी जांच चल रही है और जांच में जिस तरह का कहर होगा उसके मुताबिक आगे कार्यवाही होगी।

प्रो० सम्पत सिंहः क्या यह मामला मोरल ट्रपीच्यूड का नही था क्योंकि असत्य एफीडैविट न्यायालय में देना मोरल टूपीच्यूड का मामला ही बनता है।

चौधरी भजन लालः वह सत्य था या असत्य था। मेरा सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बारे में कुछ कहना जंचता नहीं है। वह सत्य है या असत्य, मैं इस बहस में नही पड़ता। यदि आप मुझे उलझाना चाहें तो मैं आपके कहने से उलझूंगा नही। मैं आपसे फालतू अकल अपनी जेब में रखता हूं। मैं अपनी अकल से काम लेता हूं। (शोर)

चौधरी बंसी लालः अध्यक्ष महोदय, सुप्रीम कोर्ट ने उनको सजा कर– दी और वे जेल चले गए। जेल से बाहर निकलते ही उनको उसी वक्त री–इनस्टेट करके पोस्टिंग दे दी। यह तो सुप्रीम कोर्ट की सीधी बेइज्जती है। आप महीना दो महीना उनकी इन्कवायरी तो करते। यह तो क्रिमिनल कन्टैम्पट है। कन्टैम्पट दो तरह की होती है। एक क्रिमिनल और दूसरी सिविल। यह तो क्रिमिनल कन्टैम्पट है और यह मोरल ट्रपीच्यूड है।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, सुप्रीम कोर्ट की कोई तौहीन नहीं है। हम सुप्रीम कोर्ट का बहुत सम्मान करते हैं।

चौधरी बंसी लालः यह तो क्रिमिनल कन्टैम्पट है और मोरल ट्रपीच्यूड है।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, एक बात यह कही गई कि एच०पी ० एस०सी ० के मैम्बर्ज का अस्तीफा ले लिया गया। आप जिसकी बात करके हैं, उस मैम्बर के खिलाफ हाई कोर्ट ने स्ट्रिक्चर पास कर रखा है। इसके अलावा अध्यक्ष महोदय, सीमेंट के बारे में बात कही गई। उसको मैं दिखवा लूंगा। लेकिन एक बात तो आप मानेगे कि सीमेंट में एक ताकत होती है 33 परसैंट और एक 43 परसैटं। तो आप ही बताएं कि 33 परसैटं ताकत वाली सीमेंट लेनी चाहिए या 43 परसैंट ताकत वाली लेनी चाहिए। (शोर) मैं तो टैक्नीकल आदमी हूं नहीं लेकिन दो रुपए कट्टा अगर हम ज्यादा दे कर 33 की बजाए 43 परसैटं ताकत वाली लें तो यह गलत बात नहीं है। इस बारे मे बाकायदा जो हाई पावर्ड परचेज कमेटी बनी हुई है, उसकी मीटिंग में बहुत डिस्कशन हुई। उसके बाद यह सीमेंट ली गई। सम्पत सिंह जी, आपको ऐसी बात नही सोचनी चाहिए। यह कोई सोचने वाली बात है भी नहीं। मुझे वही बात कहनी पड़ेगी कि जैसा आदमी खुद हो वैसी ही बात सोचेगा। (शोर) हमने यह बात कभी नहीं सोची कि हमें कमीशन मिले। कमीशन का नाम तो ओम प्रकाश चौटाला है। (शोर) इसके अलावा छतर सिंह चौहान ने जो बातें कही, उनका जवाब मैंने दे दिया है। कादमा के बारे में भी बता दिया है। बिजली के बारे में भी बता दिया है। नौकरियों की बात बता दी है। नौकरियों के बारे में कह दिया कि नौकरियों में हिसार जिले के ज्यादा बिश्नोई लिए गए हैं। बिश्नोई तो हिसार जिले में ही ज्यादा हैं और दूसरी

जगहों पर तो थोडे थोड़े हैं तो फिर कहां से लिए जाएंगे। बाकायदा उनको मैरिट पर लिया गया है।

प्रो० सम्पत सिंहः आपने मनीराम गोदारा के दामाद के बारे में नरसिंह बिश्नोई को हिसार के बिश्नोई मंदिर में क्या कहा था, वह भी बता दें।

चौधरी भजन लालः उसको बाकायदा मैरिट पर लिया गया है। अष्टमी का दिन था। उस दिन वहां पर नर सिह ने मुझे पूछा कि मनीराम गोदारा का दामाद है, वह मैरिट पर है और उसके बहुत अच्छे नम्बर हैं, उसको हमें लेना चाहिए। तो मैंने उनको कहा कि मैं कब रोकता हूं। अगर वह मैरिट में आता है तो उसको जरूर लेना चाहिए। क्या मैं ऐसा कह सकता हूं कि वह मैरिट पर आए तो न लें? क्या मैं आप जैसा बावला हूं?

प्रो० सम्पत सिंहः ठीक है, आपने मंदिर में यही कहा था।

चौधरी भजन लालः आपका एक केस भी सुप्रीम कोर्ट या हाई कोर्ट में नहीं रहा और हमारा एक भी केस रद्द नहीं हुआ। हमने सभी को मैरिट पर नौकरियां दी हैं।

प्रो० सम्पत सिंहः आपका बिजली बोर्ड का केस रद्द हुआ है। (शोर)

चौधरी भजन लालः यह आपके जमाने की बात है।

प्रो० सम्पत सिंहः नहीं, आपके जमाने की है। जे०ई० की नियुक्तियां रद्द हुई हैं।

चौधरी भजन लालः वह तब हुई, जब आपकी पार्टी का राज था। अध्यक्ष महोदय, यहां पर पटवारी लगाए जाने की बात भी आयी। (विघ्न)

चौधरी बंसी लालः अध्यक्ष महोदय, एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात पिछले दिनों पार्लियामैंट में आयी थी। जो वोहरा कमेटी ने रिपोर्ट दी है, उसमें कहा गया है कि पुलिस ने बड़ी ज्यादतियां की हैं। जहां तक मेरी सूचना है उसमें यानि वोहरा रिपोर्ट में हरियाणा का चौथा नम्बर है। कृपया मुख्य मन्त्री महोदय इस पर भी रोशनी डाल दें कि उस रिपोर्ट का इनपुट क्या है।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, यह बिलकुल सही बात है कि वोहरा कमेटी ने जो रिपोर्ट दी है उसमें हरियाणा का चौथा नम्बर है। जो उस रिपोर्ट में ज्यादती करने की बात कही गई है, वह इनके राज के बारे मे कहा गया है। (विघ्न) इनके वक्त में ही ज्यादतियां और बूथ कैपचरिंग होती थी। (शोर एवं विघ्न) इनके राज में नाजायज कब्जे और बह बेटियों को बेइज्जत किया जाता था (शोर)।

प्रो० सम्पत सिंहः उस रिपोर्ट में जो आया है, उसमें आपके वक्त का भी नाम दिया गया है।

चौधरी भजन लालः उस रिपोर्ट में हमारे समय का नहीं बल्कि आपके समय का और आपकी करतूतों का जिक्र है। यहां पर चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी ने जिक्र किया कि आदमपुर के पटवारी अधिक ले लिए गए।

चौधरी वीरेन्द्र सिंहः आदमपुर के 300 पटवारियों को लेने के बारे में मैंने अपनी तरफ से कुछ नही कहा बल्कि जो लफ्ज आपने बोले थे, मैंने तो वही बोला है। (शोर)

चौधरी भजन लालः जब हम अपने हल्के में जाते हैं तो वोट लेने के हिसाब से बात करनी पड़ती है। हो सकता है ऐसी कोई बात वोटरों को राजी करने के लिए कह दी गई होगी।

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर साहब, इनका यह कहना कि वोटरों को राजी करने के लिए ऐसा कह दिया होगा, यह तो वोटरों को गुमराह कर रहे हैं। (विघ्न)

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, यहां पर बात आयी कि केवल एक आदमपुर हल्के के ही विकास की बात की करता हूं, यह बिल्कुल गलत बात है। मेरे लिये सभी बराबर हैं। यहां पर एस० वाई० एल० कैनाल बनाने की भी चर्चा आई साथ ही यह कहा गया कि मुख्यमन्त्री ऐसा होना चाहिये जिसकी सोच विकास कार्य करने के लिये आगे के 15 सालों तक हो। चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी सोच तो मेरे बस की बात है नहीं, इतना जरूर हमने किया हैं कि हमारे यहां पर उद्योगों का उदारीकरण हो और लोगों

को टैक्नीकल ज्ञान प्राप्त हो १ इसीलिए हमने इंजीनियरिंग कालेज, जिला स्तर पर पोलेटैक्निक कालेज और आई० टी ० आईज० खोली हैं। इनके अलावा और भी खोलने जा रहे हैं 'ताकि यच्चों को टैकनीकल ज्ञान मिल सके। टैक्नीकल ज्ञान बच्चों को होगा तो यहां के लोग ही उधोगों में लगेंगे। हमने ऐसा किया है कि जो उद्योग हमारे यहां पर लगें, उनमें हमारे बच्चे ही लगें। यदि तीन बार भी उनको बच्चे न मिल पाएं तो फिर वे बाहर से ले सकते हैं। लेकिन बाहर से लेने से पहले उनको हरियाणा के बच्चे लेने केलिये ती न बार यहां हरियाणा के लड़कों के ही इन्टरव्यू लेने होंगे। जब यहां से 'नहीं मिल पायेगा तो ही वे बाहर से ले पाएंगे। उन पर यह कण्डीशन लगा दी है कि तभी उनको बिजली का कनैक्शन देंगे, तभी उनको जमीन अलाट करेंगे तभी उस फैक्टरी को चालू करने की बात 'करेंगे इसके साथ ही पोल्यूशन का प्लांट भी बाकायादा उनको लगाना पड़ेगा, तभी फैक्टरी लगाने की इजाजत मिलेगी। (विघ्न)

बैठक का समय बढ़ाना

श्री अध्यक्षः यदि हाउस, की सहमति हो तो बैठक का टाईम एक घंटा और बढ़ा दिया जाए।

आवाजें: ठीक है जी।

श्री अध्यक्षः बैठक का समय एक घंटे के लिये बढ़ाया जाता है।

मन्त्री परिषद के विरुद्ध अविश्वास' प्रस्ताव पर चर्चा (पुनरारम्भ)

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, आप जानते हैं कि हरियाणा एक कृषि प्रधान प्रदेश है। चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी ने फूड प्रोसैसिंग की बात बिल्कुल ठीक ही कही है। फलों और सब्जियों की प्रोसैसिंग किए जाने के लिये बाकायदा 600 एकड़ जमीन दिल्ली के पास कुण्डली में रखी है। इससे हरियाणा को बहुत फायदा होगा तथा साथ ही हिमाचल प्रदेश उत्तर प्रदेश, जम्मू कश्मीर तथा पंजाब आदि सभी राज्यों के किसानों को लाभ होगा। वहां से ज्यादा से ज्यादा फल और सब्जियां आएंगी तथा कुण्डली में इनकी प्रोसैसिंग हो सकेगी। इसके लिये हमने भारत सरकार को लिखा है कि यहां पर एक ऐयर स्ट्रिप या ऐयर पोर्ट भी होना चाहिए ताकि यहां का बना हुआ माल सारी दुनिया में जाए और किसानों को ज्यादा से ज्यादा पैसा मिल सके। (विघ्न) एक चिट्ठी हमने पहले लिखी थी, जिसका जवाब नैगेटिव आया है लेकिन हमने दोवारा इसके लिये लिखा है तथा रिमाइंडर भी भेजा है कि वे इसको करें। मैं कोई गलत बात क्यों बोलूंगा जो सही है, वही कहूंगा। अध्यक्ष महोदय, इसी तय से इन्होंने एक बात कादमा के बारे में कह दी कि वहां पर 500 पुलिस वाले चले गए। पुलिस वाले वहां तब गए जब वहां पहले वाले पुलिस के लोग पिट लिए। वहां पर बुरी हालत हो गई तब जा कर और पुलिस फोर्स वहां पर भेजनी पडी। वहां पर पोल और पेडू काट कर सारा ट्रैफिक रोक दिया। आज सभी जानते हैं कि वहां पर कितनी मुरी हालत हो गई

थी। अगर वहां पर कोई इन्तजाम न करते तो पता नहीं कितनी बुरी हालत वहां पर होती। राम बिलास शर्मा जी ने रेणुका काष्ठ के बारे में कहा, कुसुम लता की बात और द्रोपदी की बात भी कही गई, इनका जवाब दे दिया है। स्पीकर साहब, इन्होंने एक बात रोहतक के बारे में कही कि जब ये रोहतक गए तो पुलिस ने लाठीचार्ज किया। कोई लाठीचार्ज का सवाल नहीं था। इनकी पार्टी के 40–50 ज्यादा से ज्यादा लोग होंगे और साथ में सेठी भी खडा हुआ था, वे लोग बतरा जी के खिलाफ नारे लगा रहे थे थे कह रहे थे कि बतरा की ने शहर को डुबो दिया (विघ्न) अध्यक्ष महोदय, लाठीचार्ज करने का कोई सवाल ही नहीं बै। मैंने बाकायदा किश्ती से उतर कर उनके सामने खड़े हो कर अपनी बात कही। वहां पर पानी थोड़ा था और किश्ती से वहां तक नहीं जा सकते थे या फिर मुझे पानी मै से चल कर जाना पडता। (विघ्न) एक किनारे के पास हम खड़े थे। अध्यक्ष महोदय, मैं जो कहता हूं ओम ओथ कहता हूं। इस किनारे पर खड़े हो कर मैंने उनको भाषण दिया। माईक पकड कर मैंने उनको कहा कि वे मेरी बात सुनें। बतरा ने कुछ नहीं करवाया है, यह तो कुदरत की बात है। सभी लोग हालत को ठीक करने में लगे हुए हे। मैं सबकी तकलीफ सुनने के लिये उनके पास आया हूं। सारे अधिकारी साथ हैं। मन्दिर साथ में है, हम आपकी बात सुनने के लिये आए हैं। उसके बाद हमने आफिसर्ज की मीटिंग ली और आगे जा कर मैंने उनसे बात की। बीच बीच में कोई नारा लग जाता था। मैंने कहा कि सभी लोग मन्दिर में आ जाएं फिर ये मन्दिर में आ गए।

मन्दिर में करीब दो अढ़ाई हजार लोग थे। वहां पर पूरे भाषण हुए और तब सब को बात समझ में आई, सब की तसल्ली हुई। अध्यक्ष महोदय, जब मैं चलने लगा तो इनकी पार्टी के 40–50 लोगों ने फिर बतरा साहब मुर्दाबाद कह दिया। मेरे खिलाफ उन्होंने नारे नहीं लगाए। बतरा साहब के बारे में उन्होने कहा कि अपने माडल टाउन को बचाने के लिये उन्होंने शहर को डूबो दिया।

प्रो० राम बिलास शर्माः स्पीकर मर, अपने भाषण में इन्होंने मान लिया कि माडल टाउन को बचाने के लिये पानी शहर की तरफ छोड़ा आ।

चौधरी भजन लालः स्पीकर साहब, माडल टाउन का पानी तो शहर मे तब जाएगा जब पानी बहुत चढ़ जाएगा क्योंकि वह ऊंचा ऐरिया है। (विघ्न) अध्यक्ष महोदय, मैंने सभी बातों का जवाब दे दिया है जो इन्होंने हैफेड के बारे में कहा कि वहां पर 32 हजार बोरी खराब हो गई है तो हम उसका भी इन्तजाम कर रहे हैं। इसके अलावा मैंने सुबह कहा था कि मैं धीरपाल जी के बारे मे बता दूंगा। अध्यक्ष महोदय, मैं इनको बताना चाहूंगा कि चौधरी धीर पाल मैडिकल कालेज रोहतक में प्राईवेट वार्ड, कमरा नं० 101 में हैं और वहां पर उनको पूरी खुराक दी जा रही है। शायद ये रात को उनको मिलते भी होंगे। (शोर एवं व्यवधान) ठीक है, मैं डिटेल में नहीं कहूंगा। अध्यक्ष महोदय, वहां के एस० पी ० ने धीरपाल जी को उठाया था उन्होंने वहां के डी ० सी ० को कहा था कि इनकी तबीयत ठीक नही है आप इनको एडमिट

करवा दो और हम इनकी देखभाल कर लेंगे। अब उनसे वहां पर उनके रिश्तेदार मिलने जा रहे हैं और न ही किसी के खिलाफ कोई केस रजिस्टर्ड है।

प्रो० सम्पत सिंहः अध्यक्ष महोदय, उन्हें लेकर तो पुलिस ही गई थी।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, मैं इनको कह रहा हूं कि वहां पर किसी के खिलाफ कोई केस रजिस्टर्ड नहीं है।

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर सर, उनको बाकायदा पुलिस गिरफ्तार करके से गयी है।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, इन्होंने जो–जो रातें कही हैं, मैंने उनका जवाब दे दिया है अब इनके पाम कोई मुद्दा नही बचा है, कोई बात नही रची है। ये केवल गलत सीन क्रिएट करने की कोशिश करते हैं। मेरा इनसे निवेदन है कि हाउस की गरिमा को बनाए रखें। इन्होने बार बार आपकी भी तौहीन करने की कोशिश की है, जिसका हमें सबसे ज्यादा दुख है। ये हमें कुछ भी कह लेते लेकिन इन्होंने तो चेयर की मान मर्यादा को भी कायम नहीं रखा। कई बार आपको भी इन्होंने चौलेंज किया जो कि मडी भारी दुखदायी रात है और हम इसको कंडैम करते है।

प्रो० सम्पत सिंहः हम ट्रेजरी बैंचिज को कंडैम करते हैं।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, इनसे कहिए कि ये सुनने की कृपा भी करें। इन्होंने तो यहां तक कह दिया कि हम आपकी मदद करते हैं। धीरपाल सिंह जी के यारे में मैं क्या कह सकता हूं। लेकिन मैं यह बात दावे के माथ कह सकता हूं कि या तो उनके साईन फर्जी थे या वे यहां पर नहीं थे।

प्रो० सम्पत सिंहः सर, उनके रोहतक में जाकर इस मोशन पर दस्तखत कराए गए है।

चौधरी भजन लालः तो क्या इसके लिए एक इंक्वायरी बिठाएं कि उनके साईन कहां पर कराए गए थे? इंक्वायरी में यह बात आ सकती है।

प्रो० सम्पत सिंहः अगर उसके बाद उनके साईन ठीक निकल गए तो फिर आप क्या करोगे, क्या फिर आप इस्तीफा दोगे?

चौधरी भजन लालः हम आपकी बात को सच्ची मान लेंगे कि आप सच्चे हो। मैं क्यों इस्तीफा दूंगा? अध्यक्ष महोदय, बाकी जितने भी माननीय सदस्यों ने सुझाव दिए है, वे बहुत ही अच्छे हैं (विघ्न)

प्रो० सम्पत सिंहः सर, ये बिल्कुल असत्य कह रहे हैं।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, हमारे प्रदेश के अधिकारियों ने, हमारी पार्टीज के सभी मन्त्रियों ने, एम० एल०

एज० ने, एम० पीज० ने और हमारी पार्टी के वर्कर्ज ने सबने मिलकर फ्लड के लिए बड़ा भारी काम किया है लेकिन ये तो कहीं गए ही नहीं। इन्होंने कुछ नहीं किया, सिवाए इसके कि सरकार के खिलाफ लोगों को भड़काए।

वाक आउट

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर सर, गवर्नमैंट का जवाब धीरपाल सिंह जी के यारे मैं असंतोषजनक है क्योंकि पुलिस उनको गिरफ्तार करके रिले गयी है। इन्होंने यह गलत ब्यानी की है कि उनको पुलिस ने गिरफ्तार नहीं किया है। इसलिये हम इसको कंडैम करते हैं और एज ए प्रोटैस्ट वाक आउट करते है

(इस समय जनता पार्टी के सभी उपस्थित सदस्य सदन से वाक आउट कर गए)

मन्त्री परिषद के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर मतदान

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे भी और सारे हाउस से प्रार्थना करूंगा कि इन्होंने जो यह अविश्वास प्रस्ताव सदन के सामने रखा है, इसको नकार करके दोबारा से सरकार में विश्वास बहाल करें। शुक्रिया।

Mr. Speaker : Now, I will put the motion to the vote of the House.

Question is—

That this House expressesits want of confidence in the Council of Ministers headed by Shri Bhajan Lal, Chief Minister.

After ascertaining the votes of the Members by voices, Mr. Speaker announced that 'Noes' have it, whereupon division was claimed. Mr. Speaker, after calling upon those Members, who were for 'Aye' and those who were for 'No', respectively, to rise in their places and on a count having been taken. declared that the motion was lost.

The motion was lost

नियम 15 के अधीन प्रस्ताव

Mr. Speaker : Hon'ble members, we are proceeding further. (Noise & Interruptions) Now, the Parliamentary Affairs Minister may move the Motion under Rule 15.

Irrigation Minister (Shri Jagdish Nehra) : Sir, I beg to move—

That the proceedings on the items of business fixed or today be exempted at this day's sitting from the provisions of the Rule 'Sittings of the Assembly', indefinitely.

Mr. Speaker : Motion moved—

That the proceedings on the items of business fixed for today be exempted at this day's sitting from the provisions of the Rule 'Sittings of the Assembly, indefinitely.

Mr. Speaker : Question is—

That the proceedings on the items of Business fixed for today be exempted at this day's sitting from the provisions of the Rule 'Sittings of the Assembly', indefinitely.

The motion was carried

नियम 16 के अधीन प्रस्ताव

Mr. Speaker : Now the Parliamentary Affairs Minister may move the motion under Rule 16.

Irrigation Minister (Shri Jagdish Nehra) : Sir, I beg to move—

That the Assembly at its rising this day shall stand adjourned sine-die.

Mr. Speaker : Motion moved—

That the Assembly at its rising this day shall stand adjourned sine-die.

Mr. Speaker : Question is—

That the Assembly at its rising this day shall stand adjourned sine-die.

The motion was carried.

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर सर, जब भी कोई मोशन मूव किया जाता है, क्या उस पर मैम्बर को बोलने का अधिकार नही है ? इस तरह से यह ''यस' और ''नो'' कहने का क्या फायदा। मैं एक बात कहना चाहता हूं कि हमने आपके सामने पहले एक अपील

की थी और आत्मा की आवाज पर इन्हेंने हमारे साथ 'हां' कर दी। अब इनका यहां बैठने का मौरल राईट नहीं है। (शोर एवं व्यवधान)

ध्यानाकर्षण प्रस्ताव–

(1) जिला फरीदाबाद में बिजली के ट्रांसफारमर्ज जलने संबंधी

Mr. Speaker : Prof. Sahab, no more discussion on this, now. (Noise & Interruptions).

Prof. Sampat Singh : Speaker, Sir, I wanted to speak on this motion. (Noise & Interruptions).

Mr. Speaker : No please. Now I shall proceed further. (Noise & Interruptions). Hon'ble Members, I have received a notice of Call Attention Motion No. 2 from Shri Karan Singh Dalal, M.L.A. regarding burning of Electricity transformers in district Faridabad. I have admitted it for today. Shri Karan Singh Dalal, M.L.A. may please read his notice.

(Shri Karan Singh Dalal was not present in the House and, therefore, the notice of motion was not read out. However, the Power Minister, with the permission of the Speaker, laid a copy of the statement on the Table of the House.)

वक्तव्य–

बिजली मन्त्री हारा (सदन की मेज पर रखी गई प्रति) उपरोक्त ध्यानाकर्षण प्रस्ताव संबंधी

''क्षतिग्रस्त वितरण ट्रांसफार्मरों को बदलने के लिये विशेष रूप से वर्षा ऋतु में अग्रिम रूप से एक योजना बनाई जाती है जिसके अन्तर्गत बदले जाने वाल ट्रांसफार्मरों की आवश्यकता तथा भण्डार किये जाने वाले ट्रांसफार्मरों का अनुमान लगाया जाता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि गत वर्षो में इसी अग्रिम योजना के परिणामस्वरूप क्षतिग्रस्त ट्रांसफार्मरों का तेजी से बदला जाना संभव हुआ चालू वर्ष के दौरान भी ऐसा ही किया गया है। बोर्ड ने अपनी कार्यशालाओं में तथा निजी फर्मो के द्वारा क्षतिग्रस्त ट्रांसफार्मरों की मुरम्मत के अतिरिक्त पर्याप्त माता में वितरण ट्रांसफार्मरों को खरीदने के लिये आदेश दिये थे। इसके अतिरिक्त विगत प्रचलन के आधार पर जून, 1995 में लगभग 3600 ट्रांसफार्मरों का एक बैंक बनाया गया था। जुलाई के अन्त तक क्षतिग्रस्त ट्रांसफार्मरों के बदलने की स्थिति काफी सुखद थी उस समय फरीदाबाद जिला सहित राज्य में ट्रांसफार्मर शीघ्रातिशीघ्र बदले जा रहे थे। परन्तु अगस्त तथा' सितम्बर 1995 के दौरान काफी वर्षा हुई जिससे राज्य के विभिन्न भागों में बाढ़ आ गई जिसके परिणाम स्वरूप काफी संख्या में ट्रांसफार्मर क्षतिग्रस्त हो गये। इसी मध्य लगभग समस्त उत्तरी राज्यों से ट्रांसफार्मर की भारी मांग के कारण निर्माताओं से नये ट्रांसफार्मरों की प्राप्ति भी कम हो गई। इतना ही नहीं बाढ से प्रभावित क्षेत्रों में पानी के

निकासी के कार्य के लिये बड़ी माता में ट्रांसफार्मरों को भेजना पडा जिससे ट्रांस– फार्मरों की उपलब्धि की स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। यद्धपि अगस्त 1995 के दौरान जिता फरीदाबाद को 124 ट्रांसफार्मर भेजे गए थे फिर भी वहां महीने के अन्त में 88 ट्रांसफार्मर अभी बदलने की प्रक्रिया के अन्तर्गत थे। सितम्बर 1995 के पहले पखवाड़े के दौरान फरीदाबाद में 94 ट्रांसफार्मर बदले गए थे तथा अभी भी हाल ही में और अधिक ट्रांसफार्मर बदले गए हैं। जसके परिणाम स्वरूप 15 सितम्बर 1995 को लम्बित पड़े 101 खराब ट्रांसफार्मरों की संख्या जिनमें से 58 पलवल डिवीजन से संबंधित थे, घट कर, 22 सितम्बर को 67 रह गई थी। आगामी 3 से 4 सप्ताह की अवधि के दौरान मरम्मत किये गए तथा नए ट्रांसफार्मरों की पर्याप्त माता प्राप्त होने की आशा है जिससे पिछला बैकलाग (बकाया) खत्म हो जाएगा। बोर्ड जिला फरीदाबाद को पर्याप्त माता में बिजली सप्लाई (आपूर्ति) कर रहा है तथा इस जिला से बिजली आपूर्ति के संबंध में किसी भी शिकायत की कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है। हालांकि पिछले मास के दौरान पल्ला तथा एफ० सी० आई० फरीदाबाद में बिजली ट्रांसफार्मरों के (क्षतिग्रस्त होने के कारण कुछ क्षेत्र बिजली सप्लाई (आपूर्ति) से प्रभावित हुए थे। इन ट्रांसफार्मरों को तेजी से बदल दिया गया था और बिजली सप्लाई (आपूर्ति) को पुनरू बहाल कर दिया गया था।
''

ध्यानाकर्षण प्रस्ताव–

(2) नेपाल तथा उत्तर प्रदेश को जा रहे 55 यात्रियों की वस एक्सीडैन्ट में हुई मृत्यु संबंधी

Mr. Speaker : Hon'ble Members, I have received a notice of Calling Attention Motion No. 6 from Dr. Ram Parkash, M.L.A. regarding death of 55 pilgrims of Kurukshetra and adjoining areas, in bus accident on 17th June, 1995 in Uttar Pradesh. I have admitted it for today. Dr. Ram Parkash may please read his notice.

डा० राम प्रकाश: मैं माननीय सदन का ध्यान जनहित के एक अति महत्वपूर्ण मामले की ओर दिलाना चाहता हूं कि दिनांक 14–6–95 को कुरुक्षेत्र और इसके मास–पास के क्षेत्रों से करीब 55 तीर्थ यात्री एक बस में हरिद्वार नेपाल और जगन्नाथपुरी की तीर्थ यात्रा के लिये रवाना हुए थे। उक्त तीर्थ यात्रियों ने गढ़वाल मण्डल विकास निगम देहरादून (जो कि उत्तरप्रदेश द्वारा मान्यता प्राप्त है) कुरुक्षेत्र से अग्रिम टिकटें बुक करवाई थी। यह बस अनिल टूरिस्ट और ट्रेब्लस की थी। ऐसा कहा गया है कि यह बस दिनांक 17– 6– 95 को दुर्घटनाग्रस्त हो गई और किसी भी यात्री का शव नही पाया। ना तो मृतक के परिवारों को कोई अन्तरिम सहायता दी गई और न ही इस घटना के बारे में कोई जांच की गई है। पटना स्थल से कथित रूप से बरामद किया हुआ सामान भी आज तक कुरुक्षेत्र पहचान के लिये नहीं लाया गया पै। इसके कारण लोगों में पर्याप्त रोष और दुख है। इसलिये मैं सरकार से अनुरोध करता हूं कि इस बारे में सदन में एक वक्तव्य दें।

वक्तव्य

उपरोक्त ध्यानाकर्षण प्रस्ताव संबंधी

मुख्य मन्त्री (चौधरी भजन लाल): दिनांक 22–6– 95 को उपायुक्त कुरूक्षेत्र को प्रबन्धक निदेशक, गडवाल मण्डल विकास निगम देहरादून (यू० पी ० की मार्फत भारतीय दूतावास नेपाल के मुख्य सुरक्षा अधिकारी की तरफ से एक सूचना मिली कि बस नं० यू० पी ० – 10–बी /०939 जिसमें 50 तीर्थ यात्री सवार थे, दुर्घटनाग्रस्त होकर दिनांक 17/18–6–95 को नेपाल में त्रिसूली नदी में गिर गर्ह है और इस अभागी बस के सभी यात्री मर गये हैं। इस बस मैं एक नाबालिक लड़की सहित 27 व्यक्ति एल ० टी० सी० पर तथा 23 अन्य व्यक्ति सवार थे। उसने यह भी सूचित किया कि गढ़वाल मण्डल विकास निगम लिमिटिड के तीन अधिकारियों का स्थ दल घटना स्थल पर भेज दिया गया है उपायुक्त, कुरुक्षेत्र ने शीघ्र ही उत्तर प्रदेश के अधिकारियों से सम्पर्क किया। उपायुक्त ने एक कार्यकारी मैजिस्ट्रेट केजिम्मे यह जांच भी सौंपी वह यात्रियों की सही पहचान का पता लगायें। जांच के दौरान यह पाया गया कि यह अभागी बस न० यू० पी०10–बी 0939 अनिल टूरज एण्ड ट्रैवलज के मालिक अनिल क्उमार की थी, जिसका न्यू इण्डिया एश्योरैन्श कम्पनी लिमिटिड बागपत रोड मेरठ (यू० पी ०) से बीमा करवाया गया था और इस अभागी बस मे 50 यात्री सवार थे। मौके से सूचना प्राप्त करने के लिये गाव के नागरिकों सहित पुलिस कर्मचारियों का एक दल भी

घटना स्थल पर भेजा गया था उपायुक्त कुरुक्षेत्र द्वारा दिनांक 21–9–95 को 50 यात्रियों (चालक व परिचालक के अतिरिक्त) के मृत्यु प्रमाण पत भारतीय दुतावास से प्रप्त कर लिये हैं। नेपाली अधिकारी बस तथा लाशों को बरामद करने में अभी तक सफल नहीं हुए है। बस तथा यात्रियों की लाशों को ढूंढने के प्रयत्न अभी भी जारी है। यह हम सूची जानते हैं कि हरियाणा सरकार के कर्मचारी तथा अधिकारी अन्य देश की भूमि पर बचाव कार्य स्वयं नही कर सकते। जिला प्रशासन ने तत्परता से म्रत्यु प्रमाण पड प्राप्त करने का मामला नेपाल स्थित भारतीय दुतावास के साथ उठाया। अब जो मूत्यु प्रमाण पत्र प्राप्त हुए हैं, उनके आधार पर उचित सहायता देने हेतु विचर किया जा उड़ा है। इसके अलावा मैं एक बात ओर कहना चाहता हू कि ज्यों ही डी० सी०, कुरुक्षेत्र को इस बारे में पता चला तो उन्हेंने मुझे टैलिफोन किया। मैंने फोरन नेपाल हमारे दूतावास श्री ए० बी ० रजन से और यू० पी ० के मुख्य मन्त्री से फोन पर बात की। रमने अपनी पूरी हमदर्दी उसी वक्त दिखाई थी। हमें बड़ा दुख और खेद है कि 150–200 फुट गहरी जगह नीचे थी इसीलिये अभी तक न वह बस मिली है ओर न कोई लाश मिली है।

डा० राम प्रकाशः स्पीकर साहब, मैं मुख्य मन्त्री जी से जानना चाहूगा कि इस बस दुर्घटना के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिये क्या उत्तर प्रदेश सरकार को कोई लिखित प्रार्थना भेजी गई थी कि दुर्घटना के स्थल पर कोई सभान या बस की

टूटी हुई सीटें या किसी यात्री का बैग अथवा यात्रियों की सूची आपको मिली है दुर्धटना ग्रस्त लौगों की पूरी सूची और पते क्या हैं? क्या उन्हीं के नाम पर टिकट बुक करवाए गए थे। इसके अलावा इसमें रूप कुमार शर्मा की क्या भूमिका रही है? दुर्घटनाग्रस्त लोगों के परिवारों को कब तक राहत देंगे? यह मैं जानना चाहता हूं।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, हमने बाकयदा एच० सी ० एस० अधिकारी श्रीमती सुमेधा कटारिया की डियूटी लगाई। वे मौके पर गई। उन्होंने बड़ी मेहनत से काम किया और वे सारे ऐड्रस ले कर आई। उस बस में 27 आदमी एल० टी ० सी ० पर थे जिनमें से चार आदमी हरियाणा सरकार के थे और 23 भारत सरकार के थे। अगर आप उनके ऐड्रस जानना चाहते हैं तो वह मैं आपको बता सकता हूं। उनमें स्थ श्री राम मित्तल सन आफ भाग राम, मकान नं० 202 न्यू हाउसिंग कालोनी, करनाल का है। इसमें चार आदमी करनाल के हैं। इस लिस्ट की कापी मैं आपको दिखा दूंगा। धर्म पाल पुत्र श्री राम नारायण तथा एक और आदमी कैथल के हैं। राम नगर करनाल के पांच आदमी और हैं। इसी तरह से एक गुड्डो पुत्री राम कुमार कक्कड़ यह भी करनाल की है। इसी तरह से कुरूक्षेत्र के एम० आर० कपूर पुत्र मलिक चन्द कपूर। एक इनकी घर वाली और एक इनका बेटा भी था। उसके बाद फिर कैथल के चार आदमी हैं। इसी तरह से कुरूक्षेत्र का एक गेन्दा राम पुत शंकर दास है। तीन लोग पानीपत के हैं, चार यमुनानगर

के हैं। उसके बाद फिर कुरुक्षेत्र की पत्नी देवी पुत्री छाजू राम है। एक शकुन्तला देवी पुत्री मोहन लाल यह भी कुरुक्षेत्र की है। फिर भूना गांव के चार लोग हैं। इसी तरह से कुरुक्षेव की जानकी देवी, कृष्णोदेवी, नरसी भगत ये दोनों भी कुरुक्षेत्र के हैं। बीरबल करनाल का है। इसी तरह से शांति देवी, विनोद कुमार, दुनिचन्द हरिश कुमार ये कुरक्षेत्र से है। इसी प्रकार से एन० एन० कश्यप कुरुक्षेत्र से हैं। कमल शर्मा युत्र रूप कुमार शर्मा नजदीक पुरानी सब्जी मण्डी कुरुक्षेत्र के हैं। रामेशर भी कुरुक्षेत्र से है। इसी प्रकार से कुरुक्षेत्र के दो और हैं। कैथल के दो हैं इनके अलावा कुरूक्षेत्र का एक और है फिर एक और है। यह मेरे पास पूरी डिटेल है। सब लोगों के एड्रैस मेरे पास हैं।

16.00 बजे

डा० राम प्रकाशः स्पीकर साहब, मैंने यह सवाल पूछा था कि क्या दुर्घटना स्थल से कोई सामान या बस की टूटी हुई सीट या किसी दाती का बैग या यात्रियों की कोई सूची मिली है क्योंकि इसके बारे में जो कमेटी बनी है, उसने एक परिपत्र जारी किया है जिसमें कुछ सवाल पूछे गए हैं। उनमें से एक सवाल यह भी है जो उस इन्क्वायरी से ताल्लुक रखता है। दुर्घटना स्थल से बस की कोई टूटी हुई सीट मिली है या नहीं क्या इसके बारे में आपको कोई जानकारी है?

चौधरी भजन लालः इसके बारे में मेरे पास कोई जानकारी नहीं है। मैं इस बारे में पता करके आपको इनफर्मेशन देने की कोशिश करुंगा।

श्री अध्यक्षः उस हादसे में मरने वालों को क्या आप कोई फाइनैंशियल हैल्प देंगे।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, उनको फाइनैंशियल हैल्प देने का जहां तक ताल्लुक है, इसके बारे में आप जानते हैं कि जो सरकारी अधिकारी या कर्मचारी हैं उनको ग्रेच्यूटी ग्रुप इन्श्योंरैन्स स्कीम और एक्स ग्रेशिया ये सब उनको मिलेगा।

श्री अध्यक्षः जो प्राईवेट आदमी मरे हैं, क्या उनको भी फाईनैशियल हैल्थ मिलेगी।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, जो दूसरे प्राईवेट लोग मरे है, अगर आप चाहते हैं तो हम उनकी भी मदद कर देंगे।

श्री अध्यक्षः हम तो चाहते हैं कि उनकी मदद हो।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, उनको 25–25 हजार रुपए दे देंगे।

ध्यानाकर्षण सूचनाए

डा० राम प्रकाशः स्पीकर साहब, मैंने एक ध्यानाकर्षण प्रस्ताव पिछड़े वर्ग के बारे में दिया था उसके बारे में आपने क्या फैसला दिया है? मैंनै वह ध्यानाकर्षण प्रस्ताव दिया था कि 20 जुलाई 1995 को सरकार ने एक परिपत्र जारी करके जो पूर्व घोषित पिछड़े वर्ग के लोग थे, उनके बारे में कहा है कि पूर्व घोषित 10 परसैन्ट कोटे में ही नई पांच जातियों को शामिल करके पहले घोषित लोगों के बच्चों को कालेज और विश्वविद्यालयों में प्रवेश से लगभग दूर कर दिया गया है।

श्री अध्यक्षः वह डिस अलाउ कर दिया गया है।

डा० राम प्रकाशः स्पीकर साहब, आपने मुझे कोई कारण तो नही बताए।

श्री अध्यक्षः वह मैंने डिसअलाउ कर दिया है। आप इस बारे में ज्यादा न बोलें। (शोर)

डा० राम प्रकाशः स्पीकर साहब, आप उसे डिसअलाउ न करते और गवर्नमैंट से उसका जवाब मांगते? (शोर)

श्री अध्यक्षः जो 27 परसैन्ट रिजर्वेशन है, उसमें से 11 परसैन्ट अलग है। अदरयाईज बैकवर्ड क्लासिज के लिये 16 परसैन्ट रिजर्वेशन है, वह सोशली बैकवर्ड क्लासिज जो पहले थी, उनकी है।

डा० राम प्रकाशः स्पीकर साइन, यह नहीं किया गया है।

Mr. Speaker : No discussion please. It is disallowed.

Dr. Ram Parkash : Sir, please listen to me.

Mr. Speaker : The Supreme Court has also justified the fact in Civil Writ No. 930 of 1990. That is all.

डा० राम प्रकाशः स्पीकर साहब, आप गरीबों के मारे में मेरी बात तो सुनें।

श्री अध्यक्षः अब कोई बात सुनने की जरुरत नहीं है।

चौधरी जिले सिंह जाखड़ः अध्यक्ष महोदय, मैंने एक काल अटैन्शन मोशन दिया था कि रोहतक में झज्जर रोड के साथ साथ जे०एल०एन० तक गंदे तथा सीवरेज के पानी को निकालने के लिये नाला बनाया हुआ है। इस नाले से सारे शहर का गंदा पानी जे०एल०एन० में डाला जाता है। जे०एल०एन० का पानी कई गांवों में पीने के लिये इस्तेमाल मे लाया जाता है। तकरीबन 50—100 गांवों में इस पानी को इस्तेमाल किया जाता है। मेरा कहना यह है कि इस नाले का जो नैचुरल फलो था वह बन्द कर दिया गया है। मैं चाहूंगा कि जो गंदा पानी और सीवरेज का पानी जे ०एल०एन० में डाला जा रहा है, वह उसने न डालकर ड्रेन नं० 8 में डाला जाये ताकि लोगो को साफ पीने का पानी मिल सके।

श्री अध्यक्षः बाढ़ के इशू पर सभी को बोलने का मौका दिया गया था उस समय आप अपनी यह बात कह सकते. थे। अब आप बैठिये।

चौधरी जिले सिंह जाखडः अध्यक्ष महोदय, लोगों के जीवन मरण का सवाल है। मेरे इस मोशन का क्या हुआ।

श्री अध्यक्षः यह समझ लो कि वह डिसएलाऊ हो गया। एक दिन में मैकसिमम दो काल अटैंशन मोशन एडमिट हो सकते हैं, वे लग चुके हैं।

चौधरी जिले सिंह जाखड़ः स्पीकर साहब, मैंने 27 तारीख को यह मोशन दिया था।

श्री अध्यक्षः मैंने बताया है कि एक दिन में दो से ज्यादा काल अटैशन मोशन नहीं लग सकते। इसलिये अब आप वाला मोशन नहीं लग सकता, आप बैठिए।

चौधरी जिले सिह जाखड़ः आप मेरी बात तो सुनिए।

श्री अध्यक्षः आप संबंधित मंत्री को चिट्ठी लिख सकते हैं और उनसे पर्सनली भी मिलकर इस समस्या का समाधान निकलवा सकते हैं। अव चौधरी बंसी लाल जी अपनी बात कहेंगे।

चौधरी बंसी लालः अध्यक्ष महोदय, मैंने एक मोशन रूल–84 के तहत दी थी for discussing the interests of water

and territorial disputes between the two states. *** *** ***

Mr. Speaker : Chaudhry Sahib, it is disallowed. (Noise & Interruptions).

श्री सतबीर सिंह कादयानः स्पीकर साहब, मैंने एक ध्यानाकर्षण प्रस्ताव पानीपत के सहकारी शुगर मिल के बारे में दिया था कि वहां पर किसानों का मिल की तरफ एक करोड़ 20 लाख रुपया बकाया है।

श्री अध्यक्षः वह डिस–अलाउ हो गया है। (विघ्न)

श्री सतबीर सिंह कादयानः स्पीकर साहब, यह तो बहुत सीरियस बात है, इसका जवाब आना चाहिये। (शोर)

श्री अध्यक्षः मैंने आपको बता दिया है कि वह डिस–अलाउ हो गया है (शोर)

(इस समय श्री सतबीर सिंह कादयान प्रोटैस्ट जाहिर करने के लिये सदन के वैल में आ कर बोलने लग गए।)

सिंचाई मन्त्री (श्री जगदीश नेहरा): स्पीकर साहब, मेरा प्वायंट आफ आर्डर है। रूल 84 के तहत चौधरी बंसी लाल जी लगातार अपनी सारी बात क्ह गए और 1985 के एकार्ड का पैरा भी पढ़ कर सुना दिया और आपने ऋ दिया, ''डिस अलाउड ''। इनकी बात तो आ गई लेकिन हम उनकी बात का जवाब नहीं दे सके। (विघ्न) .....

चौधरी बंसी लालः स्पीकर साहब, अगर इस पर लैड बेयर डिस्कशन हो जाए तो सारी बात सामने आ जाएगी। (विघन एवं शोर)

श्री जगदीश नेहराः अध्यक्ष महोदय, मेरी गुजारिश है कि यह मामला पहले भी कई दफा डिस्कस हो चुका है।

श्री अध्यक्षः यह डिस अलाउ किया जा चुका है।

श्री वीरेन्द्र सिंहः अध्यक्ष महोदय, मेरी गुजारिश है कि इन्होंने जो कहा, वह रिकार्ड में रहेगा लेकिन मुख्य मन्त्री जी यहां पर नहीं हैं इसलिये वे इसका जवाब नहीं दे सकते हैं। (विघ्न एवं शोर)

श्री जगदीश नेहराः अध्यक्ष महोदय, मेरी गुजारिश है कि इन्होंने जो कहा है उसको डिलीट किया जाना चाहिये। (विघन एवं शोर)

Mr. Speaker : Whatever has been said on this matter from both the sides is deleted.

बिल्ज–

(1) दि हरियाणा एप्रोप्रिएशन (सं० 2) बिल, 1995

Mr. Speaker : Now, the Finance Minister will introduce the Haryana Appropriation (No. 3) Bill, 1995 and also move the motion for its consideration.

Finance Minister (Shri Mange Ram Gupta) : Speaker Sir, **I** introduce the Haryana Appropriation (No. 3) Bill, 1995. **I** also beg to move—

That the Haryana Appropriation (No. 3) Bill be taken into consideration at once.

Mr. Speaker : Motion moved—

That the Haryana Appropriation (No. 3) Bill be taken into consideration at once.

Mr. Speaker : Question is—

That the Haryana Appropriation (No. 3) Bill be taken into consideration at once.

The motion was carried.

Mr. Speaker : Now, the House will consider the Bill clause by clause.

Clause 2

Mr. Speaker : Question is—That clause 2 stand part of the Bill.

The motion was carried

Clause 3

Mr. Speaker : Question is—That clause 3 stand part of the Bill.

The motion was carried.

Schedule

Mr. Speaker : Question is—

That the Schedule be the Schedule of the Bill.

The motion was carried.

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

बाई क्लाज पढ़ रहे थे, तब मैं खड़ा हुआ था। मैंने आपका ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करने की बहुत कोशिश की लेकिन ध्यान तो ट्रैजरी बैंजिच की तरफ था। सर, आप तो सारे हाउस के कस्टोडियन हैं और आपकी चेयर पार्टी पोलिटिक्स से ऊपर है। हम हमेशा आपकी इज्जत करते हैं। सर, अब तो यह हाउस ज्यादा से ज्यादा आधा घंटा ही और चलेगा। इसलिये जब सारा काम बढ़िया चल का था तो आपको मेरी तरफ ध्यान देना चाहिये था। केवल उधर का सैक्शन ही ऐसा नही है जिसकी तरफ आपको ध्यान देना है। आपको हमारी तरफ भी ध्यान देना चाहिये और ट्रैजरी बैचिज की खिंचाई करने में आपको हमारी मदद करनी चाहिये थी। सर, यही बात मैं आपको कहना चाहता था लेकिन

आपने हमारी तरफ ध्यान ही नहीं दिया कि मैं आपको कुछ कहना भी चाहता हूं।

श्री सतबीर सिंह कादयानः स्पीकर सर, आप मुझे भी सुन लें, मैं कहना चाहता हूं कि एक करोड़ बीस लाख रुपये चीनी मिल में लोगों के बकाया हैं और उनके साथ कॉड कर दिया।

श्री अध्यक्षः आपका मोशन डिसअलाउ कर दिया है, इसलिये आप बैठिए।

श्री सतबीर सिंह कादयानः स्पीकर सर,.. (व्यवधान)

चौधरी बंसी लालः अध्यक्ष महोदय, आप हाउस में आर्डर रैस्टोर करें और इस भाई को नैम करैं। (विघ्न)

श्री अध्यक्षः कादयान जी, आप बहुत ही पुराने और समझदार मैम्बर हैं, इसलिये अब आप बैठिए।

श्री सतबीर सिंह कादयानः सर, वहा पर 120 किसान एक ही गांव के हैं। मैं अपनी बात तो कहूंगा ही। आप चाहे तो इसकी इंक्वायरी करा लें या फिर सी०एम० साहब इस बारे में मुझे आश्वासन दे दें।

चौधरी भजन लालः ठीक है, आप मुझ से अलग से इस बारे में बात कर लेना।

Mr. Speaker : Question is—

That the Bill be passed.

The motion was carried.

(2) दि पंजाब कोर्टस (हरियाणा अमैंडमैंट) बिल, 1995

Mr. Speaker : Now, the Irrigation Minister will introduce the Punjab Courts (Haryana Amendment) Bill, 1995 and also move the motion for its consideration.

Irrigation Minister (Shri Jagdish Nehra) : Sir, I beg to introduce the Punjab Courts (Haryana Amendment) Bill, 1995..

Sir, I also move—

That the Punjab. Courts (Haryana Amendment) Bill be taken into consideration at once.

Mr. Speaker : Motion moved-

That the Punjab Courts(Haryana Amendment) Bill be taken into consideration at once.

प्रो० सम्पत सिंह (भट्टूकलां): स्पीकर सर, मैं आप के माध्यम से मुख्य मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं। ऐडमिनिस्ट्रेशन आफ जस्टिस भी इनके पास है। मैं यह कहना चाहता हूं कि पिछले दिनों डिस्ट्रिक्ट जज, सब जज और जूडीशियरी के अन्य जजों की सुविधाओं को लेकर हाई कोर्ट में पैटीशन डाली गई थी। उसमें उन्हेंने यह कहा था कि हमें

सुविधाएं दी जाएं ताकि हम इंडिपैडैटली काम कर सकें। हाई कोर्ट ने गवर्नमैंट को डायरैक्शन दी थी कि आप इनको लागू करें।

श्री अध्यक्षः सम्पत सिंह जी, आप टू दि प्वांयट बोलें। बिल पर क्लाज बाई क्लाज डिस्कशन अभी नही हुई है। इस प्वायंट पर आप तब बोलें जब क्लाज बाई क्लाज डिस्कशन शुरु हो।

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर सर, हम बिल पर डिस्कशन कर सकते हैं। मैं तो अपन) बात दर्ज कराना चाहता हूं कि जिन सुविधाओं का हाई कोर्ट ने आर्डर दिया है, उनको लागू करना चाहिये।

Mr. Speaker : Question is—

That the Punjab Courts(Haryana Amendment) Bill be taken into consideration at once.

The motion was carried.

Mr. Speaker : Now, the House will consider the Bill clause by clause.

Clause 2

Mr. Speaker : Question is—

That Clause 2 stand part of the Bill.

The motion was carried.

Clause 3

Mr. Speaker : Question is—

That clause 3 stand part of the Bill

The motion was carried.

Clause 4

Mr. Speaker : Question is—

That Clause 4 stand part of the Bill.

The motion was carried.

Clause 1

Mr. Speaker : Question is—

That Clause 1 stand part of the Bill.

The motion was carried.

Enacting Formula

Mr. Speaker : Question is—

That the Enacting Formula be the Enacting Formula of the Bill.

The motion was carried.

Title

Mr. Speaker : Question is—

That the Title be the Title of the Bill.

The motion was carried.

Mr. Speaker : Now, the Irrigation Minister will move that the Bill be passed.

Irrigation Minister (Shri Jagdish Nehra) : Sir, I beg to move—

That the Bill be passed.

Mr. Speaker : Motion moved—

That the Bill be passed.

Mr. Speaker : Question is—

That the Bill be passed.

The motion was carried.

(3) दि हरियाणा जनरल सेल्ज टैक्स (सैकिण्ड अमैंडमैंट) बिल, 1995

Mr. Speaker : Now, the Education Minister will introduce Guru Jambheshwar University, Hisar Bill, 1995.

Education Minister (Shri Phool Chand Mulana) : Speaker Sir, I introduce Guru Jambheshwar University, Hisar Bill, 1995.

Mr. Speaker : Motion moved—

That Guru Jambheshwar University, Hisar Bill, 1995 be introduced.

चौधरी बंसी लाल (तोशाम): अध्यक्ष महोदय, यह जो बिल हाउस में लाया गया है, इस बारे में मैं कला चाहूंगा कि

हरियाणा के अन्दर यूनिवर्सिटीज पहले से ही हैं। एक कुरुक्षेत्र में, एक रोहतक में और एक ऐग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी हिसार में है। रोहतक यूनिवर्सिटी अभी तक पूरी तरह से डिवैल्प भी नहीं हुई है। खास खास बिल्डिंग्ज बननी बाकी हैं और कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी ने भी बहुत सी तरक्की करनी है। ऋ चौथी यूनिवर्सिटी का भार प्रदेश के ऊपर जो आयेगा, यह एक अन–नेचुरल बर्डन प्रदेश की जनता के ऊपर डाला जाएगा। अध्यक्ष महोदय, साथ में इस बिल में यह भी दर्शाया गया है कि यह यूनिवर्सिटी हिसार में होगी। हिसार में तो पहले ही ऐग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी है। इंजीनियरिंग कालेज भी अब बन गया है। रोहतक में मैडीकल कालेज भी है और यूनिवर्सिटी भी है। हिसार के पास 14– 15 किलोमीटर पर अग्रोहा में एक मैडीकल कालेज और बन गया है जोकि महाराजा अग्रसेन जी के नाम से होगा। सोनीपत मैं भी इंजीनियरिंग कालेज बन गया है। लेकिन जीन्द का इलाका अभी तक इस हिसाब से बिल्कुल निगलेटिड है। वहां पर आज तक इतना बड़ा कोई काम नहीं हुआ है। जीन्द एक सैन्ट्रल प्लेस है, इस लिय यह बड़ा काम यहां पर होना चाहिये। यह यूनिवर्सिटी वहीं पर बननी चाहिये एक तो मैरा सुझाव यह है कि सरकार पहले तो इस बिल को वापिस ले ले और इंट्रोडयूस ही न करे। पहली यूनिवर्सिटीज को पहले पूरी तरह से डिवैल्प किया जाना चाहिये। अगर फिर भी सरकार यह समझती है कि इसको बनाना ही है तो इसे किसी और नाम से या डा० भीमराव अम्बेदकर के नाम से बनाया जाए। दूसरी बात यह

होनी चाहिये कि यह यूनिवर्सिटी जीन्द में होनी चाहिये। अध्यक्ष महोदय, इस यूनिवर्सिटी के बिल में लिखा है

"The limits of tie area within which the University shall exercise its powers shall be the whole of the State of Haryana."

फिर बाकी यूनिवर्सिटीज की क्या जरुरत रह गई। अगर पूरी स्टेट की जुरिसडिकशन इस यूनिवर्सिटी में होगी तो बाकी की क्या जरूरत है? इस बिल को सस्कार जल्द बाजी में लाई है, इसलिये सरकार इस क बिल को इन्ट्रोड्यूस न करे।

Mr. Speaker : In relation to what purpose might also be written in it.

चौधरी बंसी लालः इसमें सारे शब्द हैं। इसमे सभी कुछ आ गया लेकिन मेरा सुझाव यह है कि या तो आप इस बिल को सलैक्ट कमेटी को भेज दें या इसको ड्रोप कर दें। आप नए सिरे से सोच समझ कर इसको लाएं। दूसरी बात वह है कि इस यूनिवर्सिटी का नाम डा ० भीम राव अम्बेदकर यूनिवर्सिटी होना चाहिये और यह जीन्द में होनी चाहिये क्योकि जीन्द का क्लेम बनता है। हिसार में एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी बन गई, इंजीनियरिग कालेज और मैडीकल कालेज बन गए लेकिन जीन्द में ऐसी कोई चीज नहीं है। तो मेरा सुझाव यह है कि इस बिल को आज इन्ट्रोड्यूस न किया जाए, वापिस लिया जाए। या तो इस बिल को सलैक्ट कमेटी को भेजा जाए या सरकार इसे दोबारा सोच विचार

के बाद लाए। जैसे मैंने पहले कहा कि इसका नाम डा० भीम राव अम्बेडकर यूनिवर्सिटी होना चाहिये और यह जीन्द में होनी चाहिये।

चौधरी ओम प्रकाश बेरी (बेरी): अध्यक्ष महोदय, जैसे चौधरी बंसी लाल जी ने इंट्रोडक्शन स्टेज पर यह बिल न लाने की बात कही है, मैं उनकी बात का समर्थन करते हुए दो तीन सुझाव और देना चाहता हूं। पिछले सैशन में भी जब पंचायती राज बिल और म्यूनिसिपल बिल आए तो वे .बहुत जल्दबाजी में आए थे। रूल्ज के मुताबिक कोई बिल 15 दिन पहले सर्कुलेट होना चाहिये। परसों रात पौने ग्यारह बजे हमें इस बिल की कापी मिली थी। फिर रूल में यह भी है कि 72 घंटों से पहले बिल पर अमैंडमैंट नहीं दी जा सकती है तो 72 घंटे तो कल भी नहीं होंगे। इसलिए इनको बूट मैजोरिटी का फायदा नहीं उठाना चाहिए। आप 15 दिन का टाईम दीजिए ताकि हम इसकी पूरी की पूरी कलाजिज को पढ़ सकें। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि इसमें पूरे हरियाणा के लोगों के हित का सवाल है। आप बड़े बड़े एक्सपर्टस और प्रोफैसर्ज वगैरह की राय लें और सोच समझ कर इस बिल को लाएं। पहले से ही हरियाणा में तीन यूनिवर्सिटीज रोहतक कुरुक्षेत्र, और हिसार में हैं। फिर मेरी समझ में नहीं आता कि और यूनिवर्सिटी की क्या जरूरत है। अगर आप कोई टैक्नीकल यूनिवर्सिटी बनाने तो बात समझ में आती। आप कहेंगे कि इसमें टैक्नीकल शिक्षा देने के लिये स्कोप रखा है। अगर यह टैक्नीकल

यूनिवर्सिटी होती तो इसका बिल टैक्नीकल एजूकेशन मिनिस्टर की तरफ से पायलट होना था। चूकि इस बिल को शिक्षा मन्द्री ने पायलट किया है इसलिए यह टैक्नीकल यूनिवर्सिटी न हो कर जनरल यूनिवर्सिटी है जिसको एक सुपर यूनिवर्सिटी बनाने की वात की जा रही है। इसकी क्लाज 4 में साफ लिखा गया है कि इस यूनिवर्सिटी की जूरिसडिक्शन पूरे हरियाणा प्रदेश में होगी। तो बाकी यूनिवर्सिटीज का स्कोप क्या रह गया। इस बिल पर जो। हैडिंग दिया गया है उससे साफ जाहिर है कि इसको मल्टी फैकेलिटी यूनिवर्सिटी बनाने जा रहे हैं। अगर आप कोई और डिस्पिलन इन्ट्रोड्यूस करना चाहते हैं, अच्छी ऐडवांस टैक्नीकल इस्टीच्यूशन हरियाणा प्रदेश में आप कायम करना चाहते हैं तो आप जो प्रैजैट यूनिवर्सिटीज हैं, उनको और पावर दे सकते है। उनमें डिसिप्लिन एड कर सकते हैं। उनमें दूसरे सब्जैक्टस एड कर सकतै हैं। मैं कहता हूं कि चौधरी भजन लाल जी, आप अपने गुरु का आदर करते हो यह बहुत अच्छी बात है लेकिन हरियाणा प्रदेश में आप यह चौथी यूनिवर्सिटी स्थापित करके हरियाणा प्रदेश की जनता पर बहुत आर्थिक बोझ डाल रहे हो। आप इसे प्रैस्टिज इशू न बनाओ। इस यूनिवर्सिटी को बनाने से हरियाणा प्रदेश पर बहुत भारी आर्थिक बोझ पड़ेगा। मेरी प्रार्थना है कि इस बिल को सरकार वापस ले ले और यदि सरकार चाहे तो इस बिल को सिलैक्ट कमेटी के पास भेज दें ताकि इस पर वह गौर कर सके। उसके बाद यह बिल सदन मे पेश किया जाना चाहिए। आप इस बिल के स्टेटमैंट आफ रीजंज एंड औब्जैक्ट्स को देख लें। इसमें

दिया है कि हिसार में पहले से ही पोस्ट ग्रेजुएट रीजनल सैन्टर कायम है। रिवाड़ी में भी पोस्ट ग्रेजुएट रीजनल सैन्टर कायम है। यदि पोस्ट ग्रेजूएट रीजनल सैन्टर को आधार मान कर आप यह यूनिवर्सिटी बनाना चाहते हैं तो पोस्ट ग्रेजुएट रीजनल सैन्टर सबस पहले रिवाड़ी में बना था इसलिये आप वहां पर राव तुलाराम के नाम से यूनिवर्सिटी बना दें। हम उसका स्वागत करेंगे। वह पिछड़ा हुआ इलाका है, वहां यूनिवर्सिटी बना दें, हम सभी उसका स्वागत करेंगे। धार्मिक लोगों के नाम से इस प्रदेश में यह यूनिवर्सिटी बनाना एक गलत परम्परा डालने की बात होगी। यदि फिर भी सरकार जिद्द करती है और यह यूनिवर्सिटी हिसार में बनाना चाहती है तो मैं कहूंगा कि सरकार रीजनल इम्बैलैंसं कायम कर रही है और हरियाणा प्रदेश के लोगों को यह सरकार आर्थिक रूप से उजाड़ने का काम करना चाहती है। मैं बिटरली इस बिल को अपोज करता हूं और सरकार से प्रार्थना करता हूं कि इसकी इन्ट्रोडक्शन के लिये आप अपना प्रैस्टिज इशू न बनाएं, इसको वापिस ले लें। आज कतई तौर पर इस किस्म की यूनिवर्सिटी की हरियाणा प्रदेश में जरूरत नहीं है। यह भजन लाल सरकार का संध्या का काल है, 4– 5 महीने में इनकी सरकार नही रहेगी। सरकार हमारी बनेगी। अगर आपने यह यूनिवर्सिटी बनाने की जिद्द की तो हम हरियाणा प्रदेश को उजड़ने नही देंगे। इस बिल को रीपील करके इस किस्म की यूनिवर्सिटी हरियाणा प्रदेश में कायम नही होने देंगे। धन्यवाद।

डा० राम प्रकाशः स्पीकर सर, मुझे भी इस बिल की इन्ट्रोडक्शन स्टेज पर बोलने का टाइम दें।

श्री अध्यक्षः बिल की इडोडक्शन स्टेज पर इतनी डिटेल्ड बातें नहीं हुआ करतीं। (शोर)

डा० राम प्रकाशः स्पीकर साहब, आप मुझे तो इस पर बोलने का मौका दें। (शोर)

श्री अध्यक्षः यह कहां पर लिखा है कि आपको ही बालने का टाइम दिया जाए?

डा० राम प्रकाशः स्पीकर साहब, यह भी कही पर नहीं लिखा हुआ है कि मुझे समय नहीं दिया जायेगा। जो इस बिल के बारे में बोले 'हैं उनको भी तो आपने टाइम दिया है।

श्री राम कुमार कटवालः स्पीकर साहब, जिला जींद में कोई यूनिवर्सिटी नहीं 'है, यह यूनिवर्सिटी वहां पर बनाई जाए। (शोर)

श्री अध्यक्षः इस बिल की इन्ट्रोडक्शन स्टेज पर डिटेल में बोलने वाली कोई बात नहीं है।

चौधरी बीरेन्द्र सिंह (उचाना कलां): स्पीकर साहब, हिसार में एक नई यूनिवर्सिटी गुरु जम्भेश्वर के नाम से बनाने का बिल सदन में लाया जा रहा है। स्पीकर साहब, मैं कहना चाहता हू कि 1960 में जब हरियाणा और पंजाब ज्वायंट होते थे उस समय

कुरुक्षेत्र में एक यूनिवर्सिटी बनी थी। उस यूनिवर्सिटी की बेसिकली संस्कृत यूनिवर्सिटी के नाम से शुरूआत की गई थी। वह संस्कृत की यूनिवर्सिटी होनी चाहिये थी लेकन आज वहां पर संस्कृत नाम की कोई चीज नहीं है। वह मल्टी फैकल्टी यूनिवर्सिटी बन कर रह गई है और उसका जो उद्देश्य था वह उससे बहुत दूर चली गई है जैसे आम यूनिवर्सिटीज में कोर्सिज हैं, डिसिप्लिन हैं, वे सब क्हां पर हैं चौधरी बंसी लाल के समय में रोहतक मे यूनिवर्सिटी बनाने की बात आई। वहां पर मैडीकल कालेज होने के नाते इन्होंने कहां पर हयूमन साईंस के नाम से यूनिवर्सिटी बनाने की बात कही। सिर्फ साईंस की स्टडी के लिये म् यूनिवर्सिटी बनाने की मंशा थी। स्पीकर साहब, आपने इस यूनिवर्सिटी को देखा होगा। अभी तक वह पूरी डिवैल्प नही हुई है और वह मल्टी फैकल्टी यूनिवर्सिटी बन कर रह गई है। क्या तीसरी यूनिवर्सिटी बना कर चौधरी भजन नाल अपना नाम शहीदों में लिखवाना चाहते हैं। इन्होंने पंचकूला को भी 17वां जिला बना दिया जबकि उसकी आवश्यकता ही नहीं थी।

श्री अध्यक्षः पंचकूला का इससे कोई संबंध नहीं है।

चौधरी भजन लालः चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी यह आपकी क्या बात हुई कि भजन लाल भी शहीदों में नाम लिखवाना चाहते हैं। मैं आपको बताना चाहता

हूं कि क्या चौधरी छोटू राम, डा० अम्बेडकर के नाम से, गुरुनानक देव के नाम से और चरण सिंह के नाम से यूनिवर्सिटी नहीं है। ऐसे 100 नाम मैं गिना सकता हूं जिनके नाम पर युनिवर्सिटी का नाम रखा गया है। (शोर)

चौधरी वीरेन्द्र सिंहः मेरा तो यह कहना है कि पचकुला को 17वां जिला घोषित करने का क्या मतलब था। (शोर) There is no justification of a district of a small size.

श्री अध्यक्षः इसका इससे कोई ताल्लुक नहीं। आप यह बात अविश्वास प्रस्ताव पर बोलते हुए भी कह सकते थे। आप अब केवल इस बिल पर बोलिए।

चौधरी वीरेन्द्र सिंहः अध्यक्ष महोदय, क्य हम तीसरी चौथी क्लास में पढते थे तो उस वक्त सवाल पूछते थे कि पंजाब में कितने जिले हैं और कितने गांव हैं। अगर इस तरह से जिले बनते रहे तो .....

श्री अध्यक्षः ये शब्द रिकार्ड न किए जाएं।

Chaudhri Birender Singh : Speaker Sir, this is not un-parliamentary.

Mr. Speaker : But this is not the topic on which the discussion is going on. (Noise & interruptions) This is not to be recorded.

Chaudhri Birender Singh : Sir, it must be recorded. You can not order for its expunction. Sir, this is not

un-parliamentary expression (Noise & Interruptions). I am connecting the matter of creation of Panchkula district with the creation of this University because this Chief Minister is feeling panicky about this district. (Noise & Interruptions).

Mr. Speaker : No, no, Ch. Sahab, Panchkula is not at all related with this Bill. (Noise & Interruptions). You please speak on the Bill itself. ऐसे है कि जो आप कह रहे हैं, इन बातों की जरूरत नहीं है। आप सिर्फ इसी प्वायंट पर बोलें जो यूनिवर्सिटी से संबंधित है।

चौधरी वीरेन्द्र सिंहः आप मेरी बात तो सुनिए। मैं आपसे यह गुजारिश करता हूं कि इस यूनिवर्सिटी के बिल में लिखा है कि –

`In this University the following studies will be carried out i. e. Technology, Frontiers of Technology, Environmental Study, Non Conventional Energy and Management Study etc.'

श्री अध्यक्षः चौधरी साहब, यही नहीं, इसके अलावा और भी इसमें लिखा है। उनको भी आप पढ़ें।

चौधरी वीरेन्द्र सिंहः और यूनिवर्सिटीज भी तो हैं, इसी पर तो ओब्जैक्शन है। आप इस की क्लाज 4(2) देखिए। इसमें लिखा है –

"(2) Any new College of Engineering, Technology or Management be opened in any part of the State of Haryana

shall with effect from the date of the enforcement of this Act, shall have to get affiated to this University."

मैं यही बात कहना चाहता हूं कि मैंने नो काफीडेंस मोशन पर बोलते हुए कहा था कि हम अपनी आने वाली पीढ़ी के बच्चों को सही टैक्लोनोजी का शान दे सकते हैं या नहीं। आज इतनी महत्वपूर्ण संस्थाएं हैं, जिस तरह से सी ० आई० आई० है, 'फिकी' है, चंम्बर आफ इण्डस्ट्रीज हैं, ऐसे इन्स्टीच्यूट खुलवाए। यदि ऐसे इन्स्टीच्यूटस हमारे यहां पर होंगे तो आने वाले समय में जो रिक्वायमैंट इन्डस्ट्रिलाईजेशन की, डिफरेंट ट्रेडज में नौजवानों को पड़ेगी, वह दूरी कर सकेंगें। अब हिसार के अन्दर यूनिवर्सिटी बनाने की जो बात है उसका कोई औचित्य नहीं है। अगर शिक्षा के क्षेत्र से देखा जाए तो जीन्द एक ऐसा ऐरिया है जहां देश भर मे शिक्षा का प्रसार लोएस्ट है। (विघ्न एवं शोर) फीमेल एजुकेशन के बारे में भी मैं बाद मे बताऊंगा। (विध्न)

शिक्षा मन्त्री (श्री फूल चन्द मुलाना): अध्यक्ष महोदय, फीमेल लिट्रेसी के बारे में मैं बताना चाहूंगा कि हरियाणा के 4 जिले जो सबसे पिछड़े हुए हैं वे सिरसा) हिसार जीन्द और कैथल हैं। इन चार जिलों में फीमेल लिटेरसी को बढ़ाने के लिए विशेष कार्यक्रम चलाया जा रहा है। (विध्न)

चौधरी वीरेन्द्र सिंह: स्पीकर सर, अगर ये चार जिले पिछड़े हुए हैं तो इनमें भी जीन्द सबसे बेहतर प्लेस यूनिवर्सिटी केलिए हो सकती है। क्योंकि यह सैन्टर में पडता है, फिर वहां पर

यूनिवर्सिटी बनाने में क्या तकलीफ हए। अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि मुख्य मन्त्री जी ने बड़े तपाक से कहा कि छोटू राम के नाम से यूनिवर्सिटी बन सकती है, स्वामी दयानन्द के नाम से बन सकती है। वास्तव में बात यह है कि मुख्य मन्त्री जी एक ही सांस में ठण्डा और गर्म बोलते हैं। यही पर हाउस मे कुछ देर पहले चौधरी चरण सिंह जी का नाम यूनिवर्सिटी से हटाने के लिये एक बिल रखा था। चौधरी चरण सिंह का नाम यूनिवर्सिटी से निकालने का क्या औचित्य था। हिसार एग्रील्कचर यूनिवर्सिटी नाम रखने का क्या औचित्य था। जब हरियाणा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी का बिल पास हुआ था तो हमने प्रधान मन्द्री जी से मिल कर उनसे इसमें इन्टरवीन करने के लिये कहा था। तक चौधरी चरणसिंह जी का नाम इस यूनिवर्सिटी के साथ जुड़ा हुआ रह सका था (विघ्न)

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, मैं इनको बताना चाहूंगा कि चौधरी चरण सिह, यूनिवर्सिटी का नाम हिसार एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी या हरियाणा एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी इस लिए रखा गया था क्यौंकि सारी दुनिया इस यूनिवर्सिटी को इस नाम से जानती है। इसके साथ ही एक बात और भी है कि आज ये कहते हैं कि चौधरी चरण सिंह का नाम हटाने का बिल आया था। लेकिन चौधरी चरण सिंह का नाम इस यूनिवर्सिटी से हटाने का जब बिल आया था तो इन्होंने भी नाम हटाने के लिये वोट

दिया था। (विघ्न) अगर इन्हें इसका विरोध था तो ये उसी दिन कहते कि मेरा इस्तीफा ले लो लेकिन मैं वोट नहीं दूंगा।

चौधरी वीरेन्द्र सिंहः अध्यक्ष महोदय, यह बात ठीक है कि इन्होंने जो गुनाह किए है उनमें से कुछ में, मैं भी शामिल रहा हूं। यह जो गुरू जम्भेश्वर के नाम से यूनिवर्सिटी का बिल आया है यह नाम भी ठीक नहीं है।

चौधरी भजन लालः वे केवल हमारे ही गुरु नहीं थे, सारी जाति के गुरू थे और उन्होंने सारी दुनिया को मानवता का रास्ता. दिखाया था।

चौधरी बीरेन्द्र सिंहः चौधरी चरण सिंह जी भी तो प्रभानमन्त्री थे (ओर एवं व्यवधान)

चौधरी भजन लालः हम भी तो उनकी इज्जत करते हैं। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सतबीर सिंह कादयानः अध्यक्ष महोदय, ये क्या रात कर रहे हैं। (शोर)

श्री अध्यक्षः सतबीर सिह जी आप बीच मे न बोलें। आपको भी बोलने का मौका दिया जाएगा। आप अपनी सीट पर बैठ जाएं।

चौधरी वीरेन्द्र सिंहः अध्यक्ष महोदय, मैंने यह कहा था कि इनका जो बोलने का तरीका है, he should not speak hot

and cold with the same breath. इनको चरण सिंह जी का नाम अच्छा नहीं लगा तो उनका नाम हटाने के लिये ये एक बिल ले आए और आज गुरू जम्मेश्वर जी के नाम पर यूनिवर्सिटी खोलने जा रहे है। मैं तो यह कहता हूं कि इस युनिवर्सिटी का नाम टैक्नोलोजी से ही संबंधित रखा जाए। इन्होंने अपने राज में हिसार में जितनी तरक्की करवाई है, उतना मौका ये दूसरे इलाकों को भी दें। उनको भी तरक्की दें। (शोर एवं व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, यह जो बिल इन्ट्रोडक्शन की स्टेज पर है मैं इसका विरोध करता हूं। मैं यह कहता हूं कि इस बिल को सिलैक्ट कमेटी के पास भेजा जाए और उनसे कहा जाए कि इसकी बारीकी से जांच करें और अगले सैशन में इस बिल को लाया जाए। (शोर एवं व्यवधान)

17.00 बजे

श्री राजेन्द्र सिंह भिसला (बल्लभगढ़): अध्यक्ष महोदय यह बिल जो इन्ट्रोडक्शन की स्टेज पर है मैं इसका समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। अध्यक्ष महोदय हमारे जो नए सदस्य आए हैं, या जो एक या दो बार जीत कर यहां पर आए हैं, उनमें बहुत जोश होता है। उनको बहुत कुछ सीखना होता है लेकिन जो मैम्बर मुख्यमन्त्री रह चुके हों आज वे भी कहें कि यह यूनिवर्सिटी नही खोलनी चाहिए। (शोर एवं व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, चौधरी बसी लाल जी यह बोले कि यह नहीं खुलनी चाहिए। (शोर एवं

व्यवधान) मैं यह कहना चाहता हूं कि राजेन्द्र सिंह बिसला का परिवार डोल बजाने वालों में ले नहीं है। (विघ्न)

श्री अध्यक्षः चौहान साहब, आप बैठिए।

श्री राजेन्द्र सिंह बिसलाः अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि सरकार जो बह बिल इस प्रदेश में शिक्षा के उत्थान एवं प्रचार और प्रसार के लिए सदन में लेकर आयी है, मैं समझता हूं कि इससे बड़ी तो और कोई बात हो ही नहीं सकती है। इस यूनिवर्सिटी के अन्दर केवल एक ही धर्म के बच्चे नहीं पढ़ेगे बल्कि सभी धर्मो एवं जातियों के बच्चे वहां पर पढ़ेगे। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि हमारी जो कुरुक्षेत्र और रोहतक यूनिवर्सिटीज हैं उनमें सभी बच्चों को ऐडमिशन नहीं मिल पाता है। जब हमारे यहां के बच्चे दिल्ली में ऐडमिशन लेने के लिये जाते हैं तो वहां भी उनको ऐडमिशन नहीं मिल पाता इसलिये में तो यह समझता हूं कि सरकार ने इस बिल को लाकर बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। मैं शिक्षा मन्त्री जी से और मुख्यमन्त्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि आप इस यूनिवर्सिटी को न केवल प्रदेश और देश की बेहतर यूनिवर्सिटी बनाएं बल्कि पूरी दुनिया की बेहतर यूनिवर्सिटी इसको बनाए। अत्री चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी एक तरफ तो कह रहे थे कि हमारे बच्चों को मजदूरी करनी पड़ती है, बोझा ढोना पड़ता है और दूसरी तरफ ये इस यूनिवर्सिटी के खोलने का विरोध कर रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, जब हमारे बच्चे पढ़ेंगे नही या उन के पढ्ने के लिए इंस्टीच्यूशंज नहीं होंगे तो

फिर वै मिट्टी ही डालेंगे। अध्यक्ष महोदय, हमारे विपक्ष के भाई इस यूनिवर्सिटी के नाम का विरोध कप रहे हैं। मैं इनका बताना चाहता हूं कि मैंने गुरू जम्भेश्वर जी का इतिहास पढ़ा है। गीता, रामायण और वेदों का निचोड़ गुरु जम्भेश्वर जी के इतिहास में है। (विध्न) उनकी किताब का नाम गुरू जम्भेश्वर जी की गीता है। अगर यह बात गलत हो तो आप मुझे बता दें। हम तो पड़े लिखे परिवार से संबंध रखते हैं इसलिये हमें पता है कि गुरु जम्भेश्वर जी की गीता है। हमारे देश में जितने भी महापुरुष हुए हैं उनमें से गुरू जम्भेश्वर जी का जन्मना एक अलग ही स्थान है। अगर ये समझते हैं कि गुरू जम्भेश्वर जी केवल भजनलाल और हिसार से संबंध रखते हैं तो ठीक नहीं है। (विध्न) चौहान साहब आप कुछ तो शर्म करो क्योंकि आप बंसी लाल जी के पास बैठते हो। उनसे कुछ (तो सीखा करो। अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश में जिला मुरादाबाद में काठ क्षेत्र है, वहीं पर इनका जन्म हुआ था।

चौधरी बंसी लालः ये आपकी बहुत चापलूसी कर रहे हैं, इसलिये मुख्यमन्त्री जी आप इनको डिप्टी मिनिस्टर बना दो और एक झंडी वाली कार दे दो।

श्री राजेन्द्र सिंह बिसलाः चौधरी बंसी लाल जी, शायद आप हमें जानते ही नहीं हैं। मैंने कभी भी इनसे मिनिस्टर का पद नहीं मांगा है। यह बात जरूर है कि हम राजनीति में भजनलाल जी के साथ जुड़े हुए हैं। बंसी लाल जी को तो सुरेंन्द्र से अलग

कोई बात सूझती ही नहीं। ये पार्टी बना कर मेल पीटने की कोशिश करते हैं कि किसी तरह से सुरेन्द्र को राजनीति में ऊंचा कर दें। अध्यक्ष महोदय, अभी मैं आपसे बिल के बारे में बोलते हुए निवेदन कर रहा था कि जब महर्षि दयानन्द जी के नाम से यूनिवर्सिटी हो सकती है, चौधरी चरण सिंह जी के नाम से यूनिवर्सिटी हो सकती है तो फिर गुरु जम्भेश्वर जी के नाम से यूनिवर्सिटी बनाने में इनको क्या दिक्कत है ? यह केवल चौधरी भजन लाल जी के लिये ही तो नहीं है बल्कि यह तो हमारी सांझी इन्वैस्टमैट है। उसमें इस तरह की बात नही होनी चाहिये। मैं इस बिल का समर्थन करते हुए मुख्यमन्त्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि दुनिया की बैस्ट यूनिवर्सिटीज मे जो सब्जैक्टस पत्र। ये जाते हैं वें सभी सब्जैक्टस इस यूनिवर्सिटी में पढ़ाए जाएं। चौधरी बीरेन्द्र सिंह और बंसी लाल जी कह रहे ये कि रिवाड़ी महेन्द्रगढ, नारनौल और फरीदाबाद भी यूनिवर्सिटीज से दूर पड़ते हैं। मैं आपके माध्यम से मुख्यमन्त्री जी से और शिक्षा मन्त्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि हमारे इन 4– 5 जिलो में भी शिक्षा के उत्थान के लिए यूनिवर्सिटीज और कालेज बनाने चाहिएं। इसके साथ ही मैं इस बिल का समर्थन करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं। धन्यवाद!

प्रो० सम्पत सिंह (भट्टू कलां): स्पीकर सर, मै इस बिल के बार मे जनरल बातें नहीं करूंगा। इस बिल केबारे मेंजो मेन बातें हैं, मैं उनका जिक्र करना चाहूंगा इसमें एक दो जो मेन बातें

रह गई हैं, उनके बारे में मैं बताना चाहूंगा ताकि कल को यी न हो कि यह बिल रिजैक्ट हो जाए। जहां तक नाम का ताल्लुक है, स्पीकर सर, इसमे कोई दो राय नहीं कि गुरू जम्भेश्वर महाराज का अपने आप में समाज में योगदान रहा है लेकिन साईस की बजाए उनका फोरैस्ट, एनीमल और इनवायर्नमैंट इन तीन चीजों के लिये बड़ा योगदान रहा है। अगर मुख्यमन्त्री जी वाकई में श्रद्धा से उनके नाम पर कोई यूनिवसिटी बनाना चाहते है तो इन विषयों के लिए बनाएं। फोरैस्ट एनीमल और इनवायर्नमैंट ये भी अपने आप में वहुत बड़े सब्जैक्टस हैं। इस यूनिवर्सिटी को बनाने के लिये भिवानी या महेन्द्रगढ़ का जो एरिया है, वह सबसे बढ़िया एरिया पड़ता है उस एरिया मे उनके नाम से आप यूनिवर्सिटी बनाएं जहां तक इस यूनिवर्सिटी के नाम का सवाल है, मैं चाहता हूं कि सी ० वो ० रमन बहुत बड़े साईंटिस्ट रहे हैं, उन्हें नोबल प्राइज मिला था। स्पेस में जो हमारी पहली एन्ट्री थो वह आर्य भग के नाम से है, और भी पुराना जानना चाहते हैं तो महर्षि भृगु बहुत बड़े साईंटिस्ट रहे हैं किसी ऐसे साईटिस्ट के नाम से इमका नाम रखा जाए। रीजनलिज्म की बातें भी छोटी बातें हैं। इम्बैलैसं रिमूव करना चाहिए। दूसरे डिस्ट्रिक्ट एजुकेशन सैन्टर हों अकेली यूनिवर्सिटी से काम नहीं चलेगा। ज्यादा से ज्यादा स्कूल खोलने चाहियें प्राइमरी एजूकेशन मिडिल एजूकेशन हायर एजुकेशन आदि का प्रावधान भी ज्याद। से ज्यादा करें। यहां पढ़ कर बच्चे यूनिवर्सिटी में तो बाद में जायेंगे स्पीकर सर, इसमें जो बेसिक डिफीकल्टी है। (विध्न)

श्री अध्यक्षः यह तो इस बिल की इन्ट्रोडक्टरी स्टेज है।

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर सर, मैं कह रहा था कि इसको जो स्पैसिफिक यूनिवर्सिटी बनाने का इरादा है उसमें भी प्रोब्लम्ज आएंगी यह स्पैसिफिक यूनिवर्सिटी की बजाये एक मल्टी फैकेल्टी यूनिवर्सिटी बनाई जा रही है क्योंकि सैसिफिक यूनिवर्सिटी का तो उद्देश्य कुछ विशेष कोर्स पड़ाने का होता है। लास्ट में आप देखेंगे कि इन्होंने फ्लैल्टीज का जिक्र किया है कि जो जो क्लासिज लग रही हैं हिसार के रीजनल सैन्टर में, वे इसमें मर्ज कर दो जाएंगी तो फिर ला फैकल्टी भी इसमें आएंगी और इससे इसका उद्देश्य बहु विषय पढ़ाना बन जाता है। अगर ला फैकल्टी इसमें आ जाती है तो फिर सारी स्टेट का जो जुरिसडिक्शन है, वह भी इसमें आ जाती है। इसमें क्या है कि ला कालेज या ला की जो क्लासिज कुरुक्षेत्र में हैं, उनके ऐग्जामिनेशन हिसार मे ही देने पडेंगे। उनकी एफिलिएशन उसी यूनिवसिटी से ही होगी। इसी तरह से इंजीनियरिंग कालेज की भी बात है। कुरक्षेत्र यूनिवर्सिटी के अन्दर एक इंजीनियरिंग कालेज है। विश्वविद्यालय कैम्पस में ही इंजीनियरिंग कालेज है। आज उसकी एफिलिऐशन कुरुक्षैत्र यूनिर्वासटी से है, करन को उसकी ऐफिलिएशन हिसार से हो जायेगी। तो इस तरह अड़चन आएगी। इसी तरह से मूरथल में एक इजीनियरिंग कालेज है और यह इंजीनियरिंग कालेज भी उसके नीचे आता है और भी खुलेंगे, जो आलरेडी हैं, उनमें प्रौब्लम्ज आ रही हैं उनका जिक्र करना चाहता हूं। वहां भी

जुरिसडिक्शन की प्रोब्लम आएगी। मेरा कहने का मतलब है कि जैसे कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी कैम्पस में इंजीनियरिग कालेज है, आप उन की क्लासिज का या टीचर्ज का जो कंट्रोल है, वह सारे ना सारा हिसार से ही करोगे। अब वह सारा कंट्रोल कुरुक्षेत्र से ही होने लग रहा है तो स्पीकर साहब, जुरिसडिक्शन के बारे में दिक्कत आएगी और इसका डिसप्यूट भी होगा ही। इस यूनिवर्सिटी का ऐक्ट कोर्ट में स्टैण्ड नही करेगा।

श्री मनीराम केहरवाला: स्पीकर साहब, जो इस बिल पर डिस्कशन हो की है, कई भाई जब बोले तो पता चला कि वे इसके विरोध में बोल रहे हैं और कई भाई जब बोले तो ऐसा लगता था कि वे इसके पक्ष मे चोल रहे हैं लेकिन प्रो० संपत सिंह जी जो बोल रहे है, इससे तो यह कुछ नही पता चल ब्हा कि ये मिल के विरोध मे बोल रहे हैं या हक में बोल रहे हँ। (शोर) ये क्या चोल रहे है ?

प्रो० सम्पत सिंह: जरा सुनने, की कोशिश करो। यह आपके बस की बात नहीं है। तो स्पीकर सर, मैं कह रहा था कि 'यह जो ऐक्ट है यह कोर्ट में स्टैण्ड नही करेगा। कोर्ट में अगर कोई आदमी इसको चौलेन्ज कर देगा तो कास्टीचयूशनली यह रह हो जाएगा। स्पीकर साहब, मैं यह कह रहा हूं कि यह कोट के अन्दर स्टैण्ड नही कर पाएगा। इसलिए इसमें फैकेल्टी के बारें में अमैंडमैंट कर लगी चाहिए। जैसे हिसार की बात है, बहां पररीजनल सैन्टर पहले ही है। अब जो उसमे डिफीकल्टी आने

वाली है वह मैं बताना चाहूंगा। हिसार में जो रीजनल सैन्टर बना था उसके लिये लड़कों की इच्छा थी कि नई नई फैकेलिटी ज खुनेंगी। उसमें आर्टस का सब्जैक्ट आना था और पोस्ट ग्रेजुएट की स्टडी होनी थो लेकिन अब उसमें वह नहीं होगी क्योंकि रीजनल सैन्टर तो इस यूनिवर्सिटी में मर्ज हो जाएगा। इनसे जो अदर फैकेलिटीज हैं वे भी एक, दम खत्म हो जाएगी। लास्ट में यह है कि इसमें वी ० सी ०की अप्यायंटमैंट का जिक्र किया गया है। एक लाईन में क्लीयर कह दिया कि चांसलर विल अप्वायट हिम। स्पीकर साहब, यह बिल मुलाना जी ने पढ़ लिया होगा लेकिन मुख्य मन्त्री जी ने नहीं पढा होगा मैं आपको बताना चाहता हूं कि महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी बिल की अमैडमैटें के बारे मे राष्ट्रपति से एक चिट्ठी आई है। उसमें लिखा है –

"I, Shankar Dayal Sharma, President of India. having considered the Maharshi Dayanand University (Amendment) Bill. 1988, which was reserved for my consideration under the provisions of article 2C0 of the Constitution of India. do hereby direct in pursuance of the provision to article 201 of the Constitution, that the Bill be returned to the Legislature of the State of Haryana, together with a message that the Legislature reconsider it and suitably amend sub-section (1) of section 9-A of the Maharishi Dayanand University Act, 1975 on the following lines :-

(1). The State Government shall constitute a Selection Committee consisting of one nominee of the Chancellor and two nominees of the Executive Council, which

shall prepare a panel of atleast three names-. in alphabetical order, from which the Chancellor shat' appoint the Vice-Chancellor. on the advice of the State Government. The terms and conditions of service of the Vice-Chancellor. shall be determined by the. Chancellor. on the advice of the State Government."

तो स्पीकर साहब, राष्ट्रपति जी ने एक सिलैक्यान कमेटी का जिक्र किया है और जो बिल पहले पास हैं और अमेंडिड है उसके बारे में राष्ट्रपति ने कहा है। यह चिट्ठी आपके सैफ्लैरिएट में भी जरूर आ गई होगी। एक बिल जो पहले भी बापिस आ चुका है तो इस बिल को भी वहां जाना है। कल को यह भी वापिस आएगा। इसलिए मेरी गुजारिश है कि इस बिल को आप दोबारा देखें। मुलाना साहब ने शायद सोचा होगा कि इसको टैक्नीकल एजूकेशन मिनिस्टर ले कर आएंगे इसलिए हो सकता शै कि उन्होंने भी इसकी पूरी स्टडी नहीं की होमी। चाहिए तो यह कि इसमें अमैंडमैंट अभी कर लें। अगर ऐसा नहीं करना है तो इसको रि–कसिडर करें और फिर दोबारा ले आएं। मेरी आपसे यह गुजारिश है। एक बात और च्यु गई। मैंने इस बिल को काफी पढा है और मैंने डिप्टी स्पीकर साहब से भी इस बारे में डिस्कशन की। इसमें भी वी०ई० की रिमूवल का जिन नही है। इस तरह से तो वह डिक्टेटर हो जाता है। अगर वह गल्त काम करता है तो उसको भी हटाया जाना चाहिए लेकिन इस बिल में ऐसी कोई प्रोबीजन नहीं है।

Mr. Speaker :

Question is—

That Guru Jambheshwar University, Hisar Bill, 1995, be introduced.

The motion was carried.

Mr. Speaker : Now, the Education Minister will move that Guru Jambheshwar University. Hisar Bill be taken into consideration at once.

Education Minister (Shri Phool Chand Mullana) : Sir, I beg to move—

That Guru Jambheshwar University, Hisar Bill be !taken into consideration at once.

Mr. Speaker : Motion moved—

That Guru Jambheshwar University, Hisar Bill be taken into consideration at once.

डा० राम प्रकाश (थानेसर): स्पीकर साहब, मैं इस यूनिवर्सिटी के नाम, लोकेशन, जुरिसडिक्शन और स्कोप इन चारों चीजों का कोई औचित्य नही मानता। जहां तक लोकेशन का ताल्लुक है, अगर हम फैसिलिटीज को स्कैटर करना चाहते हैं तो आप इसे जींद मे स्थापित करें, यमुनानगर में या रिवाड़ी में स्थापित करें। मेवात में स्थापित करें। अगर आप किसी पर्टिकुलर डिसिप्लिन के हिसाब से स्थापित करना चाहते हैं तो आप उन एरियाज में स्थापित करे। जहां तक स्कोप का ताल्लुक है, आप साईंस एण्ड टैक्नोलोजी के लिए यूनिवर्सिटी बनाना चाहते है, तो

यह बडी अच्छी बात है। इस तरह की यूनिवर्सिटी स्पोर्टस के लिए बनायी जा सकती है। यदि आप इसको मल्टी फैकल्टी यूनिवर्सिटी बनाएंगे तो मैं समझता हूं आपको इसका कोई फायदा नहीं होगा। इसको थ्रस्ट एरिया की यूनिवर्सिटी बनाया जाना चाहिए ताकि उसी डिसिप्लिन के हिसाब से काम किया जा सके। जैसे चौधरी वीरेन्द्र सिंह जी कह रहे थे कि हमें किस तरह के लोग ट्रेन्ड करने हैं। मैं इसके स्कोप को लिमिटिड करने की बात कहना चाहता हूं। इस बिल की क्लाज 4 (2) में लिखा है –

"Any new College of Engineering Technology or Management to be opened in any part of the State of Haryana shall with effect from the date of the enforcement of this Act, shall have to get affiliated to this University."

मैनेजमैंट और कौमर्स एक साझा सब्जैक्ट है। मैनेजमैंट और कौमर्स एक सांझी फैकल्टी है।

श्री रामकुमार कटवालः स्पीकर साहब, मेरी आपसे अर्ज है कि आप छत्तर पाल को भी मदन में बुला लें, वे भी प्रोफैसर हैं।

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर साहब, मैं भी आपसे रिक्वैस्ट करूंगा कि आप छतर पाल को हाउस में आने की इजाजत दे दें। (शोर)

डा० राम प्रकाशः आप मुझे तो अपनी बात कह लेने दें। मुझे बोलने के लिए बड़ी मुश्किल से टाईम मिला है। (शोर)

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर साहब, जैसे उस टाईम आपने बड़ी फ्राखदिली दिखाई थी, अब भी दिखाएं।

श्री अध्यक्षः अब क्या है।

प्रो० सम्पत सिंहः स्पीकर साहब, अब तो ऐसी कोई बात नहीं है। मय आप उनको हाउस मे बुला लें। हम आपसे रिक्वैस्ट कर रहे हैं।

डा० राम प्रकाशः स्पीकर साहब, आपने मुझे बोलने के लिए टाईम दिया है। क्या मैं अपनीं बात कह सकता हूं या नहीं। जब मैं बोलने के लिए खड़ा होता हूं तो आप मुझे कह देते हैं कि बैठ जाओ। अब जब मुझे बोलने का टाईम मिला है तो आप इनको बीच में बोलने से क्यों नही रोक रहे हैं। (इस समय श्री उपाध्यक्ष पदासीन हुए)

प्रो० सम्पत सिंहः डिप्टी स्पीकर साहब, मेरा प्वायंट आफ आर्डर है कि आप छत्तर पाल को हाउस में बुला लें।

डा० राम प्रकाशः डिप्टी स्पीकर साहब, मुझे तो ऐसा लगता है कि यह पक्ष और वह पक्ष आपस में मिल कर मुझे बोलने से रोक रहे हैं। बात यह है कि ये भी आपके इशारे से खड़े होते हैं। एक का नाम चौटाला है और दूसरे का नाम भी सीमलिर सा है। अगर मैं नाम कह दूंगा तो' गड़बड़ हो जाएगी।

श्री उपाध्यक्षः सम्पत सिंह जी, आपका प्यायंट आफ आर्डर क्या है?

प्रो० सम्पत सिंहः सर, मैं आपसे रिक्वैस्ट कर रहा हूं कि जब छतरपाल को सदन से बाहर जाने के लिए चेयर की तरफ से बात आई तो कहा गया कि आप अपील कर दें तो उस समय मैंने उनको सदन से बाहर जाने की अपील की और सभी पार्टीज के लीडर्ज ने भी अपील की और उसके बाद वे बाहर चले गए। अब डिप्टी स्पीकर साहब, मैं आपसे रिक्वैस्ट करता हूं कि आज लास्ट दिन भे सैशन की प्रोसीडिंग्ज चल रही हैं। आप उन्हें फ्राखदिली दिखा कर बुला लें। इसमें लीडर आफ दी हाउस को भी कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। आज की सीटिंग का लास्ट टाईम चल जा है। उसको बुला लिया जाए तो अच्छा रहेगा। डा० साहब हम आपको पूरा सुनना चाहते हैं। मैं तो प्वायंट आफ आर्डर पर बोलने के. लिए खड़ा हुआ था। आप जितना बोलना चाहें, हम बाकायदा पूरा सुनेंगे। आपकी स्पीच के दौरान हमारा दखल देने का कोई मंशा नहीं है और न ही हम आपको बोलने से रोकना चाहते हैं।

डा० राम प्रकाशः अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे यह निवेदन कर रहा था कि इसे किसी थ्रस्ट एरिया की यूनिवर्सिटी बनायी' जानी चाहिए और उसके लिए साइंस का एक एरिया हो सकता है। स्पोर्टस का एक अन्य एरिया हो सकता है। अगर इसे आप मल्टी फैल्कटी यूनिवर्सिटी बनाना चाहते हैं तो उसका कोई औचित्य नहीं

बनेगा। विशेष तौर पर हिसार में मल्टी फैल्कटी विश्वविद्यालय 'बनाने की निस्बत मैं समझता हूं कि उसको किसी और जगह स्थापित करना चाहिए। बिल' में साईंस टैक्नोलोजी के साथ, मैनेजमैंट भी लिखा शै। मैं यह कहना चाहता हुं कि आमतौर पर हिन्दुस्तानी और विदेशी यूनिवर्सिटीज मे बिजनैस मैनेजमैंट और कौमर्स, का एक ही डिसिप्लिन माना जाता है, इसकी एक फैकलटी होती है। यदि आप इसे दो हिस्सों में बांट दोगे तो मैनेजमैंट का तो इस यूनिवर्सिटी के साथ संबंध जोड़ेंगे और कौमर्स का किसी और यूनिवर्सिटी के साथ संबंध जोड़ेंगे। आप ने इसकी जुरिडिक्शन तमाम हरियाणा बनायी है। अब हर कालेज को एक विषय के लिए दो जगह एफिलिएट करना होगा। कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी के कालेजों का डिपार्टमैट मैनेजमैंट केलिए तो किसी और यूनिवर्सिटी के साथ जुड़ा होगा और कौमर्स के लिए किसी और के साथ जुड़ा होगा। इसलिए मैं इस बात का कोई औचित्य नहीं मानता। मैंने जो नाम का विरोध किया है उसका आधार यह है कि अगर आप साइंस टैक्नोलाजी की यूनिवर्सिटी बनाना चाहते है तो फिर या तो किसी पुराने साइंटिस्ट के नाम पर या आज के किसी वैज्ञानिक के नाम पर इसका नाम रखें या जिस भगवान विश्वकर्मा को हुनर का देवता माना जाता है, उसके नाम पर रखा जाना चाहिए। किसी बात की तो रैलेवेसी होनी चाहिए। अगर कृषि यूनिवर्सिटी के साथ चौधरी चरण सिंह का नाम जुड़ा हुआ है तो बात समझ में आती है। अगर आप नए विश्वविद्यालय को इसी प्रस्तावित नाम से रखना चाहते तो लोग इसे पक्षपात मानेंगे। एक

पक्षीय बात मानेंगे। अगली बात मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि रीजनल सैन्टर में इस ढंग से सबजैक्ट बनाए गए हैं कि कुरुक्षेंत्र यूनिवर्सिटी को लिक्विडेट किया जा रहा है। वहां पर दिन के समय का तीन साल का जो ला का कोर्स था उसको वहां से रीजनल सैटंर मे भेज दिया। इस तरह कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी मे एल०एल ०वी ० का कोर्स खत्म कर दिया। इस तरह कुरुक्षेत्र के इलाके के लोगों के साथ तथा उन सारे जिलों के साथ जहां के विद्यार्थी वहां पढते थे, बहुत बड़ा अन्याय किया गया है। आज जब उस रीजनल सेंटर को एक यूनिवर्सिटी में बदलेंगे तो वे सबजैक्ट भी वहां चले जाएंगे। जो सब्जैक्ट आप वहां जोड़ते जाएंगे उनका दूसरी जगहों पर क्या औचित्य रहेगा। अगर आप इसे मल्टी फैकल्टी बनाना चाहते हैं तो फिर आपको इसकी भौगोलिक परिधि तय करनी पडेगी। यह नहीं कि स्पशेलाइजेशन इसकी कोई न हो और उसके बावजूद भी हर जगह का कालेज इसके साथ जोड़ने की कोशिश की जाए। जहां तक आर्थिक स्थिति की बात है इसके लिए आप केन्द्रीय सरकार को कहकर एक सैन्ट्रल यूनिवर्सिटी बनवा सकते है। इसके लिए हरियाणा यू०जी ०सी ० से सहायता ले सकता है। लेकिन हरियाणा के पैसे से यह यूनिवर्सिटी बनानी है तो आप इसे साईंस टैक्नोलोजी की यूनिवर्सिटी बनाएं और इसका नाम भगवान विश्वकर्मा या किसी साईंटिस्ट के नाम पर रखें। अगर आप इसे फोरेस्टरी की बनाना चाहते हैं तो फिर आप इसे गुरु जम्भेश्वर के नाम पर रख सकते हैं। वैसे तो औचित्य इस बात का है कि कोई अरि चीफ मिनिस्टर जो स्वयंमेव किसी औंर

महापुरुष को मानने वाला हो, अगर वह ऐसा नाम रखे तो समझ आ सकता है। आज हम बी ०आर० अम्बेदकर को अपना महापुरुष मानते हैं। उनके नाम पर क्यों नही हरियाणा में यूनिवर्सिटी बना सकते? हम विश्वकर्मा के नाम पर क्यों नही बना सकते। विश्वकर्मा का नाम तो हम किसी कालेज से भी हटाने की– बात सोच लेते हैं। सभी साथी इस बिल का विरोध करते हैं लेकिन मैं जानता हु कि जब तक एंटी डिफैक्शन ला है तो इनके मन में चाहे कुछ भी हो लेकिन ये उसके खिलाफ वोट नहीं दे सकते। डिप्टी स्पीकर सर, एक अन्तिम बात मैं और कहना चाहता हूं। में इस यूनिवर्सिटी की स्थापना का विरोध कर रहा हूं लेकिन सरकार ने जो बातें इसमें कही हैं उससे यूनिवर्सिटी की झलक नही मिलती। पृष्ठ–19 औंर उसके बाद पृष्ठ–23 पर जो क्लाजिज लिखी हें उनसे यह यूनिवर्सिटी नही बल्कि एजुकेशन विभाग का एक छोटा सा संस्थान बनता है। सरकार ने यूनिवर्सिटी की आटोनोमी को समाप्त किया है। 10वें पेज के ऊपर लिखा है क्रिएशन ऑफ पोस्ट्स के बारे में। फाईनैसं सैक्रेटरी या ऐजुकेशन सैक्रेटरी जब तक उस पर स्वीकृति नही देगा तब तक वे पद माने नहीं जाएंगे। उपाध्यक्ष महोदय, मैं जानना चाहता हूं कि फिर यूनिवर्सिटी के वाईस चान्सलर का क्या मतलब है, यूनिवर्सिटी की फाईनैसं कमेटी का क्या मतलब है। यूनिवर्सिटी अपने आप में एक आटोनोमस बोडी होती है और जो कोई उसकी आटोनोमी को इरोड करता है वह गलत करता है। य लोग उसके मैम्बर्ज होते हैं, ये लोग राय दे सकते हैं। सरकार इसमें किसी को कोई ऐसा अधिकार नही दे सकती जो कि इसमें

दे रखा है। इसमें तो यहां तक कहा गया है कि कोरम कैसे बनेगा। कम्पोजीशन औफ दि फाईनैसं कमेटी उसमें भी यह बात कही है,''

"Three members. out of whom at least one member shall be a Government nominee. shall form the quorum."

मैंने आज तक किसी भी विदेशी यूनिवर्सिटी में यह नहीं देखा जिसमें यह कहा गया हो कि जब तक सरकारी अधिकारी उसमें मौजूद नहीं होगा तब तक उसका कोरम नही माना जाएगा या उसकी बात को मान्यता नही दी जाएगी। डिप्टी स्पीकर साहब, उस नाते से मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि अगर आप कोई यूनिवर्सिटी बनाना चाहते हैं तो उसका स्कोप तय करना चाहिए कि उसको क्या एक फैकल्टी या मल्टी फैकल्टी करना है। अगर सरकार इसको मल्टी फैकल्टी करती है तो उसको हिसार में बनाने का कोई औचित्य नहीं बनता। डिप्टी स्पीकर सर, मैंने जो बातें कहीं हैं अगर उन पर ध्यान नहीं दिया गया तो मैं समझता हूं कि हरियाणा की बाकी की जो दो यूनिवर्सिटियां हैं, आज हम उनका फातिया पढ्ने की कार्यवाही प्रारम्भ करने लगे हैं। आज उन यूनिवर्सिटियों के भविष्य के बारे में मैं सरकार से जानना चाहता हूं। मैं कुरुक्षेत्र का प्रतिनिधि हूं इसलिए दुखी हो कर यह बात कह रहा हूं कि रीजनल सैंटर के नाम पर कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी को तबाह किया जा का है। वहां पर जो बेसिक डिसप्लिन थे उनको उठा कर हिसार ले जाने का प्रयत्न किया गया। क्या एक

यूनिवर्सिटी को तबाह करके दूसरी यूनिवर्सिटी बनाई जाएगी? क्या कुरुक्षेत्र में किसी के बच्चे नहीं पढते? (घण्टी) डिप्टी स्पीकर सर, यह तबाही बन्द होनी चाहिए। इन शब्दों के साथ मैं इस यूनिवर्सिटी के बिल का विरोध करता हूं। इस नाम, इस स्थान का विरोध करता हूं। अगर इसे बनाने की बात है तो इसको कहीं और जगह बनाइये। डिप्टी स्पीकर साहब, धन्यवाद।

प्रो० राम बिलास शर्मा (महेन्द्रगढ़): डिप्टी स्पीकर सर, यह जो सरकार यूनिवर्सिटी के बारे में बिल ले कर आई है, पता नहीं सरकार को इसमें क्या जल्दी है। चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी कह रहे थे मैं उसका विरोधी नहीं हूं कि गुरू जम्भेश्वर महाराज की स्मृति में कोई स्मारक बने। डिप्टी स्पीकर सर, गुरू जम्भेश्वर देश के महापुरूष थे, मुगलों के खिलाफ लड़ाई में उनका बहुत बड़ा योगदान था। उनकी स्मृति में, उनकी याद में कोई चिन्ह या स्मारक बनता है तो हम उसके पक्षधर हैं। परन्तु डिप्टी स्पीकर सर, हरियाणा में बहुत से महापुरूष हुए हैं जिनके नाम पर स्मारक बनने चाहिएं। हिसार में ही लाला लाजपत राय स्वतन्त्रता संग्राम के आन्दोलन के हीरो थे। हिसार में ही हरियाणा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी है जिसके बारे में चौधरी वैसी लाल जी ने भी कहा है कि ऐशिया में उसका बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। सर छोटू राम की स्मृति में मूरथल में कालेज है। पण्डित भगवत दयाल जी के नाम पर मैडिकल कालेज का नामकरण हुआ है, महर्षि दयानन्द जी की स्मृति में रोहतक विश्वविद्यालय का नाम है। कुरूक्षेत्र और

पानीपत का अपना खुद का एक इतिहास है, एक नाम है। विश्व में जानने वाली संज्ञा है, उसके नाम से विश्वविद्यालय चल रहा है। यह यूनिवर्सिटी की स्थापना का मुद्दा है। डिप्टी स्पीकर सर, इसके बारे में जल्दबाजी में कोई फैसला नहीं किया जा सकता है। एक तरफ तो यू० जी ० सी० की चिट्ठी महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी में आ रही है। रोहतक की यूनिवर्सिटी की ऐफिशिएंसी पर एक क्वैश्चन मार्क है। यू० जी ० सी ० कह का है कि आपकी ऐफिशिएंसी देखते हुए क्यों न आगे के लिए आपकी ग्रान्ट बन्द कर दी जाए। कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी के वाईस चान्सलर भीमसिंह दहिया ओपनली यह कह रहे हैं कि इस यूनिवर्सिटी के विकास के लिए फण्डज की कमी है। डा० राम प्रकाश जी ने अभी कहा है कि एक लां की फैकल्टी वहां से ट्रांसफर कर दी है। तो डिप्टी स्पीकर साहब, ये बातें एक दूसरे को कारबोरेट नहीं करतीं। एक तरफ तो हमारे पास बातू से राहत के लिए फंड की कमी है, एक तरफ हमारे पास यू० जी ० सी ० की चिट्ठी आ रही है और दूसरी तरफ हम एक नई यूनिवर्सिटी की शुरुआत करने के लिए दिल ला रहे हैं। उपाध्यक्ष महोदय, ऐसा लगता है कि हम बाटु के बारे में बहुत गम्भीर नहीं है और यदि गम्भीर हैं तो इन हालात में इस बिल का कोई औचित्य नहीं लगता है। डा० बाबा साहेब भीम राव अम्बेदकर जिन्होंने इस देश के संविधान को रचा है, जिस संविधान के तहत हम बोल रहे हैं, यह देश चल रहा है और उपाध्यक्ष महोदय, आप इस हाउस को चला रहे हैं, वे इस संविधान के तुलसी दास हैं। विश्वकर्मा समाज के निर्माण के देवता हैं। ये जो गुरू जम्भेश्वर

जी हैं ये उसी कड़ी में आते हैं। तो किसी भी गुरू के नाम से एक सीट हो सकती है। जैसे कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में गुरू रविदास जी के नाम से एक सीट रखी हुई है। इसी तरह से पुरू जम्भेश्वर जी के नाम से एक सीट हो सकती है। (शोर एवं व्यवधान) दूसरे जो राव तुला राम जी स्वतन्त्रता सेनानी थे, रोहतक में आप उनके नाम से एक रीजनल सैन्टर शुरू कर चुके हैं। उसके लिए काफी जमीन लोगों ने दी है तो उनके नाम से भी यह काम हो सकता है। उपाध्यक्ष महोदय, चौधरी भजन लाल जी हरियाणा के मुख्य मती हैं। गुरू जम्भेश्वर जी बिश्नोई मद के संस्थापक थे, उनके प्रति इनकी श्रद्धा ज्यादा हो सकती है लेकिन हमारी भी उनके प्रति श्रद्धा कम नहीं है। ये जो करने जा रहे हैं और अगर ये ऐसा करते हैं तो लोग ये यह कहेंगे कि चौधरी भजन लाल जी मुख्यमंत्री हैं इसलिए इन्होने ऐसी ओवरलैपिंग की है। उपाध्यक्ष महोदय, आदमपुर में एक पोलेटैक्निक कालेज शुरू हुआ था (विघ्न) चौधरी साहब, उसको बंद करना पड़ा था क्योंकि उसमें प्रोपरली एडमिशन नहीं हुए थे। चौधरी साहब, आप आदमपुर या पंचकूला के ही मुख्यमंत्री नहीं हैं बल्कि आप पूरे हरियाणा के मुख्यमंत्री हैं। (विघ्न) उपाध्यक्ष महोदय, ये यूनिवर्सिटी के पुराने रिकार्ड को मंगवा कर देख लें। वहां पर ऐसा परपोजल आया था, वहां पर लैक्चरार भेजे गए थे लेकिन दाखिला नहीं हुआ था। चौधरी साहब, आपके वहां पर पढने वालों की संख्या कम है (विघ्न) उपाध्यक्ष महोदय, अगर ये इस बात पर बजिद हैं तो इस हाउस का कन्सैंसिज है कि इसके लिए रिवाड़ी प्रोपर प्लेस है।

(घंटी) उपाध्यक्ष महोदय, इस समय इस बिल का कोई औचित्य नही है। दूसरे उपाध्यक्ष महोदय, इस बिल की कुछ क्लाजिज ऐसी हैं जिस बारे में चौधरी सम्पत सिंह जी ने ठीक कहा है कि इसमें प्रोवाईस चांसलर का कोई प्रोविजन नहीं है। वाईस चांसलर को प्रो वाईस चांसलर द्वारा असिस्ट किया जाता है। उपाध्यक्ष महोदय, हम यह मानते हैं कि हमारे आई० ए० एस० आफिसर बहुत टफ कम्पीटीशन से होकर आते हैं, वे बहुत इन्टैलिजैट होते हैं। कई बार ऐसा होता है कि बिल्ज में राजनैतिक इच्छा पूरी करनी पड़ती है और इस प्रकार के बिल कई बार पास भी हुए हैं। लेकिन यह जो बिल हैं यह बिल्ज के जो नार्मज होते हैं, वह भी पूरे नहीं करता है। तो इसमें प्रोबाईस चांसलर का प्रोविजन होना चाहिए। (घंटी) उपाध्यक्ष महोदय, इस बिल को सलैक्ट कमेटी को भेज दें और वह इसकी बारीकी से जांच– पड़ताल कर ले, इसको बारीकी से पढ़ ले कि इसमें कोई खामियां तो नही रह गई बै। सब कुछ देखने के बाद ये इस बिल को अगले सैशन में ले आएं। (शोर एवं व्यवधान)

श्री उपाध्यक्षः अब मुलाना साहब आप बोलें। (विघ्न)

श्री सतबीर सिंह कादयानः सर, मुझे भी बोलना है।

शिक्षा मन्त्री (श्री फूल चन्द मुलाना): कादयान साहब, आप बैठें। मैं आपकी शंका दूर कर दूंगा। उपाध्यक्ष महोदय, आज सदन के सामने गुरू जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी के बारे में बिल आया

है। (विघ्न) कादयान साहब, आप फिर इस बिल पर बोल लेना। पहले मुझे कह लेने दें।

श्री सतबीर सिंह कादयानः डिप्टी स्पीकर सर, आप मुझे भी बोलने के लिए टाईम दें। मुझे भी इस बिल पर बोलना है।

श्री उपाध्यक्षः कादयान साहब, आप थोड़ी देर बाद बोलना। पहले मुलाना साहब को बोल लेने दें। आप थर्ड रीडिंग पर बोल लेना। (विघ्न)

श्री सतबीर सिंह कादयानः मैं भी इस बिल पर बोलना चाहता हूं और इस बारे में अपने सुझाव देना चाहता हूं। इसलिए क्या आप मुझे इस बिल पर बोलने के लिए इजाजत देंगे? (शोर एवं व्यवधान)

श्री फूल चन्द मुलानाः कादयान साहब, आप फर्स्ट रीडिग पर बोल लेना। हम आपका जबाव अलग से दे देंगे। आपके नेता सम्पत सिंह जी ने कई मुद्दे उठाए हैं इसी लए पहले मुझे उनका जबाव दे लेने दें। (विघ्न) उपाध्यक्ष महोदय, सदन के सामने गुरू जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी का बिल आया है। कई सदस्यों ने ऐसे ऐसे मुद्दें उठा दिए... (शोर एवं व्यवधान)

श्री सतबीर सिंह कादयानः सर, मैं बोलने के लिए खड़ा हू लेकिन आप मुझे बोलने के लिए समय नहीं दे रहे हैं। आप मुझे भी टाईम दें।

श्री उपाध्यक्षः कादयान साहब, अभी आप बैठिए और पहले शक्षा मंत्री जी के बोल लेने दें।

श्री फूल चन्द मुलानाः सर, सदन के सामने यह एक ऐसा अहम बिल है जिसकी सारे सदन को एक मत से सराहना करनी चाहिए। सर, यूनिवर्सिटीमें बी ० ए ० के बाद जो क्लासिज पढाई जाती हैं वे हमने रीजनल सैटर हिसार में पहले से ही चालू कर रखी हैं। वहां पर बिल्डिंग बन चुकी है और सरकार का करीब सात करोड़ रुपये का खर्चा हो चुका है। यू ० जी ० सी ० ने भी 50 लाख रुपये की ग्रान्ट दे दी है। सर, यहां पर दो–तीन मुद्दे उठाए गए हैं। आदरणीय बंसी लाल जी ने कहा कि इस यूनिवर्सिटी की आवश्यकता ही क्या है (विघ्न)

श्री सतबीर सिंह कादयानः सर, मैं कहना चाहता हूं कि आज हरियाणा का कोई भी जिला ऐसा नहीं है जो दूसरे प्रदेशों से न लगता हो। एक तरफ बनारस हिन्दु यूनिवर्सिटी है जिसमें 150 डिपार्टमैंट्स हैं इसलिए इम यूनिवर्सिटी का कोई भी औचित्य नहीं है।

श्री उपाध्यक्षः कादयान साहब, आप बीच में न बोलें और मुलाना साहब को बोलने दें।

श्री सतबीर सिंह कादयानः सर, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है।

श्री उपाध्यक्षः आपको भी बोलने के लिए टाईम देगे लेकिन अभी आप बैठिए। (शोर एवं व्यवधान)

श्री फूल चन्द मुलानाः उपाध्यक्ष महोदय, इस रीजनल सैटर का शिलान्यास 1992 में किया गया था। कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी का रीजनल सैटर वहां पर बनाया गया था। यह सैटर सौ एकड़ सात कनाल और दो मरले भूमि में बनाया गया बै तथा इसको और भी फालतू जमीन देने का ऐलान किया गया है। मैं इस बारे मे बैकग्राउंड बता रहा हूं कि यह सैटर पहले से ही एक तरह से युनिवर्सिटी के तौर पर काम कर रहा है। इसमें वह सभी कन्वैशनल और नौन कन्वैशनल कोर्सिज भी चलाए जा रहे हैं जो कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी में चल रहे हैं। अब आप ही बताएं कि कुरूक्षेत्र युनिवर्सिटी जिसका नाम सारे देश में है अगर वह अपना रीजनल सैटर हिसार में खोले तो यह तो अच्छी बात ही है। अब हम उस रीजनल सैटर को एक विशेष प्रकार की यूनिवर्सिटी बनाने जा रहे हैं। कई मैम्बरों ने खदशा जाहिर कर दिया कि दूसरी यूनिवर्सिटीज में दूर–दराज के क्षेत्रों के जो बच्चे आते हैं (विघ्न)

वाक आउट

श्री राम कुमार कटवालः उपाध्यक्ष महोदय, मेरा प्यायंट आफ आर्डर है। तेजेन्द्र पाल मान ने जो किक्करें कटवाई हैं उनके बारे में आप बताएं कि इंक्वायरी कराएंगे या नहीं कराएंगे। अगर इंक्वायरी नहीं कराते तो उसके विरोध मे मैं वाक आउट करता हूं।

(इस समय जनता पार्टी के एक सदस्य श्री राम कुमार कटवाल सदन से वाक आउट कर गए।)

गुरू जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी हिसार बिल, 1995 (पुनरारम्भ)

श्री फूल चन्द मुलानाः यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन ने नॉन–कंवैशनल कोर्सिज को रिकग्नीशन दे दी है। हमने पोस्ट ग्रेजूएट क्लासिज में भी ये कोर्स शुरु करना है। यूनिवर्सिटी पोस्ट ग्रेजुएट क्लास से हम शुरु करेंगे। उन पोस्ट ग्रेजुएट क्लासिज के लिए और खास तौर पर वे विशेष कोर्सिज जो नोंन कन्वैशनल कोर्सिज से अलग हैं। जैसे–

(i) M.Sc. Mass Communication.

(ii) M.Sc. Environmental Science.

(iii) M.Sc. (Applied Math),

(iv) M.Sc. (Industrial Chemistry);

(v) M.B.E. (Master of Business Economics)

(vi) LAW (CRM Jat College, Hisar);

(vii) M. Tech. Environmental Science & Engineering.

(viii) M.Tech. Computer Science & Engineering.

(ix) Master of Business Administration (MBA)

(x) B. Pharmacy. और कन्वेंशनल कोर्सिज

इनमें भी कोई पाबन्दी नहीं होगी। श्रीमान राम प्रकाश जी ने कह दिया कि कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी से लॉ की क्लासिज बंद कर दी हैं।

डा० राम प्रकाशः उपाध्यक्ष महोदय, यह एल० एल० बी० कोर्स 3 साल का है। जिस दिन से यूनिवर्सिटी बनी है तब से कुरुक्षेत्र में चल रहा था और अब बन्द किया है।

मुख्य मन्त्री (चौधरी भजन लाल) उपाध्यक्ष महोदय, 10 जमा 2 के बाद पाच साल का कोर्स वही रहगा।

डा० राम प्रकाशः मैं तो यह कह खा हूं कि तीन साल का एल० एल० बी ० का कोर्स जब से यूनिवर्सिटी बनी तब से कुरुक्षेत्र में था, वह बंद किया गया है।

चौधरी भजन लालः हम कहते हैं कि वह कोर्स वहीं रहेगा। सरकार कहती है कि वह कोर्स वहीं रहेगा।

श्री फूल चन्द मुलानाः उपाध्यक्ष महोदय, कोई एल० एल० बी ० की क्लासिज कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी से शिफ्ट नहीं की जाएंगी। इसके अलावा और यूनिवर्सिटीज से भी क्लासिज शिफूट नहीं की जाएंगी। फिर ये कह दिया गया कि हिसार में तो यूनिवर्सिटी पहले से ही है। (विघ्न)

प्रो० सम्पत सिंहः उपाध्यक्ष महोदय, मेरा प्यायंट ऑफ ऑर्डर है। गवर्नमैंट ने तो कह दिया कि क्लासिज बंद नहीं होंगी, वहीं रहेंगी लेकिन यह आपकी क्लाज नं० 35 है इसमें साफ लिखा है कि–

35(i) All properties, movable and immovable and all the interests of whatsoever nature and kind therein, vested in the Kurukshetra University. Post Graduate Regional Centre. Hisar and the courses run thereunder and the posts created, filled before the commencement of this Act shall vest in the University.

ये कह रहे हैं कि लॉ का नहीं होगा।

चौधरी भजन लालः वहां है तो वहां रहेगा, यहां है तो यहां रहेगा।

प्रो० सम्पत सिंहः उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह कह रहा हूं कि ये साईंस का कह रहे हैं। ला का जो है वह साई स से अलग है। यह सैल्फ कन्ट्राडिक्टरी है, ये एफ तरफ साईंस का जिक्र कर रहे हैं और दूसरी तरफ लौ फैकल्टी वहां आलरेडी है। अगर बह भी वहां रहती है तो ये साईंस के लिए कैसे होगी। (शोर एवं व्यवधान)

चौधरी भजन लालः संपत सिंह जी, क्या हम ऐसा काम कर सकते हैं। क्या हम कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी से कोई कोर्स बंद

करके हिसार ले जा सकते हैं। ऐसा कोई भी कोर्स नहीं होगा जो कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी से बंद करके हिसार ले जाएंगे।

श्री फूल चन्द मुलानाः उपाध्यक्ष महोदय, संपत सिंह जी ने क्लाज 35 पढ़ दी जो कि रीजनल सैटंर्ज से संबंधित है। रीजनल सैन्टर हिसार में पहले से ही चल रहा है। यूनिवर्सिटी बनने के बाद जो जो उसके परपज है उसकी क्लाज 6 में यह लिखा है कि यह यूनिवर्सिटी न्यू फंटीयर्ज आफ टैकनालोजी, एनवायर्नमैंटल स्टडीज, नौन कन्वैन्शनल ऐनर्जी सोसिज एंड मैनेजमैंट स्टडीज की फैसिलिटी प्रोवाइड करेगी। उपाध्यक्ष महोदय, इन्होंने इसकी जूरिसडिक्शन के वारे में भी कहा कि खास सब्जैक्ट्स हैं जिन की जूरिसडिक्शन इसमें वैस्ट करेगी। इसके साथ साथ इस यूनिवर्सिटी के नाम पर भी एतराज किया। उपाध्यक्ष महोदय, इस समय हिन्दुस्तान में 210 यूनिवर्सिटीज हैं और उनमें से 60 का नाम किसी व्यक्ति के नाम पर है। जैसे कोई महर्षि दयानन्द जी के नाम पर है, चौधरी चरण सिंह जी के नाम पर है या गुरुओ के नाम पर है। गुरू नानक देव जी के नाम पर इस समय एक यूनिवर्सिटी पंजाब में चल रही है। हिसार में हम इकौलौजी व एनवायरनमैंट साईंस के कोर्सिज के लिये यह यूनिवर्सिटी बनाने जा रहे हैं। गुरू जम्भेश्वर जी के नाम से यह यूनिवर्सिटी बनाने जा रहे हैं। इन गुरू जी से ज्यादा कोई कुर्बानियां नहीं दे सकता। उन्होंने अपने जीवन में बहुत से नेक काम किये जोकि भुलाए नहीं जा सकते। उन्होंने दरखत कटने से

रुकवाए थे। ऐसे महापुरुष के नाम पर यह यूनिर्विसटी का नाम, जिसमें ऐनवायर्नमैंट का सब्जैक्ट रखा गया हो, इससे बेहतर उपयुक्त कोई नाम इस यूनिवर्सिटी का हो भी नहीं सकता था। इसलिये इस' यूनिवर्सिटी का नाम गुरु जम्भेश्वर रखा गया है। उपाध्यक्ष महोदय, इस यूनिइवीसटी का बेस प्रोफेशनल कोर्सिज ही होंगे। उसके बाद बच्चे इससे शिक्षा लेने के बाद अपना नाम सारे देश में प्राप्त करेंगे और नौकरियां प्राप्त करेंगे। इस तरह के प्रोवीजन जो बिल में हैं, शायद इन्होंने ठीक तरह से पड़े नहीं हैं। डिप्टी स्पीकर साहब, मैं तो विदेशों तक की यूनिवर्सिईटीज का सब कुछ लेकर के आया हूं। इन सब बातों का इनको तो कुछ पता नहीं है क्योंकि ये तो न कुछ पढ़ते है, न कुछ लिखते है। इसके साथ–साथ जैसे भाई सम्पत सिंह जी ने कह दिया कि वाइस चान्सलर को चान्सलर अप्वायंट करेगा। साथ में यह भी कह दिया कि महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी का जो ऐक्ट था, वह राष्ट्रपति से वापिस आ गया। मैं इनको बताना चाहता हूं कि सारे जो हमारे ऐक्ट्स हैं चाहे वह कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी से , सम्बन्धित है, चाहे महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी से सम्बन्धित है, उनमें यह लिखा है कि चान्सलर, वाइस चान्सलर की अप्वायंटमैंट करेगा। तो यह यूनिवर्सिटी का जो बिल आ का है इस बारे में भी सम्पत सिंह जी ने कहा किं प्रेजीडैन्ट साहब से यह भी वापिस आ जाएगा। उपाध्यक्ष महोदय, 1988 में इनकी सरकार ने ही एक अमैंडमैंट करनी चाही थी कि वाइस चान्सलर को हटाने के लिये एग्जैक्टिव कौंसिल को अधिकार होना चाहिये। उसी एग्जैक्टिव कौसिल को

इन्होंने ही आधार माना था तब वह अमैंबमैंट प्रेजीडैन्ट के पास गयी थी। यह अमैंडमैंट थी न कि सारा ऐक्ट था। एंक्ट तो आलरेडी पास हो चुका है। (शोर) इसी कारण से राष्ट्रपति साहब ने वह बिल वापिस भेजा कि इस पर पुनर्विचार किया जाये। तो हम इस पर पुनर्विचार नही कर रहे है हम तो पुराने प्रोवीजन को ही लागू रखेगे। वह अमैंडमैंट इनकी थी। ये चाहते थे कि ऐसी अमैंडमैंट कर दी जाये कि एग्जैक्टिव कौंसिल ही वी ० सी ० को हटाये। (इस समय श्री अध्यक्ष पदासीन हुए) यह यूनिवर्सिटी आटोनोमस बाडी है, हम इसके कार्य में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते। इनको ठीक ढंग से अपना कार्य करने का हम पूरा मांका देना चाहते हैं। इसलिये मैं यह कहूंगा कि यह बिल बहुत अच्छा है। ' जनरल क्लासिज में यह कलीयर लिखा है कि 'अप्यांयटिंग अथोरिटी शैल बी दि पनिशिग अथार्टी'। यह बिल जो है यह वोकेशनलाइजेशन पर बेसड है और आज की यह मांग भी है। कंवैंशनल कोर्सिज मे हटकर प्रोफैशनल कोर्सिज के तौर पर एक यूनिवर्सिटी की स्थापना की जाये ताकि हमारे बच्चों को आगे जाकर रोजगार मिले। इसीलिये यह बिल हम यहां पर लेकर आये हैं। इसको पास किया जाये। धन्यवाद।

Mr. Speaker : Question is—

That Guru Jambheshwar University Hisar. Bill be taken into consideration at once.

The motion was carried.

Mr. Speaker : Now, the House will consider the Bill Clause by Clause.

Sub-Clause (2) of Clause 1

Mr. Speaker : Question is—

That sub-clause (2) of clause 1 stand part of the Bill.

The motion was carried.

Clauses 2 to 35

Mr. Speaker : Question is—

That Clauses 2 to 35 stand part of the Bill.

The motion was carried.

Schedule

Mr. Speaker : Question is—

That the Schedule be the Schedule of the Bill.

The motion was carried.

Sub Clause (1) of Clause 1

Mr. Speaker : Question is—

That sub-clause (1) of clause 1 stand part of the Bill.

The motion was carried.

Enacting Formula

Mr. Speaker : Question is—

That the Enacting Formula be the Enacting Formula of the Bill..

The motion was carried.

Title

Mr. Speaker : Question is—

That the Title be the Title of the Bill.

The motion was carried.

Mr. Speaker : Now, the Education Minister will move that the Bill be passed.

Education Minister (Shri Phool Chand Mullana) : Sir, I beg to move—

That the Bill be passed.

Mr. Speaker : Motion moved—

That the Bill be passed.

श्री सतबीर सिंह कादयान (नौलथा): स्पीकर साहब, आपने मुझे बोलने के लिए समय दिया, इसके लिए आपका धन्यवाद। यह बिल एक नई यूनिवर्सिटी खोलने के लिए लाया गया है और हम इस पक्ष में हैं। लेकिन यह कहां खुले और किस के नाम से खुले, यह बात बहस की है। असल बात यह है कि इस बिल की कापी हमारे पास परसों रात को 11 बजे आई। हम

इसको पढ़ नहीं सके। कायदे कानून के मुताबिक कोई भी बिल इन्ट्रोडयूस होने से 15 दिन पहले सर्कुलेट होना चाहिए। मेरा आपसे अनुरोध हे कि इस बिल को सलैकट कमेटी को रैफर किया जाए, इस बीच मैम्बर्ज को इसे पढ्ने का भी पूरा मौका मिल जाएगा और वे अपने अच्छे सुझाव इस बारे में दे सकेगे। हरियाणा में 17 जिले हैं और वे दूसरे प्रदेशों की सीमाओ से मिलते हैं। जिस प्रदेश में तीन यूनिवर्सिटीज पहले से हो जैसे हिसार में एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी है तो क्यों न इसको किसी और जगह खोला जाए। मैं चाहता हूं कि पैसा चाहे किसी का भी लगे लेकिन उसका ठीक उपयोग होना चाहिए। हिसार ऐसा स्थान नहीं है जहां यह यूनिवर्सिटी खोली जाए। हरियाणा के और भी एरियाज हैं जहां यह यूनिवर्सिटी खोली जा सकती है। पहले तो मैं इसके खोलने के पक्ष में नहीं हूं लेकिन अगर सरकार इसके लिए बजिद है तो इसे पानीपत में खोले। कुरूक्षेत्र में एक यूनिवर्सिटी संस्कृत के नाम से बनी थी लेकिन बाद में उस यूनिवर्सिटी का नाम एक गवर्नर की वाइफ के नाम से रख दिया।

श्री अध्यक्षः वाइफ के नही बल्कि उनके खुब के नाम थी। बी ० एन० चक्रवर्ती यूनिवर्सिटी।

18.00 बजे

श्री सतबीर सिंह कादयानः ठीक है जी, उसका नाम बी० एन० चक्रवर्ती यूनिवर्सिटी दिया गया था। उन गवर्नर साहब ने कई

बार चौधरी बंसी लाल जी की माइन्योरिटी गवर्नमैंट बचाई थी इसलिए उनको ओबलाइज करने के लिए इन्होंने उनके नाम से वह यूनिवर्सिटी बना दी। किसी भी यूनिवर्सिटी का नाम किसी ऐसे महानुभाव के नाम से होना चाहिए, अलबता तो किसी के नाम से यूनिवर्सिटी होनी ही नहीं चाहिए। यूनिवर्सिटी का सीधा सा नाम हो ताकि पढ़ने वाला विद्यार्थी उसका नाम ले सके। अगर आपने यूनिवर्सिटी किसी के नाम से बनानी ही है तो गुरू गोबिन्द सिंह जी के नाम से बना दें। हमारे देश में उनसे बढ़िया आदमी और कोई नहीं हुआ। हमारे हिन्दु समाज को उनसे बहुत अच्छी शिक्षा मिली। उन्होंने हिन्दू समाज को ऊपर उठाने के लिए बहुत अच्छे काम किए। उन्होंने देश की संस्कृति को बचाया, धर्म को बचाया। तो मैं कहूंगा कि यह यूनिवर्सिटी गुरू गोबिन्द सिंह जी के नाम से बनाई जाए और यह असंध या पानीपत में बनाई जाए। जहां तक इस यूनिवर्सिटी के लिए जमीन का ताल्लुक है, यदि मुलाना साहब इसके लिए 100 एकड़ जमीन के लिए कहेंगे तो हम इनको 200 एकड़ जमीन दिलाएंगे। यूनिवर्सिटी का कोई पैसा नहीं लगेगा। वह जमीन क्य लोगों से आपको दान दक्षिणा में दिलाएंगे। जहां तक इस यूनिवर्सिटी की जुरिसडिक्शन का सवाल है, इसमें सारे प्रदेश के कालेज कैसे एफिलिएट होंगे और जो नए इंजीनियरिंग कालेज खुलेंगे वे भी इसी यूनिवर्सिटी में एफिलिएट होंगे। ऐसा इसमें लिखा हुआ है। इसके अलावा इसमे यह भी नही बताया गया कि इस यूनिवर्सिटी का जो वाईस चांसलर होगा वह किस क्वलिफिकेशन का होगा। चौधरी भजन लाल जिस पर मेहरबान

होंगे उसी को लगा देंगे। इन्होंने खुद चाहे कभी यूनिवर्सिटी का मुंह भी न देखा हो। ये ऐसे आदमी को वाईस चांसलर लगा दौ' जिसके साईंस एंड टैक्नोलोजी के बारे में कुछ भी पता न हो। आप इस प्रदेश का भट्ठा न बैठाओ। आप वाईस चांसलर की रिक्विजिट क्वालिफिकेशन इसमें मैनशन करो।

एक आवाज: आपको लगवा दें।

श्री सतबीर सिंह कादयानः मैं तो कम्पीटैट हूं। मैं बी ० ए० एल ० एल० बी ० हूं। मैं तो लग सकता हूं। मैं कहता हूं कि अगर आपने यह यूनिवर्सिटी बनानी ही है तो आप यह यूनिवर्सिटी गुरू गोबिन्द सिंह जी के नाम से पानीपत में बनाए। यदि आप इस यूनिवर्सिटी को अपने गुरु के नाम से बनाएंगे तो कल को कोई इसका नाम हटाएगा और दूसरा नाम बदलेगा। आप ऐसा काम करो कि यूनिवर्सिटी भी बने और उसके नाम पर किसी को कोई एतराज न हो।

Mr. Speaker : Question is—

That the Bill be passed.

The motion was carried.

Mr. Speaker : Now, the House stands adjourned sine-die.

***18.03 hrs.**

(The sabha then *adjourned sine-die.)